

रेल रश्मि

अंक : 81, मार्च 2020



पूर्वोत्तर रेलवे राजभाषा विभाग की त्रैमासिक पत्रिका

हमारे नये महाप्रबंधक



श्री ललित चन्द्र त्रिवेदी

पूर्व मध्य रेलवे के महाप्रबंधक श्री ललित चन्द्र त्रिवेदी ने 01 मार्च, 2020 से पूर्वोत्तर रेलवे के नए महाप्रबंधक का पदभार ग्रहण कर लिया है।

श्री ललित चन्द्र त्रिवेदी भारतीय रेल यांत्रिक सेवा के 1981 बैच के अधिकारी हैं। आपने भारतीय रेल पर यांत्रिक विभाग के विभिन्न पदों पर कार्य करने के पश्चात् मुख्य संरक्षा अधिकारी/पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे, मंडल रेल प्रबंधक/बिलासपुर, मुख्य परियोजना प्रबंधक/इंटीग्रल कोच फैक्ट्री, चेन्नई के दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन किया। आपने इंटीग्रल कोच फैक्ट्री, चेन्नई में प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर के पद पर कार्य करते हुए इंटीग्रल कोच फैक्ट्री, चेन्नई को एल.एच.बी.कोचों का सबसे बड़ा निर्माता बना दिया। इसके साथ आपने मुंबई उपनगरीय रेल सेवाओं हेतु एक वर्ष की अवधि में रिकार्ड 75 ई.एम.यू. ट्रेन उपलब्ध कराया।

आपने एचईसी स्कूल आफ मैनेजमेंट, पेरिस एवं कार्नेगी मेलॉन यूनिवर्सिटी ऑफ पिट्सबर्ग, यू.एस.ए. से उच्च प्रबंधन का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। श्री त्रिवेदी को शिक्षा, परियोजना निष्पादन और रेलवे इंजीनियरिंग में उत्कृष्टता के लिए विभिन्न स्तरों पर कई पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव हासिल है। आपके सर्वांगीण उत्कृष्टता के मद्देनजर ही, इंस्टीट्यूट ऑफ मैकेनिकल इंजीनियर्स, लंदन ने आपको फेलोशिप प्रदान किया है।

आप रेल अधिकारियों एवं कर्मचारियों में समान रूप से लोकप्रिय हैं।

मुख्य संपादक की कलम से....



जीवन की यात्रा कभी सुरम्य सीधे मार्गों से होकर गुजरती है तो कभी पगडंडियों व पथरीले दुर्गम रास्तों से होकर परंतु, हमारा उद्देश्य लक्ष्य तक पहुँचने का ही होता है। जीवन की इस यात्रा में हमें कभी तेज आँधी-तूफान भयभीत करते हैं तो कभी बसंत की सुषमा अपने विभिन्न रंगों से मन को आकृष्ट करती है। बासंतिक मौसम में रंगों का अपना एक अलग ही महत्व होता है। धरा के ये प्राकृतिक रंग बरबस ही मन को आकर्षित कर लेते हैं। संपूर्ण वातावरण की एक अद्भुत सुरभि मन को मोह लेती है।

जिस प्रकार विभिन्न रंग आपस में मिलकर इंद्रधनुषी छटा बिखेरते हैं उसी प्रकार रंगों का त्योहार होली हमें अपनी जातिगत एवं धार्मिक विसंगतियों को भूलाकर अनेकता में एकता का संदेश देता है। यह त्योहार हमारे मानवीय संबंधों को एक मजबूती प्रदान करता है। खेतों में लहलहाते सरसों के पीले फूल हों अथवा बसंत ऋतु में खिला हुआ लाल टेसू का फूल, ये हमारे प्राकृतिक सौंदर्य में एक अद्भुत निखार लाते हैं। ये रंग-बिरंगे फूल हमें समरसता के साथ रहने की प्रेरणा देते हैं तभी तो हमारे मनीषियों ने भी 'वसुधैव कुटुंबकम्' का संदेश दिया है।

किंतु, हम सब देख रहे हैं कि वर्तमान समय में एक वायरस ने किस प्रकार सामाजिक दूरी बनाने को मजबूर कर दिया है। इस मुद्दे पर कहीं न कहीं इलाज को लेकर हमारी लाचारी भी इसलिए बढ़ गई है कि इस बीमारी की कोई सटीक दवा अथवा वैक्सीन भी अभी उपलब्ध नहीं है। अतः इससे बचाव का रास्ता ही एक मात्र विकल्प है जैसे शारीरिक दूरी बनाए रहना, तरल अथवा ठोस साबुन से अच्छी तरह हाथ धोना, साबुन उपलब्ध न होने पर सैनिटाइजर से हाथ साफ करना, मास्क पहनना आदि। जैसा कि रेलवे में एक कहावत प्रचलित है 'सावधानी हटी, दुर्घटना घटी'। यह कहावत आज के परिवेश में चरितार्थ हो गई है, तो सावधान रहें, स्वस्थ रहें। इस संदर्भ में डॉ. बशीर बद्र का एक शेर भी समीचीन है-

कोई हाथ भी न मिलाएगा, जो गले मिलोगे तपाक से,

ये नए मिजाज का शहर है, जरा फासले से मिला करो,

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। जीवन में आने वाली हर नई परिस्थिति वर्तमान में परीक्षा और भविष्य में शिक्षा का कार्य करती है।

आइये, समय की इस चुनौती को स्वीकार करें और अपनी समस्त दुर्भावनाओं को भुलाते हुए नीति के मार्ग पर चलने का संकल्प लें तथा विश्व-कल्याण में सहभागी बनें। हमारा देश एक लोक कल्याणकारी देश है। जहाँ हमारी जीवन शैली व रहन-सहन परस्पर समय के अनुकूल सौहार्दपूर्ण रहता है। उस असीम सत्ता के प्रति भी हमारी गहरी आस्था है। मेरा विश्वास है कि हम एकजुट होकर पूरे दृढ़ संकल्प के साथ इस कोरोना जैसी भयंकर महामारी को दूर भगाने में समर्थ होंगे।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।

श्रीकान्त सिंह

(श्रीकान्त सिंह)

मुख्य राजभाषा अधिकारी

हरिवंश राय 'बच्चन'
(27 नवंबर 1907 - 18 जनवरी 2003)



होली

यह मिट्टी की चतुराई है,
रूप अलग औ' रंग अलग,
भाव, विचार, तरंग अलग हैं,
ढाल अलग है ढंग अलग,

आजादी है जिसको चाहो आज उसे वर लो।
होली है तो आज अपरिचित से परिचय कर लो!

निकट हुए तो बनो निकटतर
और निकटतम भी जाओ,
रूढ़ि-रीति के और नीति के
शासन से मत घबराओ,

आज नहीं बरजेगा कोई, मनचाही कर लो।
होली है तो आज मित्र को पलकों में धर लो!

प्रेम चिरंतन मूल जगत का,
वैर-घृणा भूलें क्षण की,
भूल-चूक लेनी-देनी में
सदा सफलता जीवन की,

जो हो गया बिराना उसको फिर अपना कर लो।
होली है तो आज शत्रु को बाहों में भर लो!

होली है तो आज अपरिचित से परिचय कर लो,
होली है तो आज मित्र को पलकों में धर लो,
भूल शूल से भरे वर्ष के वैर-विरोधों को,
होली है तो आज शत्रु को बाहों में भर लो!

(....साभार)

रेल रश्मि

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका

अंक : 81

मार्च 2020

संरक्षक:

ललित चन्द्र त्रिवेदी

महाप्रबंधक



मुख्य संपादक:

श्रीकान्त सिंह

मुख्य राजभाषा अधिकारी



उप मुख्य संपादक:

आनंद ऋषि

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी



संपादक:

ध्रुव कुमार श्रीवास्तव

राजभाषा अधिकारी/मुख्यालय



सह संपादक:

मो० अरशद मिर्जा

राजभाषा अधिकारी



उप संपादक:

अनामिका सिंह

वरिष्ठ अनुवादक



संपादन सहयोग:

नागेश्वर नाथ श्रीवास्तव

कनिष्ठ अनुवादक

पता:

राजभाषा विभाग

मुकाधि कार्यालय परिसर

पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर-273012

टेलीफोन- 62852 एवं 62859 (रेलवे)

0551-2203396

ईमेल- seniorol9@gmail.com

इस अंक में

विषय	रचनाकार	पृष्ठ सं.
रोज की बात (एकांकी)	डॉ. कृष्ण चंद्र लाल	6
नारी शृंगार के बदलते प्रतिमानों में आभूषणों की सार्थकता (लेख)	डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी	10
रामायण, महाभारत एवं वेद : एक विश्लेषण (लेख)	डॉ. संजय वर्मा	13
गोरखपुर के डॉक्टर (लेख)	डॉ. एस. के. सैनी	18
निर्णय के द्वंद्व (कहानी)	जहीर कुरेशी	20
जीवन उत्सव (लेख)	सुनील कुमार	24
असफलता सफलता की जननी (आलेख)	कमलासिनी तिवारी	26
गुनाहगार (कहानी)	कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव	28
ग्रामीण समाज में परिवर्तन (आलेख)	डॉ. चन्द्रभूषण ओझा	30
भाग्य का खेल (कहानी)	गोविन्द प्रसाद कुशवाहा	31
धर्म पुत्र (कहानी)	सुरभि श्रीवास्तव	33
अग्रिम जमानत (विधि)	एम. ए. रिजवी	38
भारतीय रेल में सिमुलेटर प्रशिक्षण का महत्व (तकनीकी)	डॉ. महेश कुमार	39
सरल, सुबोध 'गोरख के गुन गाई' (समीक्षा)	डॉ. के. के. चन्द्र विश्वप्रेमी	41
प्रतिष्ठापरक खेल प्रतियोगिताओं में भारतीय पहलवान (खेल)	रामाश्रय यादव	42
गोपनीय फाइलों पर लगाइए पासवर्ड का ताला (तकनीकी)	नागेश्वर नाथ श्रीवास्तव	44
फिशिंग (Fishing) बनाम फिशिंग (Phising) (लेख)	श्याम बाबू शर्मा	45

कविता, गीत एवं ग़ज़ल

कविताएं	भूषण त्यागी	47
हमारा भारत देश	अनामिका सिंह	48
गजलें	सैयद मुहम्मद असलम	49
चाहत	डॉ. दुर्गेश कुमार चौधरी	49
गजलें	राजन श्रीवास्तव	50
मुक्तक एवं गजल	सत्यम्वदा शर्मा 'सत्यम्'	50
कविताएं	निशा राय	51
अभिव्यक्ति	डॉ. चारुशीला सिंह	52
ओ री बया	दीक्षा शर्मा	52
गुरु आशीर्वाद	श्री रामराव (रामदास)	53
कविताएं	किरन श्रीवास्तव	54

निःशुल्क वितरण हेतु

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं)

रोज की बात



डॉ. कृष्ण चंद्र लाल

पात्र-कमला, कमलेश्वर, अखिलेश्वर, भाभी

मध्यम वर्ग का एक ड्राइंग रूम जिसकी दक्षिण दिशा में एक तख्त बिछा है। यहीं पर एडवोकेट कमलेश्वर अपने मुक्किलों से मिलते हैं। रात के ग्यारह बजे हैं घड़ी में। चारों तरफ सन्नाटा है। कमरे में रोशनी जल रही है। सामने का दरवाजा खुला है। तख्त पर कमलेश्वर विराजमान हैं। इर्द-गिर्द तमाम पुस्तकें। कमलेश्वर कुछ सोचते हुए उठता है और भीतर की ओर जाने वाले पश्चिमी दरवाजे को बंद करके पूर्व दिशा में पड़े वार्डरोब को खोलकर शीशे का गिलास तथा शराब की बोतल निकालकर तख्त पर बैठ जाता है। बिखरी किताबें इकट्ठा करने लगता है कि धक्का लग जाने से काँच का गिलास नीचे गिरकर टूट जाता है। जल्दी से उठकर कमलेश्वर गिलास की टूटन को एक अखबार के पन्ने पर बटोर कर आलमारी में रख देता है। काँच का दूसरा गिलास निकालकर उसमें शराब डालने को होता है कि उसकी पत्नी कमला का प्रवेश होता है। वह तीस वर्ष की है।

कमला-(प्रवेश करती हुई) अरे, क्या गिरा जी? शुरू हो गये?

कमलेश्वर-(त्यौराकर) तुमसे मतलब? मैं कुछ भी करूँ। शराब पिऊँ या कबाब खाऊँ! तुम किचेन संभालो...

कमला-(गिलास छीनकर) नहीं, मैं पीने नहीं दूँगी।

कमलेश्वर-किंतु मैं तो पीऊँगा। मेरा मूड बना है।

कमला-तो कुछ होकर ही रहेगा आज, रोज-रोज के बवाल से तो जिंदगी नरक होती जा रही है।

कमलेश्वर-तुम्हें घुटने को किसने मजबूर किया है?

कमला-मेरे चार बच्चों ने, वर्ना मजा चखा देती।

कमलेश्वर-तो यहाँ क्या करने आयी हो?

कमला-आपकी सूरत देखने, निहाल होने और क्या करने को!

कमलेश्वर-देख चुकी हो तो जाओ बच्चों के पास (ढकेलता है)

कमला-(पीछे हटती हुई) हाँ, देख चुकी, कितने पानी में हो आँक लिया।

कमलेश्वर-(तड़ककर) तुम क्या आँकोगी...तुम तो अपने ही स्वार्थ की निगाहों से देखना जानती हो...हर नारी महज अपने स्वार्थ के लिए इतना प्यार दिखायेगी जैसे उसके निहाल होने की कोई सीमा नहीं, किंतु पुरुष की जरूरत नहीं समझती।

कमला-(मुँह सामने झटककर) व्यर्थ का लांछन मत लगाइये। मैंने आपकी कौन सी इच्छा नहीं पूरी की?

कमलेश्वर-वह बताना अब शेष नहीं कमला। जब बात को जान कर भी कोई अनजान बने, तो याद दिलाना व्यर्थ है।

कमला-(मुँह एंठकर) ल्यौ करि ल्यौ बात! जितना ही मरदुए का ख्याल करो, उतनै कम...मुझसे नहीं हो पायेगा कि हर घड़ी आपके पास बैठी रहूँ। उमर और समय भी देखना होता है...

कमलेश्वर-(दीर्घ निःश्वास छोड़कर) मैं नहीं जानता था कि प्रेम व्यवहार की भी कोई उम्र और सीमा होती है।

कमला-तो अब जान लीजिए-न कोई हमेशा नयी नवेली दुल्हन बनी रहती है, न दूल्हा। समय सबको बदल देता है।

कमलेश्वर-मैं भी तो तुम्हें दुल्हन बनी रहने को नहीं कहता और हमेशा अपने पास बैठने को भी नहीं कहता...मैं तो सिर्फ इतना चाहता हूँ कि कचहरी की कच-कच से जब घर आऊँ तब मैं तुम्हें प्रसन्न मुख देखूँ, किंतु यहाँ तो घर में जैसे कदम रखो-चीख पुकार मची रहती है। कभी देर से आने की उलाहना, तो साड़ी न खरीद पाने का ताना, कभी किटी पार्टी तो कभी क्लब न जा पाने की झिड़कियाँ तो कभी गहना-जेवर के लिए लड़ाई...रोज कोई न कोई समस्या... समझ में नहीं आता कि तुम रोज-रोज लड़ना ही क्यों चाहती हो!

कमला-मैं लड़ना नहीं चाहती हूँ, किंतु रहन-सहन के मामले में आप इतने लापरवाह और लीचड़ हैं कि जब तक कोंचा नहीं जाता, आप अपने मन से कुछ नहीं करते हैं।

कमलेश्वर-तो कौन-कौन से काम करूँ मैं?

कमला-आप कह सकते हैं, किंतु करते नहीं। बगल वाले सोम

जी हैं कि सुबह उठते हैं। घर के सारे कपड़े खुद साफ करते हैं।

कमलेश्वर-तो मैं भी तुम लोगों के कपड़े धोया करूँ?

कमला-मैं कपड़े धोने को नहीं कहती, किंतु अपना-अपना स्वभाव होता है... सोम जी हर हफ्ते साड़ी लाते हैं...रोज फल-फूल लाते हैं। आप करते हैं तो झगड़ा करने के बाद।

कमलेश्वर-मेरी और सोमजी की स्थितियाँ भिन्न हैं। क्या मुकाबला?

कमला-मैं मुकाबला नहीं करती, लेकिन...

कमलेश्वर-(बीच में ही) तब फिर उनकी बात उठती ही क्यों हो? दुनिया चाहे जैसे रह रही है, तुम्हें उससे क्या लेना-देना। हमारी व्यक्तिगत परेशानियाँ हैं। कुछ सीमाएँ हैं-इन्हीं के बीच हमें जीना होगा। बराबरी करने से क्या मिलेगा?

कमला-मैं बराबरी नहीं करती, किंतु कुछ तो सोचना चाहिए। किसी चीज के लिए आपसे न कहूँ, तो किससे कहूँ।

कमलेश्वर-यह सब तो ठीक है, किंतु घर का खर्चा कैसे चल रहा है, यह तो तुम देख ही रही हो। बिजली, गैस और फिर अखबार तक के पेमेन्ट लटके रहते हैं। दूध का हिसाब, फिर साड़ी-जेवर कहाँ से लाऊँ। प्रैक्टिस को भी ज्यादा दिन नहीं हुए।

कमला-अच्छा, अब मैं न कहूँगी। चाहे उधारे रहूँ या ढकी, सूखा मिले या तर आप यही चाहते हैं न कि नौकरानी की तरह पड़ी रहूँ तो अब यही होगा...

कमलेश्वर-(गरजते हुए) मैं तुम्हें नौकरानी की तरह से जीने को नहीं कहता, किंतु आमदनी की तंगी पर भी ध्यान जाना चाहिए। पति-पत्नी सुख:दुख के सहभागी होते हैं। घुटते-घुटते मेरा स्वास्थ्य चौपट होता जा रहा है, उस पर तुम्हारी ये टुकड़े बाजियाँ और फिकरे-ताने! मालूम नहीं, तुम्हारे दिमाग नहीं है या परेशान करने में मजा आता है।

कमला-दोनों बातें हैं...मैं इंसान थोड़े हूँ...जानवर हूँ, एक जानवर और आप जानवर की तरह रखना चाहते हैं। दो रोटी और एक साड़ी पर काट दूँ जिंदगी। कहीं होगा ऐसा?

कमलेश्वर-मैं जो कमाता हूँ, अपने पर लुटा देता हूँ न!

कमला- लुटा नहीं देते। आपको तो किसी बात का कोई शौक ही नहीं। आप नहीं चाहते कि आपकी बीबी, आपके बच्चे भी अच्छा पहनें, अच्छा खायें। अपने भाइयों को ही देखिए-क्या मजाल कि भाबियों की कोई बात टल जाये...

कमलेश्वर-(बीच में)-फिर वही बराबरी की बात! तुम्हें दूसरों की खुशी खाती जा रही है...तुम्हें सुख और ऐशो-आराम ज्यादा चाहिए तो मुझे बेच डालो या कहीं अलग इंतजाम कर लो।

कमला-कर लूँगी...किंतु आपको सुख-चैन की वंशी नहीं बजाने दूँगी। उम्र ढलने पर आमदनी घट जाती है लोफरबाजी से सुख नहीं।

कमलेश्वर-(पत्नी को धकियाता) चुप...हट जाओ यहाँ से!

(इसी बीच ड्राइंग रूम में आँखें मलती भाभी आ जाती हैं।)

भाभी-यह क्या हो रहा है देवर जी!

कमलेश्वर-(नथुने फुलाता) वही जो रोज हुआ करता है!

कमला-(शराब की बोतल दिखाकर)-शराब पी रहे हैं और क्या!

कमलेश्वर-तुम्हारी वजह से! एक दिन जहर भी खा लूँगा।

भाभी-क्यों? क्या यही बुद्धिमानी है? पढ़े-लिखे होकर आपसी मतभेदों को समझकर क्यों नहीं दूर कर लेते? रोज-रोज रात-बिरात लड़ते रहने से क्या फायदा?

कमलेश्वर-नहीं, ये झगड़े ऐसे नहीं जिनका निपटारा हो सके.. कमला को दुनिया से बराबरी करने की बेचैनी है। यह इसी पर मरी जा रही है कि वह ऐसा है, यह ऐसा...

कमला-मैं किसी की बराबरी नहीं करती और न ही होड़ करने की सोचती हूँ...किंतु चाहती हूँ कि मनुष्य की तरह रहूँ...क्या वे औरतें नहीं हैं जो क्लब या पार्टियों में जाती हैं...एक मैं हूँ जो घर में पड़ी चूल्हा फूँका करती हूँ...श्याम जी भी तो वकील हैं... उनके बच्चे ठाट-बाट से रहते हैं...जेंटलमैन की तरह।

कमलेश्वर-फिर वही बराबरी की बात!

कमला-बराबरी नहीं, एक तथ्य है। सोचिए वह कैसे रहते हैं?

कमलेश्वर-होगा सुखी... तुम जलो-भुनो... करती रहो ईर्ष्या...

कमला-(जोर से) मैं ईर्ष्या करती हूँ? किससे करती हूँ ईर्ष्या...

भाभी-अरे कमला, तनिक चुप रहना भी सीखो!

कमलेश्वर-चुप कैसे रहें? चुप रहने से कलंक लग जायेगा न..

कमला-कोई भी सच कहने से मुकर नहीं सकता।

भाभी-फिर भी कुछ मर्यादाएं हैं जिनका ध्यान रखना पड़ता है।

कमला-मैं समाज की झूठी मर्यादाओं को नहीं मानती...जो मर्यादा मनुष्य को मनुष्य की तरह जीने न दे, दम घुटने पर विवश कर दे, वह अत्याचार है। वह समाज नहीं, मौत का कटघरा है जहाँ व्यक्ति दूसरों की इच्छा पर जीता है।

कमलेश्वर-इसका मतलब तुम स्वतंत्र होना चाहती हो?

कमला-हर इंसान मुक्ति की सांस चाहता है। कोई गुलाम नहीं!

कमलेश्वर-तो ठीक है। अलग प्रतिष्ठापूर्वक प्रबंध कर लो...

कमला-कर लूँगी, घबड़ाओ नहीं!

भाभी-कमला, सीमा का अतिक्रमण मत करो।

कमला-मुझे चिन्ता नहीं भाभी...ये हमेशा अलग प्रबंध करने की धमकियां देते रहते हैं तो अब यही करके दिखा दूँगी। जब तक व्यक्ति का अहम् सोता रहता है, वह मुर्दे की तरह निरादृत रहता है...कहीं भी चौका-बर्तन कर लूँगी।

भाभी-काश, ऐसे ही विचार तुम यहाँ के लिए भी अपनाती। तब न यहाँ तुम्हें बोझ लगता, न खुद को नौकरानी समझती।

कमला-नौकर रहने पर नौकर कहलाने में हर्ज नहीं किंतु नहीं रहने पर नौकरों जैसा रहना गलत है। आत्मा दुःखी होती है।

भाभी-तुम्हें यहाँ नौकर कौन समझता है?

कमला-पूरा घर...गलती आप लोगों की नहीं। उस समाज की है जिसमें हर छोटे के साथ नौकर-सा व्यवहार किया जाता है। न उसकी इच्छा का कोई मोल होता है, न जीवन का। शादी के बाद से ही मैंने यहाँ स्वयं को शासित पाया...यह मेरी आत्मा को मंजूर नहीं।

भाभी-समाज में लिहाज तो करना ही पड़ता है। हम तुम्हें नौकर नहीं मानते।

कमला-तो घर के सारे काम मेरे लिए क्यों छोड़ दिये जाते हैं? करने के लिए मैं हूँ, आराम के लिए कोई दूसरा?

कमलेश्वर-अभी तक रहने-पहनने की बात थी, अब काम की भी...

कमला-मनुष्य पत्थर से नहीं बना है। वह हर दुःखद अनुभूति से बचना चाहता है। घर चलाने के लिए सबको काम करना ही होगा। मैं भी गद्देदार बिस्तर पर सोना चाहती हूँ।

भाभी-इसका मतलब तुम्हें मुझसे ईर्ष्या है (झिड़ककर) किंतु तुम्हारी ईर्ष्या फलवती नहीं हो सकती। क्या मैं काम नहीं करती?

कमला-उतना ही, जितने से आपका पेट भरता है। अन्य कामों से आपका कोई सरोकार नहीं होता...जेठानी होने के नाते आप खुद को रानी समझती हैं जो मुझे मंजूर नहीं।

भाभी-तब तो यही एक हल है कि तुम मुझसे अलग ही रहो...

कमलेश्वर-(क्रोध से) कभी नहीं हो सकता...भैया-भाभी तो माँ-बाप के समान होते हैं... आप लोगों के रहते मैं अलग घर नहीं बसा सकता... आप लोगों ने ही मुझे पाला है...

भाभी-लेकिन तुम्हारा तो जीना दुश्वार हो जायेगा... अलग होने में हानि या हर्ज नहीं है...यदि जिंदगी में किसी व्यक्ति को सुख नहीं मिला तो रात-दिन की मेहनत और भाग-दौड़ से क्या फायदा? मैं समझ गयी हूँ कि कमला को मुझसे ईर्ष्या है। तुम लोग अलग इंतजाम कर ही लो!

कमलेश्वर-सुख और आराम तो कमला को चाहिए। वह अलग रहे। मैं भैया-भाभी को सुखी देखना चाहता हूँ।

कमला-तो बने रहिये गुलाम। आप ढोते रहिये एहसान। मुझे नहीं जरूरत ऐसे रहमो-करम की।

कमलेश्वर-(गरजकर) ढोता रहूँगा। तुम इसी दम निकल जाओ।

कमला-(मुँह बनाकर) ऐसे नहीं। मेरा बंटवारा कीजिए तब!

कमलेश्वर-ऐसे नहीं। मेरा बंटवारा कीजिए तब! (चिढ़ता है) अरे, कैसा बंटवारा? कहीं से कोई सम्पत्ति लेकर आयी थी क्या?

कमला-तुम्हारी सम्पत्ति में मेरा आधे का अधिकार है।

कमलेश्वर-बिल्कुल नहीं, तुम समाज और उसकी व्यवस्था को नहीं मानती तो इसी से तुम्हारे लिए इस घर में कोई जगह नहीं। मेरे धन में आधे का हकदार तुम्हें समाज ने बनाया है, ईश्वर ने नहीं।

कमला-अधिकार कैसे नहीं...सीधे नहीं तो कानून से...

(इसी बीच दूसरे कमरे से कमलेश्वर के बड़े भाई अखिलेश्वर ड्राइंग रूम में आते हैं। चेहरा क्रोध से तमतमाया हुआ)

अखिलेश्वर-ठीक है... सबका अलग-अलग प्रबंध हो जाये... इससे अच्छा क्या हो सकता है। होली आ रही है... हो जाओ अलग...

कमलेश्वर-नहीं भाई साहब, ऐसा नहीं हो सकता।

अखिलेश्वर-(गरजकर) तो यह ड्रामा कब तक चलेगा...लगता है यह किसी शरीफ का घर नहीं, जंग का मैदान है।

भाभी-अब वे दिन गये जब चार भाई सुलहपूर्वक एक साथ रहा करते थे। होली-दीवाली मिलकर मनाते थे। एक ही घर में बाबा-दादी, बाप-बेटे, पोते-पोती साथ-साथ रहा करते थे। अब तो सब कुछ बिखरता जा रहा है...सब एक-दूसरे से अजनबी होते जा रहे हैं...

कमलेश्वर-इसमें कोई शक नहीं भाभी...किंतु सभी घरों में ऐसा नहीं हो रहा। आज हर कोई स्वच्छंद होने के लिए व्याकुल है...बेटा तो पिता से, पत्नी पति से, भाई भाई से... अपने घर में ही देख लीजिए।

अखिलेश्वर-अब भी कई घर ऐसे हैं जहाँ पर आपसी संबंध मधुर हैं...

कमलेश्वर-कहते हैं न, एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है!

कमला-उसे तालाब से निकालकर फेंक दीजिए...

अखिलेश्वर-(कमला की ओर देखकर) यदि हम लोग इतने ही बेरहम होते तो घर में कब की सुख-शांति आ गयी होती... तुम्हें बहू ऐसे आड़े-तिरछे जवाब नहीं देने चाहिए।

कमला-इसी 'चाहिए' शब्द को मैं अपने जीवन से निकाल फेंकना चाहती हूँ...मैं नहीं चाहती कि निरर्थक आदर्शों का पल्लू पकड़ कर सागर में डूब जाऊँ। क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए-इसी का विचार करते-करते आज जिंदगी में जहर भर चुका है...हर तरह से मैं ही बार-बार दबायी जाती हूँ... हमेशा दुःखों की चक्की में पीसी जाती हूँ... क्या मैं एक इंसान नहीं हूँ...होली-दीवाली मेरे लिए नहीं है?

अखिलेश्वर-ठीक है बहू (पत्नी की ओर देखकर) चलो, अनिता, भीतर चलो (कमला की ओर देखकर) कल ही इसका फैसला भी हो जायेगा।

(दोनों अंदर चले जाते हैं। कमला वही खड़ी रहती है)

कमलेश्वर-(क्रोध से कमला को देखकर) अरे, खड़ी-खड़ी मुँह क्या देख रही है? जा तू भी यहाँ से कमबख्त...

कमला-(झनझनाकर) ठीक है, जाती हूँ... होली मुबारक।

[कमलेश्वर दरवाजा बंद करके ड्राइंग रूम की रोशनी बुझा देता है। अंधेरे में आवाज गूँजती है...हुँ...होली मुबारक-क्या-क्या न सहे हमने सितम आपकी खातिर/ये जान भी जायेगी... निकलेगा किसी रोज ये दम आपकी खातिर!]

डी-55, सूरजकुंड कालोनी

गोरखपुर (उ.प्र.)-273015

संपर्क: 9451958715

- जैसे कोरे कागज पर ही पत्र लिखे जा सकते हैं, लिखे हुए पर नहीं, उसी प्रकार निर्मल अंतःकरण पर ही योग की शिक्षा और साधना अंकित हो सकती है।

- जीवन एक पाठशाला है, जिसमें अनुभवों के आधार पर हम शिक्षा प्राप्त करते हैं।

नारी शृंगार के बदलते प्रतिमानों में आभूषणों की सार्थकता



डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी

प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में स्त्री और पुरुष दोनों ही अलग-अलग तरीकों से अपना शृंगार करते आये हैं। कालक्रमानुसार सौंदर्य सामग्री एवं तरीके भिन्न हो सकते हैं परंतु मूल में अपने को शृंगारित करना ही उद्देश्य रहा है जो दूसरों को अच्छा लगे और स्वयं को भी पहले समय में प्रकृति-प्रदत्त साधनों से ही नख से शिख तक शृंगार किया जाता था, किंतु आज इसके जगह-जगह प्रसाधन केन्द्र खुल गये हैं। मानव सभ्यता के उदय में मानव की सौंदर्य भावना का प्रमुख स्थान है। उसकी कलाप्रियता स्वाभाविक है। वह अपने परिवेश को सुंदर रखना एवं देखना चाहता है। इसके लिये वह सबको सजाकर रखने का प्रयास करता है जिसमें उसका शरीर भी सम्मिलित है जिसे वह विविध प्रकार की सामग्रियों की सहायता से सौंदर्य प्रदान करता है। मानव की सौंदर्य रुचि अनेक प्रकार से अभिव्यक्त होती रही है जिसमें सबसे अधिक एवं स्पष्ट वह वैयक्तिक शृंगार में हुई है। नख से शिख तक के सौंदर्य की कल्पना हमारे कवियों और अनेकानेक ज्ञानियों ने वर्णित की है जो वास्तविक भी है।

शृंगार करने की परंपरा हमारे संस्कृति के इतिहास में अत्यंत प्राचीन काल से ही चली आ रही है। प्रत्येक युग में किसी न किसी रूप में मनुष्य अपने को सौंदर्य प्रदान करता रहा है। सभ्यता के प्रारंभ से ही एक प्रथा के रूप में इसका प्रयोग होता आ रहा है। प्रत्येक मनुष्य अपने को सौंदर्य पूर्ण देखना चाहता है और इसी रुचि या कामना से अभिभूत होकर अपनी जवानी अवस्था में भी जब उसकी आवश्यकताएँ बहुत सीमित थी और जीविकोपार्जन का एक मात्र साधन आखेट था, वह विभिन्न प्रसाधन सामग्रियों का प्रयोग कर अपने को सौंदर्य प्रदान करता रहा है। अपनी इस इच्छा की पूर्ति वह बालों में पक्षियों के पंख खोंसकर, विभिन्न तरीकों में केश रचनाकर शरीर को भिन्न-भिन्न रंगों के आकार-प्रकार से अलंकृत कर एवं विभिन्न सामग्रियों के आभूषण धारण करके अपने को शृंगारित करने का प्रयास करता रहा है। मानव की इस रुचि विशेष ने अनेक प्रकार की कलाओं को भी जन्म दिया, जैसे आभूषणों का

निर्माण, वस्त्रों की कताई-बुनाई, केशों की विभिन्न शैलियों में रचना, पुष्पों की मालाएँ, आलता एवं सुगंधी इत्यादि का बनाना।

यद्यपि प्राचीन काल में स्त्री और पुरुष दोनों ही अनेक प्रकार के आभूषणों और अन्यान्य सामग्रियों से अपना शृंगार किया करते थे किंतु पुरुष की अपेक्षा स्त्री के लिये प्रसाधन सामग्री अधिक थी। सौभाग्यवती स्त्रियाँ हल्दी, केसर, सिंदूर, कज्जल, कंचुक, ताम्बूल, मांगलिक आभूषण, बालों को सँवारना, सिर, हाथ और कान के आभूषणों को धारण करना कभी नहीं भूलती थी। बाद में इन वस्तुओं को शृंगार का नाम दे दिया गया।

प्राचीन साहित्य में सोलह शृंगार की गणना अज्ञात है किंतु मध्यकाल के कवि श्री बल्लभदेव की 'सुभाषितावली' में पहली बार सोलह शृंगार का उल्लेख आया है-

आदौ मज्जन चीर हार तिलक नेत्रांजन कुंडले
नासा मौक्तिक केश वाथ रचना सत्कंचुकं नूपुरो।
सौगंध कर कंकणं चरणणे रागो रणन्येखला,
ताम्बूल कर दर्पण चतुरता शृंगार का षोडशाः॥

मज्जन, चीर, हार, तिलक, अंजन, कुंडल, नासामुक्ता, केश विन्यास, चोली, नूपुर, अंगराज, कुंकुम, चरपाराग, करधनी, ताम्बूल तथा करदर्पण ये सोलह शृंगार में आते हैं।

निश्चित ही आज की शृंगार शैली प्राचीन कालीन पद्धति से बदल चुकी है। सोलह शृंगार करने के लिये पहले कपड़ों की फिर आभूषणों की आवश्यकता होती है। वेद, पुराण, उपनिषद्, उप नियम एवं प्राचीन अन्यान्य साहित्यों में नारी शरीर के आभूषणों का उल्लेख आता है। इतना ही नहीं प्राचीन मूर्तियाँ चाहे वे देवी-देवताओं की हों, यक्ष किन्नरों की हों, आज भी अलंकारों से सुशोभित हो रही हैं। उदाहरण के लिये अजंता, एलोरा, बाघ के गुहा-चित्र तथा सारनाथ, साँची, अमरावती, नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशीला, मथुरा आदि में नष्ट की हुई नारी मूर्तियाँ अलंकारों से ही शृंगारित हुई हैं, जो नख से लेकर शिख तक सुशोभित हैं। वैदिक युग से लेकर इक्कीसवीं सदी तक गहने पहनकर शृंगार करने के साक्ष्य मौजूद हैं। सिर्फ मानव

ही नहीं देवी-देवता यहाँ तक कि ममी भी अलंकार युक्त शृंगार से परिपूर्ण हैं। मिस्र के पिरामिड तथा अन्य स्थानों में पायी जाने वाली ममीज भी अलंकारों से शृंगारित की जाती थीं।

नारी और उसके शृंगार का एक पूरक संबंध अत्यंत प्राचीन काल से चला आ रहा है, इसमें सच्चाई है। यहाँ तक कि कुदरत के द्वारा अगाध सौंदर्य प्राप्त नारी भी जब तक अलंकारों से अपने को सजा नहीं लेती है तब तक उसे आत्मसंतोष नहीं प्राप्त होता है। संभवतः नारी जाति की इसी मनोवृत्ति को ध्यान में रखकर रीतिकाल के आचार्य कवि केशवदास ने यहाँ तक कहा-

यद्यपि सुजाति सुलच्छनी, सुबरन सरस सुवृत्त

भूषण बिना न राजई, कविता-बनिता मित्त।

आभूषण नारी और विशेष रूप से भारतीय नारी की सदैव से ही स्वाभाविक कमजोरी रही है। फूलों, पत्तियों और पक्षियों के रंगीन पंखों से अपने शरीर को सजाते-सजाते नारियों का मन धातु और रत्नों से बने हुए आभूषणों के प्रति आकर्षित हुआ। आभूषणों के प्रति नारियों का मन इस तीव्रता के साथ आकर्षित हुआ कि शरीर के जिस भाग में आभूषण सहजता से पहना न जा सके उसको छेद करके आभूषण धारण करने का फैशन चला। नारियों के शरीर पर इतने अधिक आभूषण सजने लगे कि कवि को कहना पड़ा-

अंग-अंग नग जगमगति, दीपशिखा सी देह

शृंगार के साधन आभूषण स्त्रीधन के रूप में उसकी संपत्ति माने जाते हैं। यही आभूषण हमारी संस्कृति और सामाजिक प्रथा का अहम हिस्सा है। वर्तमान में भी बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक समय, स्थान एवं अवसरानुकूल स्त्री-पुरुषों में गहनों से शृंगार करने की परंपरा है। लेकिन अत्यंत प्राचीन काल से हमारे देश के मनीषी लोग यह भी कहते आ रहे हैं कि जीवन को संवारने के लिये सोने-चाँदी, हीरे-पन्ने के आभूषणों की नहीं, सदगुणों व संस्कारों के गहनों की आवश्यकता है। एक मानव का बाह्य सौंदर्य है तो दूसरा आंतरिक।

आज के समय में स्वर्णाभूषणों के विकल्प के रूप में एक से एक कृत्रिम आभूषण भी बाजार में उपलब्ध हो रहे हैं। सोने की बढ़ती हुई कीमतों के कारण आज अधिकांश स्त्रियाँ नकली आभूषणों को धारणकर अपना शृंगार-संवर्धन करती हैं।

यद्यपि नकली आभूषण महिलाओं में लोकप्रियता प्राप्त किये हैं फिर भी असली स्वर्णाभूषणों के प्रति उनके मन में भूख बनी रहती है क्योंकि नकली कभी असली जैसा आत्मसंतोष और गौरव प्रदान नहीं कर सकता है।

प्रश्न यह उठता है कि नारी शृंगार के लिये क्या अलंकार आवश्यक ही हैं। अलंकार का तात्पर्य ही है जो अलंकृत करे उसे अलंकार कहते हैं। शरीर को बाह्य रूप से आकर्षक बनाने के लिये अलंकारों की उपयोगिता है लेकिन उसका प्रयोग एक सीमा के अंतर्गत किया जाये तभी उसकी सार्थकता है। आत्मप्रदर्शन के लिये अनेक आभूषणों से अपने शरीर को सजा लेना शरीर के सहज कुदरती सौंदर्य को ढक देना है। नारी तो स्वयं में विधाता के सृष्टि की एक अनुपम देन है। कैशोर्य की सीढ़ियों को लांघकर यौवन के देहरी पर पाँव रखते ही नारी अपने अल्हड़ सौंदर्य के भार से फूल के मानिंद सुकुमार हो जाती है। ऐसी कुदरती शोभा वाली नारी के समक्ष स्वर्णाभूषणों की कोई कीमत नहीं। तभी तो कविवर मतिराम के मुख से इस तरह का छंद निकला-

कुंदन को रंग फीको लगे, झलकै अंग अंगन चारु गोराई आँखिन में अलसानि चितौनि में मंजु विलासन की सरसाई

को बिनु मोल विकात नहीं, मतिराम लहै मुसकानि मिठाई

ज्यों-ज्यों निहारिये नेरे ह्वै नैननि, त्यों-त्यों खरे निकरे सी निकाई

कुदरती सौंदर्य से दमकती ऐसी नारी के लिये अलंकार धारण करने की आवश्यकता ही क्या है तभी तो कवि केशवदास को कहना पड़ा-

काहें को सिंगार के बिगारति है मेरी आली

तेरे अंग बिना ही सिंगार के सिंगारे है।

महाकवि श्रीमख ने अपने श्रीकंठ चरित महाकाव्य में लिखा है कि मध्यम सौंदर्य वाली स्त्रियों में आभूषणों के प्रयोग से सुंदरता में थोड़ा सा आकर्षण आता है लेकिन उत्तम सौंदर्य वाली स्त्रियों में अलंकारों के प्रयोग से सौंदर्य ढ़प जाता है। कालिदास की पार्वती और शकुंतला का सौंदर्य उत्तम श्रेणी का था। इससे उन्हें बाह्य आडंबर की आवश्यकता नहीं थी। शकुंतला की आवरण विहीन सहज सुंदरता का चित्रण करते हुए कहाकवि ने लिखा है-

किमि वहि मधुराणां मंडनं नाकृतिनाम।

चाहे स्त्री को कितना भी कुदरती सौंदर्य मिला हो लेकिन उसके मन में आभूषणों के प्रति ललक बनी ही रहती है। यह ललक कहीं-कहीं इतनी तीव्रता के साथ उठती है कि गहनों की फरमाइश पर पति-पत्नी के मधुर रिस्ते में खटाश पैदा हो जाती है। मुंशी प्रेमचन्द ने अपने 'गबन' उपन्यास में जालपा जैसी स्त्री के माध्यम से आभूषणों के प्रति अतिशय ललक को दर्शाया गया है। आभूषणों की ललक केवल आजकल की स्त्रियों में हो, ऐसी बात नहीं यह मनोवृत्ति मध्यकाल के समृद्धता के युग में भी औरतों द्वारा गहनों की फरमाइश होती रही है। तभी तो कविवर बिहारीलाल को यह दोहा लिखना पड़ा-

सूधे पाँव व धरि परत, सोभा ही के भार।

भूषन भार सँभारिये, क्यों यह तन सुकुमार॥

कविवर बिहारी अपनी पत्नी के गहना मोह से अवश्य संतुष्ट रहे होंगे। पत्नी बार-बार गहना बनवाने के लिये उलाहना देती रही होंगी बिहारी लाल जी अपनी प्यारी पत्नी को दो टूक 'ना' कहकर रुष्ट कैसे करते तभी तो मीठी भाषा में कहकर आभूषणों के प्रति उनके व्यामोह को तोड़ने का प्रयास किया है।

आज के समय में कुछ ऐसी भी आधुनिक विचार वाली स्त्रियाँ समाज में मिल जायेगी जो आभूषणों को पूरी तरह से नजरअंदाज करके पुरुष जैसे परिधान धारण कर जिंदगी जीना चाहती हैं। ऐसी उन्मुक्त विचारों वाली आधुनिकायें आभूषणों को शृंगार का उपकरण नहीं उन्हें स्वर्ण पिंजर मानती हैं। उनकी दृष्टि में नेकलेस मवेशी बाँधने का सांकल नजर आता है। कंगन हथकड़ी जैसी दीखती है।

स्त्री का शरीर उसके सौंदर्य का एक अंश है, संपूर्ण सौंदर्य नहीं। नारी का संपूर्ण सौंदर्य तो उसका आंतरिक गुण है जो उसकी मानसिकता से ज्योतिर् होता है। कुछ महिलाओं की यह स्वीकारोक्ति है कि अपूर्णता में भी एक सुंदरता है जो हमें भीड़ से अलग करती है सुंदरता देखने वालों की आँखों में होती है, ऐसा कहा जाता है परंतु महिलाओं पर सुंदर दिखने का अतिशय दबाव जीवन के शुरुआती दौर से ही शुरु हो जाता है। आभूषण धारण करना या मेकअप करके बनना-सँवरना किसी भी स्त्री का स्व-अधिकार है लेकिन समाज ने स्त्रियों पर सौंदर्य

का जो भार डाला है उसके चलते वह खूबसूरत दिखना चाहती है। लेकिन अब सेल्फ लव और नेचुरल लुक को स्वीकार करती महिलाएं आत्मविश्वास के साथ सामने आ रही हैं और इस तरह समाज की पुरातन मान्यताओं को धता बता रही हैं।

शृंगार सौंदर्य की श्रीवृद्धि करता है। वह सिर्फ अलंकारों से ही नहीं होता है बल्कि हमारे संस्कारों में निहित गुणों से होता है। जीवन में आंतरिक सौंदर्य को ही महत्व दिया गया है। अच्छे संस्कारों में सदगुणों का महत्व है, आभूषणों का नहीं। समस्त सौंदर्य के भूषण नष्ट हो जाते हैं किंतु संस्कारों के भूषण कभी नष्ट नहीं होते। आभूषण स्त्रियों के सौंदर्य संवर्धन का साध्य उपकरण तो कतई नहीं है। हाँ, इन्हें बाह्य साधन के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। बशर्ते कि इनका उपयोग स्वाभाविक रूप में एक सीमा के अंतर्गत किया गया हो। महज आत्मप्रदर्शन के लिये आभूषणों को शरीर पर लाद लेना, शरीर के कुदरती सौंदर्य को ढक देना है। तभी तो बिहारी लाल ने आभूषणों को पैरों की गंदगी साफ करने वाले पायन्दाज से उपमित किया है-

मानहु विधि तन अच्छ छवि स्वच्छ राखिबे काज।

दृग-पग पोछन को किये, भूषन पायन्दाज॥

सच्चाई तो यही है कि कुदरती सौंदर्य से दमकते नारी के शरीर पर आभूषणों के प्रयोग की कोई सार्थक उपयोगिता नहीं है। उर्दू के एक शायर ने ठीक ही लिखा है-

नहीं मुहताज जेवर का, जिसे खुशबू खुदा ने दी।

कि देखो खुशनुमा लगता है, कैसा चाँद बिनु गहना॥

और भी एक बात है आकर्षक और स्वस्थ शरीर पर ही आभूषण अपना आकर्षण दिखाते हैं, रोगजर्जर कृशकाय पर आभूषण शोभा नहीं देते अपितु उस नारी का उपहास ही करते हैं। अतः नारी के शृंगार-संवर्धन में अलंकारों की भूमिका दायम दर्जे की है, प्रथम में तो उनका सहज सलोना स्वाभाविक सौंदर्य ही है जो उसके अंग-अंग से प्रतिबिंबित होता रहता है।


मालती कुँज, सिद्धार्थ इन्क्लेव विस्तार

एचआईएस-11, 32 तारामंडल

गोरखपुर(उत्तर प्रदेश)

संपर्क: 9450639170

रामायण, महाभारत एवं वेद : एक विश्लेषण

 डॉ. संजय वर्मा

इतिहास, तथ्य और घटनाओं के साथ मानव की विकास यात्रा की खोज भी है। यह तय है कि मानव, अपने विकास के अनुक्रम में ही वैज्ञानिक अनुसंधानों से सायास-अनायास जुड़ता रहा है। ये वैज्ञानिक उपलब्धियाँ या आविष्कार रामायण, महाभारत काल में उसी तरह चरमोत्कर्ष पर थीं, जिस तरह ऋग्वेद के लेखन-संपादन काल के समय संस्कृत भाषायी विकास के शिखर पर थी। रामायण का शब्दार्थ भी राम का अयण अर्थात् भ्रमण से है। वे तीन सौ रामायण और अनेक रामायण विषयक संदर्भ ग्रंथ, जिनके प्रभाव को नकारने के लिए पाउला रिचमैन ने 1942 में 'मेनी रामायणस द डाइवर्सिटी ऑफ ए नैरेटिव ट्रेडिशन इन साउथ एशिया' लिखी और ए.के. रामानुजन ने 'श्री हंड्रेड रामायण फाइव एग्जांपल एंड श्री थॉट्स ऑन ट्रांसलेशन', निबंध लिखकर काव्यजन्य विद्रूप अंशों का संकलन किया।

रामायण एकांगी दृष्टिकोण का वृत्तांत भर नहीं है। इसमें कौटुम्बिक सांसारिकता है। राज-समाज संचालन के कूट मंत्र हैं। भूगोल है। वनस्पति और जीव जगत हैं। राष्ट्रीयता है। राष्ट्र के प्रति उत्सर्ग का चरम है। अस्त्र-शस्त्र हैं। यौद्धिक कौशल के गुण हैं। भौतिकवाद है। कणाद का परमाणुवाद है। सांख्यदर्शन और योग के सूत्र हैं। वेदांत दर्शन है और अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हैं। गांधी का राम-राज्य और पं. दीनदयाल उपाध्याय का आध्यात्मिक भौतिकवाद के उत्स इसी रामायण में हैं। वास्तव में रामायण और उसके परवर्ती ग्रंथ कवि या लेखक की कपोल-कल्पना न होकर तत्कालीन ज्ञान के विश्व कोश हैं। जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने तो ऋग्वेद को कहा भी था कि यह अपने युग का 'विश्व कोश' है। मसलन इनसाइक्लोपीडिया ऑफ वर्ल्ड।

लंकाधीश रावण ने नाना प्रकार की विधाओं के पल्लवन की दृष्टि से यथोचित धन व सुविधाएं उपलब्ध कराई थी। रावण के पास लड़ाकू वायुयानों और समुद्री जलपोतों के बड़े भंडार थे। प्रक्षेपास्त्र और ब्रह्मास्त्रों का अकूत भंडार व उनके निर्माण में लगी अनेक वेधशालाएं थीं।

दूरसंचार व दूरदर्शन की तकनीकी-यंत्र लंका में स्थापित थे। राम-रावण युद्ध केवल राम और रावण के बीच न होकर एक विश्वयुद्ध था जिसमें उस समय की समस्त विश्व-शक्तियों ने अपने-अपने मित्र देश के लिए लड़ाई लड़ी थी। परिणामस्वरूप ब्रह्मास्त्रों के विकट प्रयोग से लगभग समस्त वैज्ञानिक अनुसंधान-शालाएं उनके आविष्कार, वैज्ञानिक व अध्येता काल-कवलित हो गए। यही कारण है कि हम कालांतर में हुए महाभारत युद्ध में भी वैज्ञानिक चमत्कारों को रामायण की तुलना में उत्कृष्ट व सक्षम नहीं पाते हैं। यह भी इतना विकराल विश्व-युद्ध था कि रामायण काल से शेष बचा जो विज्ञान था, वह महाभारत युद्ध के विध्वंस की लपेट में आकर नष्ट हो गया। इसीलिए महाभारत के बाद के जितने भी युद्ध हैं वे खतरनाक अस्त्र-शस्त्रों से थल सेना के माध्यम से ही लड़े गए दिखाई देते हैं। बीसवीं सदी में हुए द्वितीय विश्व युद्ध में जरूर हवाई हमले के माध्यम से अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा-नागासाकी में परमाणु हमले किए।

वाल्मीकी रामायण एवं नाना रामायणों तथा अन्य ग्रंथों में 'पुष्पक विमान' के उपयोग के विवरण हैं। इससे स्पष्ट होता है कि उस युग में राक्षस व देवता न केवल विमान शास्त्र के ज्ञाता थे, बल्कि सुविधायुक्त आकाशगामी साधनों के रूप में वाहन उपलब्ध भी थे। रामायण के अनुसार पुष्पक विमान के निर्माता ब्रह्मा थे। ब्रह्मा ने यह विमान कुबेर को भेंट किया था। कुबेर से इसे रावण ने छीन लिया। रावण की मृत्यु के बाद विभीषण इसका अधिपति बना और उसने फिर से इसे कुबेर को दे दिया। कुबेर ने इसे राम को उपहार में दे दिया। राम लंका विजय के बाद अयोध्या इसी विमान से पहुँचे थे।

रामायण में दर्ज उल्लेख के अनुसार पुष्पक विमान मोर जैसी आकृति का आकाशचारी विमान था, जो अग्नि-वायु की समन्वयी ऊर्जा से चलता था। इसकी गति तीव्र थी और चालक की इच्छानुसार इसे किसी भी दिशा में गतिशील रखा जा सकता था। इसे छोटा-बड़ा भी किया जा सकता था। यह सभी ऋतुओं में आरामदायक यानी वातानुकूलित था। इसमें स्वर्ण खंभ मणिनिर्मित दरवाजे,

मणि-स्वर्णमय सीढ़ियां, वेदियां (आसन) गुप्त गृह, अट्टालिकाएं (केबिन) तथा नीलम से निर्मित सिंहासन (कुर्सियां) थे। अनेक प्रकार के चित्र एवं जालियों से यह सुसज्जित था। यह दिन और रात दोनों समय गतिमान रहने में समर्थ था। इस विवरण से जाहिर होता है, यह उन्नत प्रौद्योगिकी और वास्तु कला का अनूठा नमूना था।

‘ऋग्वेद’ में भी चार तरह के विमानों का उल्लेख है जिन्हें आर्य-अनार्य उपयोग में लाते थे। इन चार वायुयानों को शकुन, त्रिपुर, सुन्दर और रूक्म नामों से जाना जाता था। ये चालक रहित और तीव्रगामी हुआ करते थे। इनकी गति पतंग (पक्षी) की भांति, क्षमता तीन दिन-रात लगातार उड़ते रहने की और आकृति नौका जैसी थी। त्रिपुर विमान तो खण्डों (तल्लों) वाला था तथा जल, थल एवं नभ तीनों में विचरण कर सकता था। रामायण में ही वर्णित हनुमान की आकाश-यात्राएं, महाभारत में देवराज इन्द्र का दिव्य-रथ, कार्तवीर्य अर्जुन का स्वर्ण विमान एवं सोम-विमान, पुराणों में वर्णित नारदादि की आकाश यात्राएं एवं विभिन्न देवी-देवताओं के आकाशगामी वाहन रामायण-महाभारत काल में वायुयान और हेलीकाप्टर जैसे यांत्रिक साधनों की उपलब्धि के प्रमाण हैं।

रामायण काल के मायावी लोग : रामायण काल में ऐसे कई मायावी असुर, दानव, वानर और राक्षस थे जो आश्चर्यजनक रूप से शक्तिशाली थे। जैसे-माल्यवान, सुमाली, माली, रावण, कालनेमि, सुबाहु, मारीच, कुंभकर्ण, कबंध, विराध, अहिरावण, खर और दूषण, मेघनाथ, मय दानव, बालि आदि।

रामायण काल के आविष्कार : रामायण काल में कई वैज्ञानिक थे। नल, नील, मय दानव, विश्वकर्मा, अग्निवेश, सुबाहु, ऋषि अगत्य, वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि कई वैज्ञानिक थे। रामायण काल में भी आज के युग जैसे आविष्कार हुए थे। रामायण काल में नाव, समुद्र जलपोल, विमान, शतरंज, रथ, धनुष-बाण और कई तरह के अस्त्र शस्त्रों के नाम तो आपने सुने ही होंगे। लेकिन उस काल में मोबाइल और लड़ाकू विमानों को नष्ट करने का यंत्र भी होता था।

विभीषण के पास दूर नियंत्रण यंत्र था जिसे ‘मधुमक्खी’ कहा और जो मोबाइल की तरह उपयोग होता

था। विभीषण के पास दर्पण यंत्र भी था। लंका के 10,000 सैनिकों के पास ‘त्रिशूल’ नाम के यंत्र थे, जो दूर-दूर तक संदेश का आदान-प्रदान करते थे। इसके अलावा दर्पण यंत्र भी था, अंधकार में प्रकाश का आभास प्रकट करता था।

लड़ाकू विमानों को नष्ट करने के लिए रावण के पास भस्मलोचन जैसा वैज्ञानिक था जिसने एक विशाल ‘दर्पण यंत्र’ का निर्माण किया था। इससे प्रकाश पुंज वायुयान पर छोड़ने से यान आकाश में ही नष्ट हो जाते थे। लंका से निष्कासित किए जाते वक्त विभीषण भी अपने साथ कुछ दर्पण यंत्र ले आया था। इन्हीं ‘दर्पण यंत्रों’ में सुधार कर अग्निवेश ने इन यंत्रों को चौखटों पर कसा और इन यंत्रों से लंका के यानों की ओर प्रकाश पुंज फेंका जिससे लंका की यान शक्ति नष्ट होती चली गई। एक अन्य प्रकार का भी दर्पण यंत्र था जिसे ग्रंथों में त्रिकाल द्रष्टा कहा गया है, लेकिन यह यंत्र त्रिकाल द्रष्टा नहीं बल्कि दूरदर्शन जैसा कोई यंत्र था। लंका में यांत्रिक सेतु, यांत्रिक कपाट और ऐसे चबूतरे भी थे, जो बटन दबाने से ऊपर-नीचे होते थे। ये चबूतरे संभवतः लिफ्ट थे।

निर्माण कार्य : रामायण काल में भवन, पूल और अन्य निर्माण कार्यों का भी जिक्र मिलता है। इससे पता चलता है कि उस काल में भव्य रूप से निर्माण कार्य किए जाते थे और उस काल की वास्तु एवं स्थापत्य कला आज के काल से कई गुना आगे थी। उस युग में विश्वामित्र और मयासुर नामक दो प्रमुख वास्तु और ज्योतिष शास्त्री थे। दोनों ने ही कई बड़े-बड़े नगर, महल और भवनों का निर्माण किया था। गीता प्रेस, गोरखपुर से छपी पुस्तक ‘श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण-कथा-सुख-सागर’ में वर्णन है कि राम ने सेतु के नामकरण के अवसर पर उसका नाम ‘नल सेतु’ रखा। इसका यह कारण था कि लंका तक पहुँचने के लिए निर्मित पुल का निर्माण विश्वकर्मा के पुत्र नल द्वारा बताई गई तकनीक से संपन्न हुआ था। महाभारत में भी राम के नल सेतु का जिक्र आया है।

सूर्य और पृथ्वी के बीच : 600 साल पहले ही तुलसीदास जी ने बता दिया था सूर्य और पृथ्वी के बीच की सटीक दूरी। भले विज्ञान बहुत तरक्की कर रहा हो और नित नये राज खोल रहा हो पर भारत की भूमि पर हमेशा से ही

विज्ञान पर शोध होता रहा है। यही कारण है कि जो ज्ञान आज वैज्ञानिक बताते हैं वे सभी हमें हमारे वेदों में मिलते हैं। विज्ञान को जितना भारतीय मुनियों ने समझा है शायद ही किसी और ने जाना हो।

नए शोधानुसार रामायण काल को लगभग 7323 ईसा पूर्व अर्थात् आज से लगभग 9341 वर्ष पूर्व का बताया गया है, जबकि भगवान श्रीराम का जन्म 5114 ईसा पूर्व चैत्र मास की नवमी को हुआ था।

आईआईटी खड़गपुर और भारतीय पुरातत्व विभाग के वैज्ञानिकों ने सिंधु घाटी सभ्यता की प्राचीनता को लेकर नए तथ्य सामने रखे। वैज्ञानिकों के मुताबिक यह सभ्यता 5500 साल नहीं बल्कि 8000 साल पुरानी थी। वैज्ञानिकों का यह शोध 25 मई 2016 को प्रतिष्ठित रिसर्च पत्रिका 'नेचर' ने प्रकाशित किया। वैज्ञानिकों ने सिंधु घाटी की पॉटरी की नई सिरे से पड़ताल की और ऑप्टिकली स्टिम्यूलैटेड लूमनेसन्स तकनीक का इस्तेमाल कर इसकी उम्र का पता लगाया तो यह 6,000 वर्ष पुराने निकले हैं। इसके अलावा अन्य कई तरह की शोध से यह पता चला कि यह सभ्यता 8,000 वर्ष पुरानी है। इसका मतलब यह कि यह सभ्यता तब विद्यमान थी जबकि भगवान श्रीराम (5114 ईसा पूर्व) का काल था। तब मिस्र की सभ्यता की शुरुआत हो रही थी। खैर... यह तो हुई रामायण के काल की बात, अब यह भी जान लें कि इस काल में कैसे लोग, पशु-पक्षी आदि रहते थे।

किंवदंती तो यह भी है कि गौतम बुद्ध ने भी वायुयान द्वारा तीन बार लंका की यात्रा की थी। एरिक फॉन डॉनिकेन की किताब 'चैरियट्स ऑफ गॉड्स' में तो भारत समेत कई प्राचीन देशों से प्रमाण एकत्रित करके वायुयानों की तत्कालीन उपस्थिति की पुष्टि की गई है। इसी प्रकार डॉ. ओंकारनाथ श्रीवास्तव ने अनेक पाश्चात्य अनुसंधानों के मतों के आधार पर संभावना जताई है कि 'रामायण' में अंकित हनुमान की यात्राएं वायुयान अथवा हेलीकाप्टर की यात्राएं थीं या हनुमान 'राकेट वेल्ट' बांधकर आकाशगमन करते थे, जैसाकि आज के अंतरिक्ष-यात्री करते हैं। हनुमान-मेघनाद में परस्पर हुआ वायु-युद्ध भी हावरक्रफ्ट से मिलता-जुलता है। आज भी लंका की पहाड़ियों पर चौरस मैदान पाए जाते हैं, जो शायद उस कालखण्ड के वैमानिक अड्डे थे। प्राचीन देशों के ग्रंथों में

वर्णित उड़ान-यंत्रों के वर्णन लगभग एक जैसे हैं। कुछ गुफा-चित्रों में आकाशचारी मानव एवं अंतरिक्ष वेशभूषा से युक्त व्यक्तियों के चित्र भी निर्मित हैं। मिस्र में तो दुनिया का ऐसा नक्शा मिला है, जिसका निर्माण आकाश में उड़ान-सुविधा की पुष्टि करता है। इन सब साक्ष्यों से प्रमाणित होता है कि पुष्पक व अन्य विमानों के रामायण में वर्णन कोई कवि-कल्पना की कोरी उड़ान नहीं है।

ताजा वैज्ञानिक अनुसंधानों ने भी तय किया है कि रामायण काल में वैमानिकी प्रौद्योगिकी इतनी अधिक विकसित थी, जिसे आज समझ पाना भी कठिन है। रावण का ससुर मयासुर अथवा मयदानव ने भगवान विश्वकर्मा (ब्रह्मा) से वैमानिकी विद्या सीखी और पुष्पक विमान बनाया जिसे कुबेर ने हासिल कर लिया। पुष्पक विमान की प्रौद्योगिकी का विस्तृत ब्यौरा महर्षि भारद्वाज द्वारा लिखित पुस्तक 'यंत्र-सर्वेश्वर' में भी किया गया था। वर्तमान में यह पुस्तक विलुप्त हो चुकी है, लेकिन इसके 40 अध्यायों में से एक अध्याय 'वैमानिक शास्त्र' अभी उपलब्ध है। इसमें भी शकुन, सुन्दर, त्रिपुरा एवं रूक्म विमान सहित 25 तरह के विमानों का विवरण है। इसी पुस्तक में वर्णित कुछ शब्द जैसे 'विश्व क्रिया दर्पण' आज के राडार जैसे यंत्र की कार्यप्रणाली का रूपक है।

नए शोधों से पता चला कि पुष्पक विमान एक ऐसा चमत्कारिक यात्री विमान था, जिसमें चाहे जितने भी यात्री सवार हो जाएं, एक कुर्सी हमेशा रिक्त रहती थी। यही नहीं यह विमान यात्रियों की संख्या और वायु के घनत्व के हिसाब से स्वमेव अपना आकार छोटा या बड़ा कर सकता था। इस तथ्य के पीछे वैज्ञानिकों का यह तर्क है कि वर्तमान समय में हम पदार्थ को जड़ मानते हैं, लेकिन हम पदार्थ की चेतना को जागृत कर लें तो उसमें भी संवेदना सृजित हो सकती है और वह वातावरण व परिस्थितियों के अनुरूप अपने आपको ढालने में सक्षम हो सकता है। रामायण काल में विज्ञान ने पदार्थ की इस चेतना को संभवतः जागृत कर लिया था, इसी कारण पुष्पक विमान स्व-संवेदना से क्रियाशील होकर आवश्यकता के अनुसार आकार परिवर्तित कर लेने की विलक्षणता रखता था। तकनीकी दृष्टि से पुष्पक में इतनी खूबियां थीं, जो वर्तमान विमानों में नहीं हैं। ताजा शोधों से पता

चला कि यह उस युग का पुष्पक या अन्य विमान आज आकाश गमन कर लें तो उनके विद्युत चुंबकीय प्रभाव से मौजूदा विद्युत व संचार जैसी व्यवस्थाएँ ध्वस्त हो जाएंगी। पुष्पक विमान के बारे में यह भी पता चला है कि उसी व्यक्ति से संचालित होता था जिसने विमान संचालन से संबंधित मंत्र सिद्ध किया हो, मसलन जिसके हाथ में विमान संचालित करने वाला रिमोट हो। शोधकर्ता भी इसे कंपन तकनीक (वाइब्रेशन टेक्नोलॉजी) से जोड़ कर देख रहे हैं। पुष्पक की एक विलक्षणता यह भी थी कि वह केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक ही उड़ान नहीं भरता था, बल्कि एक ग्रह से दूसरे ग्रह तक आवागमन में भी सक्षम था यानी यह अंतरिक्षयान की क्षमताओं से भी युक्त था।

रामायण एवं अन्य राम-रावण लीला विषयक ग्रंथों में विमानों की केवल उपस्थिति एवं उनके उपयोग का विवरण है, इस कारण कथित इतिहासज्ञ इस पूरे युग को कपोल-कल्पना कहकर नकारने का साहस कर डालते हैं लेकिन विमानों के निर्माण, इनके प्रकार और इनके संचालन का संपूर्ण विवरण महर्षि भारद्वाज लिखित 'वैमानिक शास्त्र' में है। यह ग्रंथ उनके प्रमुख ग्रंथ 'यंत्र-सर्वेश्वम्' का एक भाग है। इसके अतिरिक्त भारद्वाज ने 'अंशु-बोधिनी' नामक ग्रंथ भी लिखा है, जिसमें 'ब्रह्मांड विमान' (कॉस्मोलॉजी) का वर्णन है। इसी ज्ञान से निर्मित व परिचालित होने के कारण विमान विभिन्न ग्रहों की उड़ान भरते थे। वैमानिक-शास्त्र में आठ अध्याय, एक सौ अधिकरण (सेक्शंस) पांच सौ सूत्र (सिद्धांत) और तीन हजार श्लोक हैं। इस ग्रंथ की भाषा वैदिक संस्कृत है।

वैमानिक-शास्त्र में चार प्रकार के विमानों का वर्णन है। ये काल के आधार पर विभाजित हैं। इन्हें तीन श्रेणियों में रखा गया है। इसमें 'मंत्रिका' श्रेणी में वे विमान आते हैं जो सतयुग और त्रेतायुग में मंत्र और सिद्धियों से संचालित व नियंत्रित होते थे। दूसरी श्रेणी 'तांत्रिका' है, जिसमें तंत्र शक्ति से उड़ने वाले विमानों का ब्यौरा है। इसमें तीसरी श्रेणी में कलयुग में उड़ने वाले विमानों का ब्यौरा भी है, जो इंजन (यंत्र) की ताकत से उड़ान भरते हैं। यानी भारद्वाज ऋषि ने भविष्य की उड़ान प्रौद्योगिकी क्या होगी, इसका अनुमान भी अपनी दूरदृष्टि से लगा लिया था। इन्हें कृतक विमान कहा

गया है। कुल 25 प्रकार के विमानों का इसमें वर्णन है।

तांत्रिक विमानों में 'भैरव' और 'नंदक' समेत 56 प्रकार के विमानों का उल्लेख है। कृतक विमानों में 'शकुन' 'सुन्दर' और 'रूक्म' सहित 25 प्रकार के विमान दर्ज हैं। 'रूक्म' विमान में लोहे पर सोने का पानी चढ़ा होने का प्रयोग भी दिखाया गया है। 'त्रिपुर' विमान ऐसा है, जो जल, थल और नभ में तैर-दौड़ व उड़ सकता है।

उड़ान भरते हुए विमानों का करतब दिखाये जाने व युद्ध के समय बचाव के उपाय भी वैमानिकी-शास्त्र में हैं। बतौर उदाहरण यदि शत्रु ने किसी विमान पर प्रक्षेपास्त्र अथवा स्यंदन (रॉकेट) छोड़ दिया है तो उसके प्रहार से बचाने के लिए विमान को तियगगति (तिरछी गति) देने, कृत्रिम बादलों में छिपाने या 'तामस यंत्र' से तमः (अंधेरा) अर्थात् धुआँ छोड़ दो। यही नहीं विमान को नई जगह पर उतारते समय भूमिगत सावधानियां बरतने के उपाय व खतरनाक स्थिति को परखने के यंत्र भी दर्शाए गए हैं। जिसमें यदि भूमिगत सुरंगें हैं तो उनकी जानकारी हासिल की जा सके। इसके लिए दूरबीन से समानता रखने वाले यंत्र 'गुहागर्भादर्श' का उल्लेख है। यदि शत्रु विमानों से चारों ओर से घेर लिया हो तो विमान में ही लगी 'द्विचक्र कीली' को चला देने का उल्लेख है। ऐसा करने से विमान 87 डिग्री की अग्नि-शक्ति निकालेगी। इसी स्थिति में विमान को गोलाकार घुमाने से शत्रु के सभी विमान नष्ट हो जाएंगे।

इस शास्त्र में दूर से आते हुए विमानों को भी नष्ट करने के उपाय बताए गए हैं। विमान से 4087 प्रकार की घातक तरंगें फेंककर शत्रु विमान की तकनीक नष्ट कर दी जाती है। विमानों से ऐसी कर्कश ध्वनियाँ गुंजाने का भी उल्लेख है, जिसके प्रगट होने से सैनिकों के कान के पर्दे फट जाएंगे। उनका हृदयाघात भी हो सकता है। इस तकनीक को 'शब्द सघण यंत्र' कहा गया है। युद्धक विमानों के संचालन के बारे में संकेत दिए हैं कि आकाश में दौड़ते हुए विमान के नष्ट होने की आशंका होने पर सातवीं कीली अर्थात् घुंडी चलाकर विमान के अंगों को छोटा-बड़ा भी किया जा सकता है। उस समय की यह तकनीक इतनी महत्वपूर्ण है कि आधुनिक वैमानिक विज्ञान भी अभी उड़ते हुए विमान को इस तरह से संकुचित अथवा विस्तारित करने में समर्थ नहीं है।

रामायण और महाभारत कथाएँ नाना लोक स्मृतियों और विविध आयामों में प्रचलित बनी रहकर वर्तमान हैं। इनका विस्तार भी सार्वभौमिक है। दुनिया के ही नहीं भारत के भी वामपंथी विचारधारा से प्रेरित बुद्धिजीवियों का एक वर्ग तरह-तरह के कुतर्क गढ़ कर इस ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विरासत को मिथक कहकर नकारने की कोशिश करता रहा है। लेकिन देश-दुनिया के जनमानस में राम-कृष्ण की जो मूर्त-अमूर्त छवि बनी हुई है, उसे गढ़े गए तर्कों-कुतर्कों से कभी खंडित नहीं किया जा सका। शायद इसीलिए भवभूति और कालिदास ने रामायण को इतिहास बताया। वाल्मीकी रामायण और उसके समकालीन ग्रंथों में 'इतिहास' को 'पुरावृत्त' कहा गया है। गोया, कालिदास के 'रघुवंश' में विश्वामित्र राम को पुरावृत्त सुनाते हैं। मार्क्सवादी चिंतक डॉ. रामविलास शर्मा ने रामायण को महाकाव्यात्मक इतिहास की श्रेणी में रखा है। ऐसे ग्रंथों की तथ्यात्मकताओं

को झुठलाने की दृष्टि से कलंक और काम कथाओं के विभिन्न रामायणों में वर्णित क्षेपकों के संकलन को अल्पवयस्क छात्रों को पढ़ाकर आखिर हम किस प्रकार की जुगुप्सा अथवा जिज्ञासा विद्यार्थियों में उत्पन्न करना चाहते हैं? इन्हीं ग्रंथों में विज्ञानसम्मत अनेक सूत्र व स्रोत मौजूद हैं। हम इन्हें क्यों नहीं संकलित कर पाठ्यक्रमों में शामिल करते? ऐसा करने से हम मेधावी छात्रों में विज्ञान सम्मत महत्वाकांक्षा जगा सकते हैं और भारतीय जीवन-मूल्यों के इन आधार ग्रंथों से मिथकीय आध्यात्मिकता की धूल झाड़ने का काम भी कर सकते हैं।

पत्रकार-विज्ञान एवं खेल,
विशिष्ट वार्ताकर-आकाशवाणी,
कंप्यूटर सेंटर,
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
संपर्क: 6386795608

लेखकों/रचनाकारों से निवेदन

'रेल रश्मि' में प्रकाशनार्थ रेल से संबंधित तकनीकी, गैर-तकनीकी, लेख, कहानी, कविता, गजल, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत, योग, अध्यात्म आदि अनेकानेक विधाओं/विषयों पर स्तरीय रचनाएँ आमंत्रित की जाती हैं। रचनाओं पर उचित मानदेय देने की भी व्यवस्था है। कृपया नोट करें कि रचनाएँ टाइप की हुई अथवा कंप्यूटर के माध्यम से स्वच्छ टंकित की हुई हों। हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार्य नहीं होंगी। रचना हार्ड कापी के साथ सी.डी./पेन ड्राइव के द्वारा भी दी जा सकती है। रचना कागज के एक ही ओर दोनों तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़ कर लिखें और दो पंक्तियों के बीच पर्याप्त स्थान अवश्य छोड़ें। रचना स्पष्ट और सुपाठ्य हो। रचना को भेजने से पूर्व एक बार पढ़कर अवश्य शुद्ध कर लें और मूल प्रति ही भेजें। रचनाओं के साथ इस आशय का प्रमाण/घोषणा पत्र भी होना चाहिए कि यह लेख/रचना लेखक/रचनाकार की मौलिक कृति है और यह इससे पहले प्रकाशित नहीं हुई है। रचना के साथ पता, पिन कोड, संपर्क नंबर, बैंक का नाम, खाता संख्या, आईएफएससी कोड भी अवश्य उद्धृत करें।

कई रचनाएँ एक साथ न भेजें। रचना दो से तीन फुल स्केप के आकार के पृष्ठों से अधिक न हो। यदि किसी कारणवश किसी रचना को पत्रिका में शामिल करना संभव न हुआ तो उसे लौटाया नहीं जाएगा। रचनाएँ निम्न पते पर भी भेज सकते हैं-

संपादक, रेल रश्मि
केंद्रीय हिंदी अनुभाग
मुकाधि कार्यालय,
पूर्वोत्तर रेलवे,
गोरखपुर-273012
ईमेल-seniorol9@gmail.com

गोरखपुर के डॉक्टर



डॉ. एस.के. सैनी

गोरखपुर पूर्वांचल का अति विख्यात शहर है। यहाँ पर आसपास के जनपदों के हजारों परिवार आकर बसे हैं, ताकि बच्चों की शिक्षा-दीक्षा सुव्यवस्थित हो सके। दूसरी ओर पश्चिम बिहार के कई शांतिप्रिय परिवार भी वहाँ की रोजमर्रा की ठांय-ठांय से परेशान होकर यहाँ आ बसे। नेपाल से आए कई भाई भी यहीं पर कई वर्षों से बसे हुए हैं।

गोरखपुर में गर्मी के मौसम में गर्मी भी तेज पड़ती है और साथ में उमस भी। वहीं पर सर्दियों में दाँत किट-किटा देने वाली ठंड से भी सभी गोरखपुरवासी परेशान रहते हैं। ऊपर से तराई में मच्छरों का प्रकोप रहता है और इसी कारण गोरखपुर बैक्टीरिया जनित रोगों का घर सा बन जाता है, जहाँ गुड़ होगा वहाँ मक्खियाँ आयेंगी ही। जहाँ मरीज ज्यादा होंगे वहाँ डॉक्टर रहेंगे ही, सो गोरखपुर के डॉक्टर भी विख्यात हैं। गोरखपुर में डॉक्टरों के दो रोड हैं जहाँ पूरे-पूरे डॉक्टर ही रहते हैं। पहला रोड तो कसया रोड कैन्ट थाना क्षेत्र के निकटवर्ती है, दूसरा बेतियाहाता में मौजूद है। यहाँ आपको हर मर्ज के इलाज करने वाले डॉक्टर मिल जाएंगे।

गोरखपुर के डॉक्टर विख्यात भी हैं और कुख्यात भी। पहले हम विख्यात डॉक्टरों की बात करें तो कुछ ऐसे नामी-गिरामी डॉक्टर हैं कि मरीजों को 4 घंटे से लेकर एक महीने भी इंतजार करना पड़े तो वह करेगा। किंतु दिखाएगा उन्हीं डॉक्टर साहब को क्योंकि उसे पता है कि जिस मर्ज को वह पाले हुए है उसकी दवाई उन अमुक डॉक्टर साहब के पास ही है। एक बार की बात है एक पुराना मरीज डॉक्टर साहब के पास पहुँचा और उसने शिकायत की कि डॉक्टर साहब मेरे हाथ, पैर और चेहरे पर सूजन आ गई है और आपकी दी हुई दवाई का कोई असर ही नहीं हो रहा है। डॉक्टर साहब ने उस मरीज को गौर से देखा और फिर आव देखा न ताव एक जोरदार झापड़ रसीद किया और चिल्लाते हुए बोले मना किया था न पीने को साले, जिस काम को मना करेंगे वही काम करेगा। अरे हम

डॉक्टर हैं जादूगर थोड़े हैं जो छड़ी घुमाई और तेरी सूजन उतार देंगे। सारे कुकर्म तू करे और डॉक्टर उसे ठीक करता रहे। मरीज ने त्रस्त होकर हाथ जोड़ लिए, कान पकड़े और ऊठक-बैठक दूसरे मरीजों के सामने लगाई और बोला इस बार बचा लीजिए आगे से एक बूँद नहीं पीऊँगा। बूँद की बात छोड़िए सुंघूंगा भी नहीं। सो डॉक्टरों के यहाँ मरीज शाम को सात बजे से बैठे-बैठे रात को साढ़े ग्यारह बजे अपनी बारी का इंतजार करता रहता है, किन्तु गलती से भी दूसरे डॉक्टर के पास नहीं जाता। कुख्यात डॉक्टरों की बात करें तो लोग बोलते हैं कि ये डॉक्टर नहीं हैं कसाई हैं जो एक बार इनके फेरे में फँस गया उसको पूरा हलाल करके ही छोड़ते हैं। कई सारे डॉक्टरों ने अपने दलाल बस अड्डों और रेलवे स्टेशनों में लगा रखे होते हैं जो उनके लिए ग्रामीण क्षेत्रों से आए हुए मरीजों को लुभाकर उनके यशोगान कर उनके अस्पताल तक पहुँचाते हैं। इसके लिए बकायदा उनको कमीशन मिलता है।

डॉक्टर, मरीज और नर्स का एक अद्भूत प्रेम त्रिकोण होता है जिसकी थाह आज तक कोई शोधकर्ता नहीं पा सका। कभी-कभार अखबारों में उड़ती खबरें छपती रहती हैं जिनसे ग्रामवासियों और पड़ोसियों का ज्ञानवर्धन होता रहता है। इसी तरह की एक कहानी है, डॉक्टर के पास अपने पिता के इलाज के लिए आई सुन्दरी पर डॉक्टर साहब मोहित हो गए, उन्होंने सुन्दरी के पिता का इलाज कर उनको घर भेज दिया और सुन्दरी को अपने घर रख लिया। सुन्दरी धीरे-धीरे डॉक्टर के पर्दे के पीछे की बातों से भी अवगत होने लगी, उसने जल्दी ही प्रेयसी के पद से एक कदम आगे बढ़कर पत्नी के दर्जे की विधिवत माँग की तो डॉक्टर साहब का प्रेम स्वाहा हो गया और उन्होंने इससे पिंड छुड़ाने की योजना बना ली। वे उसे नेपाल ले गए वहाँ से उसे परमधाम पहुँचा दिया और गोरखपुर आकर उसके गायब होने का शोर मचा दिया। चतुराई इतनी ज्यादा थी कि उसके मोबाईल के सहारे उसे जीवित होने का पूरा भ्रमजाल फैलाया

गया। कातिल कितना ही समझदार क्यों न हो, चतुर क्यों न हो, आगे-पीछे पकड़ा ही जाता है और भारतीय पुलिस ऐसे सफेदपोश कातिलों को तो कुछ दिनों में ही पकड़ लेती है, जो स्वयं को बहुत चतुर समझते हैं। खैर, उस घटना से डॉक्टरी बिरादरी की बहुत छीछालेदर हुई। उस घटना से कई चतुर लोगों ने सबक सीखे, उसकी चर्चा बाद में। गोरखपुर के अधिकांश डॉक्टर जब काम करते-करते थक जाते हैं तो देश-विदेश भ्रमण पर निकल जाते हैं। जो नहीं जा पाते वे हर रविवार को रेलवे के क्रिकेट मैदान में क्रिकेट खेलने के लिए इकट्ठे होते हैं और रविवार का पूरा दिन क्रिकेट खेलकर खाना-पीना खाकर शाम को पाँच से छः बजे जब रेलवे स्टेडियम कालोनी से बाहर निकलते हैं तो ऐसा लगता है कि सांसदों का काफिला जा रहा है। बड़ी-बड़ी आयातित गाड़ियाँ स्पोर्ट्स यूटिलिटी व्हिकल उनकी शान, आय का भव्य प्रदर्शन करते हैं। सुबह दस बजे ही उनकी गाड़ियाँ आकर क्रिकेट ग्राउंड के बगल में सड़क के दोनों ओर ड्राइवरों द्वारा ऐसी पार्क कर दी जाती है उस दिन वह लेन रेलवे कालोनी नहीं गोलघर लगने लगता है। कई अति उत्साही ड्राइवर तो डॉक्टर साहब को क्रिकेट ग्राउंड के द्वार पर उतारकर जगह न मिलने पर अधिकारियों के बंगलों के गेट के आगे ही लगा देते हैं। विगत गणतंत्र दिवस को ही अभूतपूर्व नजारा रेल क्रिकेट ग्राउंड में दिखाई दिया। कालोनी के अधिकारी जो उस लेन में रहते थे बेहद त्रस्त थे। उस दिन क्रिकेट ग्राउंड में पूरे

गोरखपुर के डॉक्टर उमड़ गए थे। क्रिकेट का खेल चल रहा था माईक पर कमेंट्री की जा रही थी उसके पश्चात् भोजन यानि सुबह 10.00 बजे से शाम को 05.00 बजे तक उस सड़क से कोई दूसरी गाड़ी निकल नहीं सकती है। डॉक्टरों से ज्यादा महान उनके ड्राइवर होते हैं जो अपने आपको डॉक्टर से कम नहीं समझते, मजाल है उनसे आप कुछ कह दें। वे आपको ऐसी नजरों से देखेंगे कि आपको लगेगा कि कह रहे हों बच्चे अगली बार आना डॉक्टर साहब के पास, पाँच घंटे तुम्हारे को इंतजार नहीं कराया तो मैं फलाने डॉक्टर का ड्राइवर नहीं। डॉक्टरी का पेशा यहाँ इतना ज्यादा लोकप्रिय है और धनार्जन का एक महत्वपूर्ण जरिया है जिससे आकर्षित होकर सरकारी सेवाओं वाले डॉक्टर भी सेवानिवृत्ति के बाद अपनी डिस्पेंसरी खोलकर बैठ जाते हैं और अच्छी-खासी कमाई कर लेते हैं। ऐसे गोरखपुर के नवग्रहनुमा डॉक्टरों को श्रद्धा और भय के निहित भावों से दूर से ही प्रणाम करता हूँ क्योंकि पिताजी ने बचपन से ही सिखाया था कि अगर जिंदगी में तनाव से दूर रहना है तो कभी भी कचहरी, पुलिस थाने और अस्पताल की सीढ़ी मत चढ़ना।

उप महानिरीक्षक सह
मुख्य सुरक्षा आयुक्त
रेलवे सुरक्षा बल
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 9794840701

जला अस्थियाँ बारी-बारी
चिटकाई जिनमें चिंगारी,
जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर
लिए बिना गर्दन का मोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

- रामधारी सिंह 'दिनकर'

निर्णय के द्वंद्व

 ज़हीर कुरेशी

सरंडी निवासी उमा बाई ध्रुवे के इकलौते बेटे मुरमू की नक्सलियों ने इसलिए हत्या कर दी थी, क्योंकि उन्हें मुरमू पर उनकी मुखबिरी का शक था। जब नक्सली कमांडर और डी सी ए सदस्य पलाश सोनसाय को पक्का विश्वास हो गया कि मुरमू की मुखबिरी के कारण ही गलाकाट कांड हुआ है तो मुरमू पलाश की हिट लिस्ट में सबसे ऊपर आ गया। पलाश के नक्सली गैंग ने तय किया कि मुरमू को उसके कर्मों की सज़ा सरंडी हाट में नक्सली अदालत लगा कर दी जाए।

उस समय तक, मुरमू की पत्नी कुन्ती और माँ उमा बाई को पता भी नहीं था कि मुरमू पुलिस के लिए मुखबिरी करता है। वे दोनों केवल इतना भर जानती थीं कि मुरमू वन-माफिया की किसी निजी कम्पनी में गाइड है और जंगल के चप्पे-चप्पे तक वन-माफिया के लोगों को ले जाता है। उसके एवज़ हर महीने कम्पनी उसे पाँच-पाँच सौ के चालीस नोट देती है। पैसों वाली बात भी केवल कुन्ती जानती थी। उमा बाई जब भी बीमार पति की दवाईयों के लिए बेटे से पैसे माँगती थी, थोड़ी हील-हुज्जत के बाद उसे मिल जाते थे।

उस दिन, सरंडी गाँव की साप्ताहिक हाट थी। मुनादी पिटने लगी कि दोपहर ठीक चार बजे पलाश ग्रुप की नक्सल अदालत लगेगी जिसमें नक्सलियों की मुखबिरी करने वाले जयचन्दों को सबके सामने कठोर सज़ा दी जाएगी। मुनादी पिटने तक भी कुन्ती और उमा बाई को कल्पना नहीं थी कि आज उनके परिवार पर बिजली गिरने वाली है। इस कारण भी उस दिन उनका परिवार घर से बाहर नहीं निकला।

लगभग पाँच बजे हलालु दौड़ता हुआ आया और उसने भौजी कुन्ती को नक्सली ग्रुप द्वारा मुरमू को फाँसी पर टाँग कर पुलिस मुखबिरी की सज़ा देने की बुरी खबर सुनाई। कुन्ती और उमा बाई को हलालु की बात पर विश्वास नहीं हुआ। दोनों दौड़ती हुई हाट में खड़े नीम के उस वृक्ष तक पहुँचीं-

सबके सामने जिस पर टाँग कर नक्सलियों ने आधा घंटे पहले मुरमू को फाँसी की सज़ा दी थी। सज़ा देने के बाद नक्सली अथाह जंगल में गायब हो गए।

हाट में ही, रोती-बिलखती उमा बाई और अन्य दो बुजुर्ग औरतों ने कुन्ती की चूड़ियाँ तोड़ कर परोक्ष रूप से उसे विधवा घोषित कर दिया। कुन्ती समझ नहीं पा रही थी कि नक्सलियों द्वारा मनमाना फैसला लेकर एक क्षण में कैसे उसका संसार नष्ट कर दिया गया। यह कैसी अदालत थी, जिसमें न कोई बहस, न वकील! केवल संदेह के आधार पर मुरमू जैसे गबरू जवान की सार्वजनिक हत्या कर दी गई थी।

नक्सलियों द्वारा दण्ड दिए जाने के कारण, हलालु और उसके दो-तीन दोस्तों के अलावा सरंडी गाँव में किसी ने ध्रुवे परिवार का साथ नहीं दिया। बीमार पिता स्वयं उमा बाई के भरोसे था। पूरा परिवार ही मुरमू की कमाई पर पल रहा था। नक्सल ग्रुप के भय के बीच कुन्ती और उमा बाई को समझ नहीं आ रहा था कि अब आगे का जीवन कैसे चलेगा?

छत्तीसगढ़ के समाचार पत्रों में तीसरे पेज पर खबर छपने के बाद, सबसे पहले मुख्य विपक्षी दल के तीन-चार नेता सरंडी आए, जो ध्रुवे परिवार को शब्दों द्वारा सहानुभूति एवं आश्वासन के अलावा नकद पाँच हजार रुपए भी दे कर गए। उसके एक दिन बाद पुलिस के आला अफसरों के साथ सत्ता पक्ष के एक मंत्री मरकाम और उनके समर्थकों ने कुन्ती और उमा बाई से आकर भेंट की। सहायता के रूप में, मंत्री ने कुन्ती को एक लाख रुपए का चेक सौंपा। उमा बाई के यह कहने पर कि नक्सलियों द्वारा हमारी जान को खतरा है, मंत्री ने तुरंत आदेश दिया कि ध्रुवे परिवार को कोयलीबेड़ा गाँव में बसाया जाए। कुन्ती के यह बताने पर कि वह बारहवीं बोर्ड की परीक्षा पास है, मंत्री ने मौखिक रूप से अधीनस्थों को उसकी अनुकंपा नियुक्ति के आदेश भी दिए।

आनन-फानन ध्रुवे परिवार सरंडी छोड़ कर कोयलीबेड़ा गाँव जा बसा। जहाँ उसे शासन ने सरकारी ज़मीन पर झोंपड़ी बनाने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की। कोयलीबेड़ा की उसी सरकारी जमीन पर ध्रुवे परिवार की तरह आठ-दस झोंपड़ियाँ और बनीं थीं- जिनके परिवार के किसी न किसी सदस्य की नक्सलियों ने कोई न कोई आरोप लगा कर हत्या कर दी थी।

छत्तीसगढ़ शासन द्वारा उन दस झोंपड़ियों की सुरक्षा के लिए यूँ तो तीन आरक्षकों को तैनात किया गया था, लेकिन, बारी-बारी से आता कोई एक आरक्षक ही था। जो प्रायः थोड़े-बहुत प्रश्न, थोड़ी-बहुत जानकारीयाँ जुटा कर एक-दो दिन के लिए गायब हो जाता था।

आजीविका चलाने के लिए कुन्ती ही थोड़े हाथ-पैर मारती थी। लेकिन, रस के लोभी भँवरे आजीविका के नाम पर उसका दूसरी तरह से उपयोग करना चाहते थे। यह बात उमा बाई भी जानती थी। अपनी कड़क छवि के कारण, अभी तक कुन्ती अपनी इज्जत बचाए हुई थी। लेकिन, उसे दैनिक मजदूरी का काम कभी-कभार ही मिल पाता था।

उधर रायपुर जाकर, कुन्ती ने अपनी हायर सेकेंडरी की अंक सूची लगाते हुए पुलिस विभाग में आरक्षक के पद की अनुकंपा नियुक्ति के लिए आवेदन कर दिया। वहाँ भी उसे जल्द ही नियुक्ति का आश्वासन मिला। लेकिन, जमीन पर कुछ भी उतर कर नहीं आया। दिन गुज़रते रहे और इस प्रकार दो वर्ष बीत गए।

कोयलीबेड़ा में एक दिन अपनी सहेली की झोंपड़ी में कुन्ती ने दैनिक अखबार में छत्तीसगढ़ के ग्यारह नक्सलियों के सरेंडर की खबर पढ़ी। खबर के ग्यारह नक्सलियों में एक नाम कमांडर पलाश सोनसाय का भी था- जिसने ढाई वर्ष पहले उसका सुहाग उससे छीन लिया था। उस रात झोंपड़ी में कुन्ती सास के सामने मुरमू को याद करके खूब रोई। पहली बार बहू के खुल कर रोने पर बीमार ससुर और उमा बाई की भी आँखें भीग गईं।

इधर अनुकम्पा नियुक्ति की प्रतीक्षा में, कुन्ती ध्रुवे के सब्र का बाँध टूट रहा था। लगभग एक महीने बाद, उसने सहेली के घर आए दैनिक अखबार में ही पढ़ा-छत्तीसगढ़ शासन ने समर्पण करने वाले चार नक्सलियों को उनकी योग्यता के अनुसार नौकरियाँ दीं। पलाश सोनसाय को सब इंस्पेक्टर पुलिस, काँकर बनाया गया। समाचार पढ़ कर, कुन्ती के सीने पर साँप लोट गया।

अगले दिन, उसने अपनी सास उमा बाई सहित रायपुर जाने का निश्चय किया। रायपुर पहुँच कर सास-बहू ने सीधे मंत्रालय में डेरा डाला- जहाँ कुन्ती ने मंत्री मरकाम से मिलना तय किया। लिखत-पढ़त की सारी कार्यवाही करने के बाद, आगंतुक कक्ष में कुन्ती और उमा बुलावे की प्रतीक्षा करने लगीं। बड़ी मुश्किल से कुन्ती और उमा को साढ़े चार बजे दस मिनट मिनिस्टर के सामने अपनी बात रखने का अवसर मिला। चैम्बर में घुसते ही मिनिस्टर को तीन वर्ष पहले सरंडी ग्राम में हुए हत्या कांड और ध्रुवे परिवार को मरकाम द्वारा दिए गए आश्वासनों की याद दिलाई गई। कुन्ती बोली, सर, छत्तीसगढ़ पुलिस के मुखबिर के रूप में जिस नक्सल-ग्रुप द्वारा मेरे पति की हत्या की गई, उसको छत्तीसगढ़ शासन इनाम-इकराम बाँट रहा है! तल्लख लहजे में मरकाम ने पूछा, क्या मतलब? आग सीने में दबाए कुन्ती बोली, दो माह पहले मेरे पति के हत्यारे नक्सली पलाश सोनसाय ने आपकी सरकार के सामने सरेंडर किया और उसके दो महीने बाद आप लोगों ने उसे सब इंस्पेक्टर पुलिस बना दिया! मेरे पति की जान क्या इतनी सस्ती थी। ढाई-तीन वर्ष बाद भी उसकी विधवा को अनुकम्पा नियुक्ति नहीं मिली। क्या यही है आपकी सरकार का इंसफ!

चुनाव सिर पर आते हुए देख मुकुन्द मरकाम लाउड नहीं हुआ, उसने पूछा, रिमाइंडर लाई हो? कुन्ती ने चुपचाप एप्लीकेशन दे दी। मरकाम बोला, एक महीने के अंदर तुम्हारे अनुकंपा नियुक्ति के प्रकरण पर फैसला हो जाएगा। अब तुम्हें रायपुर आना नहीं पड़ेगा। तुम्हारा नियुक्ति पत्र तुम्हारे घर कोयलीबेड़ा पहुँच जाएगा।

मंत्री की ओर से पूरी तरह आश्वस्त हो कर सास-बहू मरकाम के चैम्बर से बाहर निकल आए। उस समय शाम के साढ़े पाँच बजे थे। बहू द्वारा कोयलीबेड़ा लौटने के प्रश्न पर उमा बाई ने कहा, मोहल्ला रावतपारा में मेरी बहिन की बेटी रहती है। चल कर देख लेते हैं। अगर मिल गई तो कल लौटेंगे, वरना रात में ही चलना पड़ेगा।

संयोग की बात, जब कुन्ती और उमा बाई सरस्वती के घर पहुँचे, तो वह ऑफिस से लौटी ही थी। बरसों बाद, अपने द्वारे मौसी और उसकी बहू को देख कर प्रसन्न हो गई। सरस्वती, उसके बेटे और बेटी ने जिस श्रद्धा-भाव से दोनों का स्वागत किया, एक प्रकार से उनका रायपुर रात रुकना तय हो गया। उमा बाई ने सरस्वती के पति के विषय में पूछा तो पता चला, आज ही भोपाल गए हैं।

सरस्वती को नक्सलियों द्वारा मुरमू की नृशंस हत्या का पता था। जवान कुन्ती और उसके रूप को देख कर सरस्वती बहुत विचलित हुई। रात के भोजन के बाद, सोने से पहले बातों के पुलिन्दे खुले। कुन्ती ने बताया कि वह मंत्री मरकाम से मिलने क्यों आई थी। सोने से पहले, सरस्वती ने कुन्ती को सलाह दी, लौटने से पहले, कल आप लोग नेता विपक्ष भूदेव सिंह से और मिल लो। हाथ वाले दल का ऑफिस मेरे ऑफिस के सामने ही है। आप लोग मेरे साथ चलना। भूदेव समय के पाबंद हैं- ठीक ग्यारह बजे आ जाते हैं। एक बजे तक लोगों से मिलते हैं। जनता की समस्याएं सुनते हैं, सुलझाते हैं। अगर भूदेव ने फोन कर दिया तो आपका अनुकंपा नियुक्ति वाला काम प्राथमिकता के आधार पर तुरंत हो जाएगा।

अपना सामान ले कर श्री व्हीलर में कुन्ती और उमा दस बजे सरस्वती के साथ ही घर से बाहर निकले। सरस्वती अपने ऑफिस चली गई, ये लोग हाथ वाले दल के प्रादेशिक कार्यालय में प्रवेश कर गए।

भूदेव जी से मिलने के लिए कुन्ती द्वारा विधिवत् अपने और सास के नाम की पर्ची बनवाई गई और दोनों प्रतीक्षालय में बैठ कर अपने नंबर की प्रतीक्षा करने लगे। लगभग साढ़े

ग्यारह बजे कुन्ती का नाम पुकारा गया, सास-बहू दोनों ने भूदेव के चैम्बर में प्रवेश किया। नमस्कार-वमस्कार के बाद कुन्ती ने प्रभावशाली तरीके से संक्षेप में भूदेव जी को अपनी करुण गाथा सुनाई। ढाई साल से उसकी अनुकंपा नियुक्ति लटकने और अपराधी नक्सली पलाश सोनसाय को सरेंडर के दो माह के अंदर सब इंस्पेक्टर पुलिस की नियुक्ति ऑफिस मिलने को भी कुन्ती ने विशेष रूप से रेखांकित किया।

भूदेव ने कुन्ती से एप्लीकेशन माँगी तो उसने तुरंत दे दी। भूदेव ने कहा, मैं नियुक्ति के विषय में बोल दूँगा। फिर हँस कर उमा बाई से पूछने लगे, अम्मा, वोट किसे देती हो? उमा बोलीं, हाथ वाला बटन दबाती हूँ, महाराज!

कुन्ती और उमा बाई उठने लगीं तो भूदेव बोले, आप हायर सेकेंडरी पास हैं न? कुन्ती ने कहा, जी हाँ। भूदेव बोले, विधान सभा चुनाव आने वाले हैं, मेरे पास एक समन्वयक का पद और खाली है। आपकी परिस्थिति को देखते हुए मैं समन्वयक का वह अंतिम पद आपको दे सकता हूँ। कुन्ती ने संदेह करते हुए पूछा, तो क्या वह पद चुनाव बाद समाप्त हो जाएगा?

भूदेव- नहीं-नहीं। पार्टी ऑफिस में पक्की नौकरी है। रायपुर से कहीं ट्रांसफर भी नहीं होगा।

कुन्ती ने हिम्मत करके पूछ लिया, सैलेरी कितनी मिलेगी?

भूदेव- बीस हजार मासिक। रहने के लिए वन बीएचके फ्लैट। रायपुर से बाहर जाने पर नियमानुसार टीए-डीए। आप सोच लीजिए। पंद्रह बीस दिन में मेरे ऑफिस के लैंड लाइन नंबर पर मुझे बता भी दीजिए, ताकि मैं अग्रिम कार्यवाही कर सकूँ और हाँ, मैं आपके विषय में मंत्रालय में बोल दूँगा।

नेता प्रतिपक्ष भूदेव सिंह के चैम्बर से निकलते हुए कुन्ती अपने आप को बहुत आश्वस्त महसूस कर रही थी। लेकिन, उमा बाई सरकारी नौकरी के ही पक्ष में थी।

कोयलीबेड़ा पहुँच कर कुन्ती ने नए सिरे से समन्वयक और आरक्षक की नौकरियों की तुलना की, फिर एक क्षण को उसके मन में इस प्रश्न ने भी सिर उठाया, भूदेव सिंह मुझ पर इतना मेहरबान क्यों हो रहा है?

रायपुर से लौट कर एक सप्ताह और बीत गया। कुन्ती ध्रुवे के नाम से सोमवार को मंत्रालय की ओर से एक स्पीड पोस्ट लिफाफा प्राप्त हुआ। उमा बाई की उपस्थिति में धड़कते दिल से कुन्ती ने वह लिफाफा खोला— जो उसके नाम का नियुक्ति पत्र था। लेकिन, यह क्या—कुन्ती ध्रुवे को आरक्षक के स्थान पर भृत्य पद के लिए नियुक्ति दी गई थी, थाना कोयलीबेड़ा में। नियुक्ति पत्र से कुन्ती बहुत आहत हुई। सास बोली, कोयलीबेड़ा में ही नौकरी से हमें कहीं और नहीं जाना पड़ेगा, बहू! बीमार ससुर ने भी सासू के सुर में सुर मिलाया। निर्णय कुन्ती को करना था।

कुन्ती ने हिसाब लगाया— आज की तारीख में भृत्य को भी पन्द्रह हजार मासिक मिलेंगे। कोयलीबेड़ा में बैठ कर पन्द्रह हजार रुपए कमाना भी कोई कम नहीं! तय हुआ— मंगलवार को ही थाने जा कर ड्यूटी ज्वाइन कर ली जाए।

मंगलवार को नियुक्ति पत्र और ज्वाइनिंग एप्लीकेशन बैग में रख कर कुन्ती दस बजे कोयलीबेड़ा थाने पहुँची। थाने में सिर्फ एक-दो सिपाही दिखाई दे रहे थे। कुन्ती थानेदार साहब के चैम्बर तक पहुँची। लेकिन, यह क्या— सब इंस्पेक्टर पुलिस पदनाम के ऊपर नाम लिखा था पलाश सोनसाय का। नाम पढ़ कर कुन्ती का सिर घूम गया— मेरे मरद का हत्यारा! कुन्ती ने सामने खड़े सिपाही से पूछा, पलाश सोनसाय ने कब ज्वाइन किया?

सिपाही बोला, एक हफ्ते पहले काँकर से ट्रांसफर हो कर आए हैं।

उत्तर सुन कर कुन्ती थाने में एक क्षण भी नहीं रुक पाई, लौट कर घर आ गई।

इतनी जल्दी घर लौट आने पर उमा बाई ने पूछा, ज्वाइन कर आई?

कुन्ती ने दृढ़ता के साथ कहा, नहीं! और ज्वाइन करूँगी भी नहीं! मेरे धनी के हत्यारे के अधीन मैं काम नहीं कर सकती!

ससुर बोले, तो क्या पक्की सरकारी नौकरी छोड़ दोगी? छोड़ूँगी क्यों, आरक्षक की योग्यता है, आरक्षक की पदस्थापना के लिए लड़ती रहूँगी। तब तक, मैं रायपुर में हाथ वाली पार्टी के प्रादेशिक कार्यालय में समन्वयक की नौकरी कर लेती हूँ।

उमा बाई ने पूछा— तो क्या हमें कोयलीबेड़ा छोड़ना पड़ेगा?

कुन्ती ने शान्त स्वर में कहा, अगर हम सरंडी गांव छोड़ कर कोयलीबेड़ा बस सकते हैं तो कोयलीबेड़ा छोड़ कर राजधानी रायपुर बसने में क्या बुराई है? रायपुर में रह कर मैं अपनी आरक्षक पद की लड़ाई आसानी से लड़ सकती हूँ। रायपुर में ससुर जी का भी माकूल इलाज हो सकेगा।

माकूल इलाज की बात सुन कर ससुर जी ने रायपुर के लिए हामी भर दी। सासू ने भी सोचा— दुश्मन के साथ रोज आठ घंटे काम करना कुन्ती के प्रति अन्याय होता!

मंगलवार को ही हिम्मत करके सुबह ठीक साढ़े ग्यारह बजे कुन्ती ने लैंडलाइन नंबर पर नेता प्रतिपक्ष भूदेव सिंह को कॉल लगा दिया। कॉल पी.ए. ने उठाया, फारवर्ड होकर भूदेव जी तक पहुँचा। कुन्ती ने पहले प्रणाम कहा, फिर अपना परिचय देते हुए बोली, सर, कल मैं आपके कार्यालय में समन्वयक के पद पर ज्वाइन करने रायपुर आ रही हूँ।

भूदेव सिंह हँस कर बोले, आ जाओ, बेटी! पद आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

108, त्रिलोचन टावर, संगम सिनेमा के सामने,
गुरुबक्श की तलैया,
भोपाल-462001 (मध्य प्रदेश)
संपर्क: 09425790565

ईमेल—poetzaheerqureshi@gmail.com

जीवन उत्सव



सुनील कुमार

‘क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेवरूपम रमणीयतायाः

अर्थात् क्षण-क्षण में जो नवीन होता रहता है, वही सौंदर्य है। प्रकृति के कण-कण में सौंदर्य विद्यमान है और पल-पल वह बदलता भी रहता है। सूर्योदय सृष्टि के प्रथम दिवस से ही हो रहा है, परंतु हर सूर्योदय हमें नया लगता है। अन्य दृश्य, पर्वत-नदियाँ, वृक्ष, वनस्पतियाँ सब ही तो क्षण-क्षण बदलते रहते हैं और हमारे मन को आनंदित कर देते हैं। नवीनता के प्रति मानव मन हमेशा से आकर्षित होता रहा है। प्रकृति के नव-नव रूपों के साथ-साथ व्यक्ति जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी नवीनता की चाह करता है। खान-पान, वेश-भूषा या अन्य व्यवहार की वस्तुओं में एक जैसी दिनचर्या और एकरसता के चलते व्यक्ति ऊब जाता है, बोर होने लगता है। तभी तो वह नवीनता की तलाश करने लगता है। प्रकृति में होने वाले परिवर्तन उसे दिशाधारा प्रदान करने लगते हैं। सरसों के खिले हुए पीले-पीले फूल, पलाश की अंगड़ाइयाँ लेती कलियाँ, चहचहाते पक्षी, नाचती तितलियाँ, गुनगुनाते भौंरे, आमों में लगे बौर और उनकी ओट में बैठी कुहकती कोयल की मीठी तान मन को आह्लादित करने लगते हैं।

सनातन हिंदू-समाज पर ऋतु परिवर्तन का कितना आनंदकारी और उत्सवमयी परिवर्तन देखने को मिलता है- पर्व और उत्सव के रूप में। प्रकृति में होने वाले उस परिवर्तन का ही असर है कि उसका तन ही नहीं मन भी पर्व और उत्सव मनाने को उत्सुक होने लगता है। शिशिर ऋतु की ठिठुरन से मुक्त होकर बसंत ऋतु के आगमन-उत्सव की तैयारी प्रारंभ हो जाती है। बसंत तो अपने साथ उल्लास, उमंग, नवजीवन, नवचेतना आदि लेकर आता है। तभी तो सारे देश में, घर-घर में मकर-संक्रांति, सरस्वती-पूजा और बसंतोत्सव की धूम देखने को मिलती है। हमारा भारत देश तो वैसे भी उत्सव प्रियता का देश है, जहाँ तरह-तरह के पर्व और उत्सव मनाने के अपने ढंग और पहचान हैं। उत्सवप्रियता और पर्व जीवंतता हमारे भारत की स्वाभाविक अस्मिता है। यही कारण है कि हमारे पूर्वजों ने भारतीय मानस और स्वभाव के अनुरूप धार्मिक और सामाजिक

विशेष दिवसों पर विविध प्रकार के उत्सवों की आयोजना पहले से ही कर रखी है।

सही मायने में यदि अनुभव करें तो पता चलता है कि व्यक्ति-स्तर पर समस्त हिंदू-समाज के संस्कार ही एक उत्सव है। सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर समस्त त्योहार और उत्सव हमारे जीवन के पर्व साबित होते हैं। इन पर्व और त्योहारों में भाग लेकर जो जीवन-आनंद हमें प्राप्त होता है वही भारतीय अस्मिता की पहचान ही नहीं हिंदुत्व का सार भी है। यह अपने-आप में सनातनी परंपरा की मिसाल है। हमारे देश में धार्मिक, प्राकृतिक, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय भावनाओं को समृद्ध करने वाले विविध उत्सव और पर्व मनाये जाते हैं। इन उत्सवों और पर्वों के माध्यम से हम दूसरों के साथ सामाजिक-सहकारिक रूप में शामिल होकर जो आनंद प्राप्त करते हैं उससे ही हमारा संस्कार पुष्ट और समुन्नत होता है। व्यक्तिगत स्तर से लेकर सामाजिक-स्तर तक आनंदमय संस्कार का सुदृढ़ बहुरंगी पट सृजित होता चला जाता है।

हमारे देश की प्रकृति का स्वरूप ही विविधता पूर्ण है। यहाँ के जीवन-इतिहास, जाति-व्यवस्था, उपासना और जीवन यापन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता की अखंड धारा अपने-आप में अदभुत है। इन विविधताओं के चलते ही अनेक उत्सव और पर्व रूढ़ होते जा रहे हैं। हालांकि हमारे पूर्वजों ने इन पर्व और उत्सवों को नये-नये संदर्भों से प्रवर्तित और पुनरुज्जीवित बनाये रखने की भरपूर चेष्टा की थी। तभी तो हमारी सामाजिक अस्मिता की पोषक हमारे ये पर्व, त्योहार उत्सवपूर्ण बने हुए हैं। उसके मनाने का भाव नष्ट नहीं हुआ है। उसके प्रति हमारे उत्साह में कमी नहीं आई है। जीवन की आपाधापी, एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ और व्यस्त जीवन-शैली के चलते कुछ उदासीनता अवश्य परिलक्षित होती है। फिर भी पर्व-उत्सव मनाने का भाव आज भी विद्यमान है जो जड़ से कभी भी नष्ट नहीं हो सकता। तभी तो बसंत ऋतु के पर्व और उत्सव एक संपूर्ण राग की सृष्टि करता है। जीवन को निबद्ध करता है, उल्लास और उमंग भरता है। प्रकृति में होने वाले परिवर्तन के

चलते जीवन प्रकाशित होने लगता है। मानव-जीवन को तम से प्रकाश की ओर संक्रमण करने वाला स्फूर्ति-दायक बनता है।

संक्रमण, परिवर्तन, अविरल अथक प्रवाह की धारा ही तो हमारा जीवन पर्व है, जिसे हम उत्सव के रूप में लेते हैं और जीते भी हैं। यही ग्रहणशीलता सृजन है, जीवन-संगीत है और शाश्वत सौंदर्य है। बसंतोत्सव जो जीवन दृष्टि का पर्व है जो हमें गतिमान और जीवंतता प्रदान करता है। इसी बसंतोत्सव पर माँ सरस्वती-नीर-क्षीर-विवेक रूपी प्रकाश के साथ तीनों आदि शक्तियाँ-महालक्ष्मी, महाकाली, महासरस्वती के रूप में एकाकार होती हैं। मानव जीवन आत्म-विस्मृति रूपी अंधकार से आत्म-स्मृति रूपी प्रकाश की ओर अग्रसरित होता है। इसी का परिणाम है कि जीवन चैतन्य बनता चला जाता है।

पश्चिमी सभ्यता का अनुगमन और अनुकरण करते हुए हम सृजनकर्ता और उत्पादक न होकर आज मात्र उपभोक्ता बन चुके हैं। हमारे जीवन में उल्लास भाव अत्यंत क्षीण होता जा रहा है। जीवन एक बोझ और उबाऊ बनता जा रहा है। हमारे जीवन में अब ऋतुभाव, पर्व मनाने का भाव उत्सव भाव शेष नहीं रह जा रहा है। मात्र हम कैलेंडर बदलते जा रहे हैं। हम व्यक्तिगत

अहंकार, दर्प, हानि-लाभ की सीमा में इस कदर जकड़े हुए हैं कि जीवन-चेतना और उमंग उल्लास के पल को सहेजना ही भूल गए हैं। इन पर्व और त्योहारों पर जब हम दूसरों से मिलते हैं तब हम अपने अंधकार को, निराशा को, अकर्मण्यता को भेदकर उससे बाहर निकलते हैं। जब तक हमारा 'मैं' 'हम' में विलीन नहीं होता, हमारा जीवन उत्सवमय नहीं बन सकता। तब हम पर्व और उत्सव मनाने ही नहीं लगते बल्कि सही मायने में जीवन को जीने लगते हैं। पर्व और त्योहार का मतलब ही है-सबका एक साथ कहीं किसी एक मनोभाव से, लक्ष्य और निष्ठा से एकत्रित होना। विराट प्रकृति के अनुरूप ऋतुराज के समान जब मेरा 'मैं' समस्त परिवार, विराट समाज और विस्तृत राष्ट्र के साथ 'हम' बनकर एकात्म, एकरूप अनुभव करता है तभी वह बनता है-जीवन पर्व, जीवन उत्सव।

सेवानिवृत्त राजभाषा अधिकारी

241/सी, सरस्वतीपुर

गोरखपुर-273014 (उ.प्र.)

संपर्क: 9026755005



MINISTRY OF
AYUSH



Help us to
help you

my
GOV
मेरी सरकार

COVID-19 से बचाव हेतु आयुर्वेद के प्राचीन ज्ञान का इस्तेमाल

रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए प्राकृतिक उपाय

सुबह 10 ग्राम
(1 चम्मच) च्यवनप्राश
का सेवन करें
(मधुमेह रोगियों के लिए
शुगर फ्री च्यवनप्राश)

गोल्डन मिल्क-150
मिलीलीटर गर्म दूध में
आधा चम्मच हल्दी
पाउडर मिला कर पीएं
(दिन में एक या दो बार)

तुलसी, दालचीनी,
काली मिर्च, सूखी अदरक
और मुनक्का से बनी
हर्बल चाय/काढ़ा पीएं
(दिन में एक या दो बार)

असफलता सफलता की जननी



कमलासिनी तिवारी

किसी कार्य में सफलता के लिए आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है। आत्मविश्वास, सकारात्मक दृष्टिकोण, इच्छाशक्ति और क्रियाशीलता ही सफलता का मूल मंत्र है। किसी कार्य का लक्ष्य निर्धारण ही सफलता की कुंजी है। बिना लक्ष्य के मनुष्य या व्यक्ति या यूँ कहें कि आज के युवा वर्ग निस्तेज हैं। जिस प्रकार से नदी का जल निष्काम प्रवाहित होता है और निर्धारित लक्ष्य की ओर बहता रहता है, उसी प्रकार से सफलता के लिए हमें समय बद्धता का भी ध्यान रखना होगा और असफलता से सफलता की ओर अग्रसर होना होगा।

आजकल इन विषयों पर अनेक स्कूलों व संस्थाओं में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर युवा वर्ग के तनाव को दूर किया जा रहा है, जिसमें समय प्रबंधन की सही जानकारी दी जाती है। सही समय प्रबंधन के साथ-साथ यदि कोई युवा परीक्षा देता है या कोई भी युवा किसी भी संस्था में कार्यरत है या कार्यरत होने वाला है उसे तनाव मुक्त रहने से संबंधित सही सुझाव दिये जाते हैं, जिससे वह सफलता प्राप्त करने लिए प्रेरित होता है।

युवा वर्ग में सकारात्मक दृष्टिकोण, आत्मविश्वास और सफल नेतृत्व की भावना को सुदृढ़ करने के लिए अनेक संस्थाएं निरंतर कार्यरत हैं। जैसे स्काउटिंग, एनसीसी, एनएसएस और अनेक एनजीओ, जिनमें बच्चों और युवाओं को समयबद्धता के साथ-साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। ये अपने कार्यों की सफलता की ओर अग्रसर होते हैं। कहते हैं कि असफलताओं की चिंता मत करो, असफलताएं जीवन का सौंदर्य हैं। कोई असफलता ऐसी नहीं है जिसे सफलता में न बदला जा सके।

हमें असफलता को नकारात्मक तौर पर नहीं, बल्कि इसे सफलता की सीढ़ी के रूप में लेना चाहिए। अमेरिका के महान राष्ट्रपतियों में से एक अब्राहम लिंकन ने पचास बार असफलताओं के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति के पद को सुशोभित किया। अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि असफलता

सफलता की जननी है।

युवा ही देश के भविष्य हैं। इन्हें जीवन में अनेक चुनौतियों का सामना करना है। शिक्षा व्यवस्था और घर का संस्कार ही हमेशा युवाओं को सन्मार्ग पर चलने व सफलता प्राप्ति की ओर प्रेरित करता है।

लोगों की दृष्टि में सफलता का ही मूल्य अधिक है। जो सफल हो गया उसी की प्रशंसा की जाती है। देखने वाले यह नहीं देखते कि सफलता नीतिपूर्वक प्राप्त की गई है या अनीतिपूर्वक।

एक व्यक्ति धन कमाने में कितना झूठ बोलता है कितनी मिलावट करता है, कितने गरीबों का पेट काटता है, यह कोई नहीं देखता। चूंकि उसने आज पैसा इकट्ठा कर लिया है और धनवान बन गया, इसलिए लोग उसकी सफलता पर सिर झुकाते हुए उसके कार्यों की प्रशंसा करते हैं। समाज की यही अंधी प्रवृत्ति आगे चलकर बुराइयों को जन्म देती है, अनीति की तरफ बढ़ने के लिए युवा वर्ग को प्रोत्साहित करती है और इससे अनैतिक तत्वों की अभिवृद्धि, विकास और प्रसार होता है।

मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि मन के हारे हार है मन के जीते जीत। यही असफलता को सफलता में बदलने हेतु सार्थक है। क्योंकि आप जितने ही नकारात्मक होंगे, असफलता की ओर ध्यान देंगे, उतना ही तनावग्रस्त होंगे। दूसरी ओर जितना ही आप सफलता की ओर अग्रसर होते हैं आपकी विचारधारा सकारात्मक कार्यों को करने के लिए प्रेरित होती है। उतना ही हम एक्टिव एनर्जी से भरपूर होते हैं।

शारीरिक अस्वस्थता और मानसिक क्लेश के बाद मनुष्य की महत्वपूर्ण समस्या अर्थ संबंधी होती है। व्यक्ति सदैव अधिक से अधिक धन कमाना चाहता है। किंतु सन्मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति कम से कम इतना तो चाहता ही है कि उसकी पारिवारिक और सामाजिक आवश्यकताएँ पूरी हो सकें। मनुष्य को यदि वास्तव में आर्थिक और सामाजिक रूप से प्रगति करनी है तो उसे आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाते हुए कामचोरी और आलस्य को त्याग कर, ईमानदारी और सत्कर्म का रास्ता

अपनाकर धैर्यपूर्वक और संयम से आगे बढ़ना है, तो निश्चय ही अपने इच्छानुसार कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकता है।

आज लोग दूसरों के दोष देखने के लिए ज्यादा अग्रसर होते हैं। यदि व्यक्ति अपने दोष को सुधार ले, आत्मचिंतन करे, उसे सामने वाले की अच्छाइयां दिखें तो उसे किसी भी कार्य में सफल होने से रोका नहीं जा सकेगा।

आपको बताते चलते हैं कि सफलता कभी शार्ट कट से नहीं मिलती। सफलता के लिए अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जबकि जीवन में कई चुनौतियां ऐसी होती हैं जो हमें आगे बढ़ने नहीं देती। किंतु, यदि उन चुनौतियों को गुणवत्तापूर्वक, धैर्यपूर्वक कर्तव्यपरायणता के साथ

विशिष्टतापूर्ण ढंग से दूर किया जाये तो सफलता की सीढ़ियां चढ़ी जा सकती हैं।

वास्तव में, यदि समाज और दूसरों को बदलने के बजाए स्वयं में परिवर्तन लाया जाए तो एक असफल व्यक्ति को सफलता हासिल करने से कोई रोक नहीं सकता। वह अपने अनुभवों और अपेक्षाओं को लेकर चलते हुए लक्ष्य प्राप्त कर सफलता हासिल कर सकता है।

राजभाषा अधिकारी
निर्माण संगठन
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 9838002062

चिकित्सा विभाग, पूर्वोत्तर रेलवे कोरोना वायरस (COVID19)

कोरोना वायरस एक संक्रामक वायरस है यह मनुष्य से मनुष्य में फैलता है एवं श्वास संबंधी बीमारी से होती है।

कोरोना वायरस के लक्षण

बुखार, सर दर्द, बदन दर्द, सूखी खांसी, जुकाम, सीने में जकड़न एवं सांस लेने में तकलीफ।

संक्रमण अवधि काल

8 से 14 दिन व्यक्ति में लक्षण न दिखाई देने की अवधि।

फैलने का माध्यम

- कोरोना वायरस संक्रमित व्यक्ति द्वारा दूसरे अन्य व्यक्तियों को फैलता है।
- हवा में खांसने एवं छींकने से।
- व्यक्तियों से छूने एवं हाथ मिलाने से।
- वायरस वाली सतह को छूने के बाद बिना धोये हाथों द्वारा अपने मुँह, नाक एवं आंखों को छूने से

कोरोना वायरस से बचाव

- हाथों को साबुन अथवा अल्कोहल बेस हैंड सेनीटाइजर से धोयें।
- खांसते एवं छींकते समय नाक पर टिशू पेपर अथवा रूमाल का उपयोग करें।
- सर्दी एवं फ्लू के लक्षण वाले व्यक्तियों से दूरी बनाये रखें।
- रोग लक्षण वाले मरीजों को 14 दिनों तक अलग रखा जाये।

क्या करें -

- खांसते अथवा छींकते समय अपने मुँह एवं नाक को डिस्पोजल टिशू अथवा रूमाल से ढकें।

- हाथों को साबुन एवं पानी से अच्छी तरह से बार-बार धोयें।
- भीड़ वाले स्थानों से बचें।
- इन्फ्लूएंजा से पीड़ित व्यक्तियों को घर में रोकें।
- फ्लू से पीड़ित एवं बीमार व्यक्तियों से तीन फीट की दूरी बनायें।
- पर्याप्त समय सोयें एवं आराम करें।
- अधिक मात्रा में तरल पदार्थ तथा पौष्टिक आहार का सेवन करें।
- इन्फ्लूएंजा से संदेहात्मक पीड़ित चिकित्सक से संपर्क करें।

क्या न करें-

- हाथों से आंख, नाक एवं मुँह को न छूयें।
- किसिंग, हाथ मिलाने एवं गले लगने वाले कार्य न करें।
- सार्वजनिक स्थानों पर न थूकें।
- बिना चिकित्सीय परामर्श के दवाई न लें।
- भीड़भाड़ वाली जगह पर न जायें।
- खुले स्थानों पर उपयोग की गयी नेपकीन अथवा टिशू पेपर न फेंकें।
- लोगों द्वारा छूए गये स्थानों जैसे रेलिंग एवं दरवाजे को छूने से बचें।
- सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान न करें। विदेशों से लौटकर आये व्यक्तियों से दूर रहें।

गुनाहगार



कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव

अचानक ही उस छोटे-से कस्बेनुमा पहाड़ी शहर में जैसे भूकंप-सी स्थिति नजर आने लगी थी। चारों तरफ अफरा-तफरी और बेचैनी का माहौल। तमाम बाजार देखते ही देखते धड़ाधड़ बंद हो गये। कुछ उत्साही युवा हाथों में लाठी-डंडे लिये जहाँ-तहाँ भागते दिखाई दे रहे थे। तो पुलिस की गाड़ियाँ सायरन बजाती हुई शहर की सड़कों पर बेतहाशा दौड़ती नजर आ रही थीं।

कुहासे भरी जनवरी की रातों में लोगों की नींद तक ऐसे भयावहता भरे माहौल से उचटने लगी थी। अपने-अपने घरों में बैठे वे लोग शहर में होने वाली हलचल का जायजा ले रहे थे। तीन नकाबपोश लुटेरों के द्वारा शहर से तकरीबन सात-आठ किलोमीटर दूर स्थित एक पेट्रोल पम्प को लूट लेने और किसी की मोटर साइकिल छीनकर फरार हो जाने की घटना से यह सारा बखेड़ा खड़ा हुआ था। पेट्रोल पम्प पर मौजूद व्यक्ति ने लूट की सूचना तत्काल पुलिस स्टेशन को देकर बताया कि अज्ञात लुटेरे किसी की मोटर साइकिल छीनकर शहर की ओर भागे हैं। मोटर साइकिल मालिक बदहवास-सा थाने में बैठा दारोगा से फरियाद कर रहा था। उसने दस दिन पहले ही हुई शादी में उपहार स्वरूप साइकिल ससुराल से पायी थी।

उस पुलिस स्टेशन में कम ही जवानों की तैनाती थी। पुलिस मुख्यालय वहाँ से लगभग पन्द्रह किलोमीटर दूर था। दारोगा ने शहर में तीन लुटेरों के होने की सूचना आला अफसरों को देकर अविलम्ब पुलिस फोर्स रवाना करने का आग्रह किया। थाने में मौजूद सिपाहियों को सड़क पार 'नाकाबंदी' करने का आदेश दिया... संयोगवश शहर के रास्तों से अनजान तीनों लुटेरे नाकाबंदी देखे, तो लूटी हुई मोटरसाइकिल वहीं छोड़कर नजदीकी अंधेरी गली में छिप गये।

लुटेरों को ललकारते हुए सिपाही गली के मुहाने पर पहुँचे। सबसे आगे हवलदार अमरचंद था। लुटेरों में से एक ने पुलिस को खदेड़कर दूर करने के इरादे से गोली चला दी जो सीधी जाकर अमरचंद के सीने में पैबस्त हो गयी। वह तत्क्षण किसी कटे पेड़ की तरह गिरकर वहीं ढेर हो गया। लुटेरे मौक

का लाभ उठाकर जहाँ पलायित हो लिये, वहीं हवलदार का परिवार फूट-फूट कर रोने लगा। पुलिस विभाग में हवलदार अमरचंद की हत्या की सूचना मिलते ही लोगों में हड़कंप मच गया। तब तक पुलिस मुख्यालय से आला अफसर और हथियारबंद जवान वहाँ पर पहुँच चुके थे। शहर के साथ ही लगा एक घना जंगल था जहाँ पर लुटेरों के छिपे होने की उम्मीद थी। उन्हें पकड़ने के लिए पुलिस और उत्साही युवकों ने जंगल का चप्पा-चप्पा छान मारा, किंतु लुटेरों का पता न चल सका।

शहरी क्षेत्र से लगभग सात किलोमीटर की दूरी पर तलहटी में सेब का एक बड़ा सा बाग था। सुखराज उस बाग में सेबों की पैकिंग के लिए लकड़ी की पेटियाँ बना रहा था। हवा से ठंडक बढ़ जाने के कारण उसने नजदीक ही अलाव जला रखा था। तभी उसने देखा कि ठिठुरते हुए तीन लोग आकर जलते अलाव के पास बैठ गये। सुखराज को उनका आना और बिना पूछे-जाँचे बैठ जाना बेहद नागवार लगा।

सुखराज ने उन तीनों पर एक उड़ती-सी नजर डाली, किंतु उनके उड़े-उड़े-से चेहरे देखकर चौंक उठा। यही तीनों वे शातिर लुटेरे तो नहीं, जिन्हें पुलिसकर्मी पिछली रात से ढूँढ रहे हैं। तीनों शक्ल-सूरत से ही मुजरिम लग रहे थे। उनको देखते ही सुखराज के माथे पर पसीने की बूँदें चमकने लगीं। वह एक, वे तीन... उनके पास रिवाल्वर भी है, तीनों आगंतुक हाथ सेंकते हुए कनखियों से उसकी ओर भी नजर डाल देते।

सुखराज की दशा 'काटो तो खून नहीं' जैसी हो गयी थी। तभी उनमें से एक ने पूछा- 'उस्ताद, कुछ खाने को या फिर पीने को बीड़ी मिलेगी?' सुखराज ने अपना खाने वाला डिब्बा चुपचाप उनके आगे जाकर रख दिया। तीनों ही रोटी-सब्जी पर टूट पड़े। खाना खत्म कर लेने के बाद वे फिर आग सेंकने लगे। थोड़ी देर के लिए मौन छाया रहा। तभी एक ने पूछा- 'यहाँ पास में बीड़ी-सिगरेट की कोई दुकान है?'

सुखराज का दिमाग तेजी से चल रहा था। लुटेरों को गिरफ्तार कराने का इससे अच्छा मौका नहीं मिलने वाला था। उसने कहा- 'एक दुकान है उस तरफ आगे, पर थोड़ी दूर कहीं

तो मैं ही ले आता हूँ आप तब तक सेंकिये।’

सेब के बाग के मालिक का घर पास में ही था। उसके यहाँ पर टेलीफोन भी था। सुखराज तेजी से लपकते हुए वहाँ पहुँचा। धौंकनी की तरह चलती सांसें के बीच उसने बाग में लुटेरों के छिपे होने के बारे में बताया। मालिक ने उसे समझाया-‘तुम उन्हें बातों में फंसाये रखो, मैं पुलिस को बताता हूँ।’

कुछ देर बाद ही सुखराज बीड़ी-सिगरेट का बंडल लेकर उन तक जा पहुँचा। सुखराज फिर से डिब्बे बनाने के काम में लग गया। वे तीनों धुआँ उड़ाने में मशगूल हो गये। कुछ ही देर में पुलिस के जवानों, उत्साही युवकों, खोजी कुत्तों ने बाग को घेर ही तो लिया। सादे कपड़ों में मजदूरों के वेश में कुछ पुलिस वाले भी आग तापने लगे। तभी वहाँ पर ध्वनि विस्तार यंत्र से गूँजा ‘अपनी जगह पर से कोई भी न हिले, चारों ओर से पुलिस वालों ने सेब के बाग को घेर लिया है।’

जिस लुटेरे की कमीज में रिवाल्वर थी, उसने स्वेटर और कमीज हल्का-सा हटाकर हाथ डालने की कोशिश की, किंतु उसके पास बैठे सतर्क मजदूर के रूप में मौजूद पुलिसिये ने उसे दबोच लिया। दूसरे लुटेरों को भी पुलिस ने धर दबोचा। तलाशी लेने पर एक लुटेरे के पास से प्वाइंट 32 बोर का रिवाल्वर और कुछ कारतूस बरामद हुए। सब पुलिस ने जब्त कर लिया। बाग के मालिक ने सुखराज की पीठ थपथपाते हुए कहा-‘यह बंदा वाकई हिम्मती है। लुटेरों की गिरफ्तारी कराने के लिए इसे ईनाम मिलना चाहिए।’

‘जरूर! क्यों नहीं? मैं सरकार से सिफारिश करूँगा।’- आला अफसर ने सुखराज की पीठ ठोंकते हुए कहा। उधर, तीनों लुटेरों ने जलती निगाहों से सुखराज को घूरा। हथकड़ी में बंधा होने की वजह से कसमसा कर रह गये। इधर उत्साही युवाओं ने सुखराज को कंधों पर उठा लिया था। हर ओर से ‘सुखराज जिंदाबाद’ के नारे लगने लगे थे।

कुछ गुस्साये युवकों ने जोर लगाकर तीनों लुटेरों की धुनाई कर डाली थी। पुलिस के सामने अब एक नयी समस्या आ गयी थी। वह लुटेरों को उग्र भीड़ से बचाकर थाने तक सुरक्षित ले जाना चाहती थी। तभी किसी ने नारा उछाला- ‘खून का बदला खून’ अब तो भीड़ बेकाबू हो उठी। अनियंत्रित भीड़ के हाथों उन लुटेरों के साथ पुलिसिये भी जद में आ गये। स्थिति

बेकाबू होती देख, किसी अधिकारी ने गोली चला दी। भीड़ के खामोश होते ही अधिकारी ने कहा-‘इन तीनों को कुछ हुआ तो तुम सभी मुसीबत में फंस जाओगे। इनके और साथियों और उनके कारनामों का पता पुलिस को लगाना है।’

पुलिस आफिसर की बातों को भीड़ पर अनुकूल असर पड़ा। लोग ‘सुखराज जिंदाबाद’ का नारा लगाते हुए शहर ले गये जहाँ उसे फूल-माला से ढक दिया गया। अमरचंद की विधवा ने भी उसका आभार माना। लुटेरों को रिमांड पर लेकर पुलिस कई दिनों तक पूछताछ करती रही। बाद में जाँच पूरी करके पुलिस इंस्पेक्टर ने न्यायालय में ‘अभियोग पत्र’ दाखिल कर दिया।

अब लोग जिज्ञासा और उत्सुकता के साथ मामले में निर्णय के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। इस मामले में पेट्रोल पम्प पर मौजूद बाबू और मोटरसाइकिल के मालिक के अलावा सुखराज ही तीसरा गवाह था। पहले दो गवाहों ने लुटेरों के नकाब पहने होने के कारण सूरत नहीं देखी थी जबकि सुखराज ने उन्हें करीब से देखकर गिरफ्तार करवाया था।

कुछ दिनों बाद सुखराज को न्यायालय से ‘सम्मन’ मिला। उसको गवाही देने के लिए एक सप्ताह के बाद बुलाया गया था। शिनाख्त परेड की कार्रवाई में सुखराज को उन अभियुक्तों के चेहरे जेलर के सामने पहचानने थे। सुखराज ने इस बारे में अपनी पत्नी से चर्चा की। सुनते ही वह भयभीत स्वर में बोली-‘आपने तो आफत अपने सिर ले ली है। लुटेरों का कोई ईमान-धर्म तो होता नहीं। किसी की जान लेना उनके लिए बेहद मामूली बात है। वे तीनों भी आपको पहचानते हैं। आपके चलते उन्हें सजा हो भी गयी तो छूटने के बाद बेरहम और लाजिम तुम्हें मारने और हमें बर्बाद करने से कतई चूकेंगे नहीं। इसलिए कोई भी कदम सोच-समझकर उठाना और बयान भी होशोहवास में ही देना। यही सबके हित में होगा।’

नियम तारीख और समय पर पुलिसवाले आये और भोर में ही उसे जगा दिया। सुबह साढ़े छः बजे पुलिस सुखराज को शिनाख्ती-परेड में ले गयी जहाँ उसे पाँच अन्य व्यक्तियों के बीच उन तीन लुटेरों को पहचानना था। पुलिसवाले जब सुखराज को उसके घर से ले जा रहे थे, तब सीढ़ियों से उतरकर नीचे पहुँचते ही उसकी पत्नी ने छत के बारजे से उसके सामने टॉर्च की रोशनी झपाक से डाली। जब उसने पीछे मुड़कर ऊपर की

ओर नजर उठायी तब पाया कि टॉर्च की रोशनी उसकी पत्नी के चेहरे को उजागर कर रही थी। वह ऐसा करके जैसे उसके उस वचन के लिए आश्वस्त हो लेना चाहती थी जो सुखराज ने उसे दिया था।

आखिरकार शिनाख्ती परेड हुई जिसमें सुखराज ने असली लुटेरों की जगह पर तीन अन्य व्यक्तियों की पहचान की। वे तीनों पुलिस के ही आदमी थे। इसलिए असली लुटेरों को संदेह का लाभ देकर पुलिस को छोड़ना ही पड़ा। इससे मृत पुलिसकर्मी अमरचंद की विधवा को बेहद मायूसी हुई।

सुखराज घर आ गया। उसके दिन परिवार में सुख-चैन के साथ जरूर बीतने लगे थे किंतु रातों की नींद उड़ ही गयी थी। वह स्वयं को अमरचंद की विधवा का 'गुनाहगार' ही मानने लगा था। वह यह भी अक्सर सोचने लगा था कि उसने अपनी घरवाली की बात मानी ही क्यों? क्या वह एक कायर नहीं था, जो तीन दबंग लुटेरों से भयभीत हो गया था।

वरिष्ठ उप संपादक 'आज'

बैंक रोड, गोरखपुर

संपर्क: 9451202409

आलेख

ग्रामीण समाज में परिवर्तन



डॉ. चन्द्रभूषण ओझा

सामाजिक परिवर्तन प्राकृतिक परिवर्तन की ही भाँति बदलाव की एक अनिवार्य प्रक्रिया है। अनिवार्य इस अर्थ में कि इसे टाला नहीं जा सकता। परिवर्तन प्रत्येक समाज में, प्रत्येक समय में और प्रत्येक अवस्था में होता है। परिवर्तन के लिए मुख्य रूप से आर्थिक कारक, सामाजिक कारक, राजनैतिक कारक, वैधानिक कारक, प्राणी-शास्त्रीय कारक, प्रौद्योगिकीय कारक आदि हैं। प्राणी शास्त्रीय कारकों से तात्पर्य उन कारकों से है, जो हमें अपने माता-पिता द्वारा वंशानुक्रम द्वारा प्राप्त होते हैं।

ग्रामीण समाज को परिवर्तित करने में पर्यावरण संबंधी कारकों की अनदेखी नहीं की जा सकती। मानव पर्यावरण से घिरा रहता है। प्राकृतिक या भौगोलिक वस्तुओं के अलावा परिवार, स्कूल, धार्मिक, आर्थिक संस्थाएँ व पड़ोस आदि से वह अनिवार्य रूप से प्रभावित होता है। इतना ही नहीं अनेक प्रकार के नियमों, रीति-रिवाज, प्रथा, परंपरा, धर्म, साहित्य भाषा आदि से भी व्यक्ति का घनिष्ठ संबंध होता है, इन सभी से भी वह प्रभावित होता है।

कृषि क्षेत्र में नवीन प्रविधियों का प्रयोग एक ऐसा प्रौद्योगिकीय कारक है जिसने जीवन में अनेक परिवर्तनों में योगदान दिया है। अब ग्रामीण क्षेत्रों में संबंधों में घनिष्ठता और

आत्मीयता के बजाय औपचारिकता और कृत्रिमता बढ़ती जा रही है। ग्रामीण समाज में चलाए जा रहे विकास कार्यक्रमों का ग्रामीण जीवन पर काफी प्रभाव पड़ा है। परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। यह सतत निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। पहले जजमानी प्रथा के अंतर्गत सेवा के बदले अनाज दिया जाता था, जबकि परिवर्तन के पश्चात् सेवा के बदले मूल्य देने की व्यवस्था हो गई है। इसी तरह छुआछूत की भावना पहले अपने चरम सीमा पर थी। अस्पृश्य व्यक्ति का स्पर्श किया हुआ सामान अपवित्र समझा जाता था और उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता था पर अब ऐसा नहीं है। किंतु जातिवाद की भावना आज भी हमारे समाज में अपना पैर जमाये हुए है। ग्रामीणों की अज्ञानता, जड़ता काफी हद तक समाप्त हुई है और वे अब परिवर्तन के पक्षधर हैं। अब वे परंपरा के स्थान पर आधुनिकता को पसंद करना चाहते हैं। महानगरों के चकाचौंध ने ग्रामीणों को काफी हद तक प्रभावित किया है। महानगरों की विभिन्न सुविधाएँ उन्हें गाँवों से शहरों की ओर आकर्षित करने लगी हैं। गाँव पुश फेक्टर तो शहर पुल फेक्टर के रूप में कार्य करते हैं।

दैनिक जागरण, गोरखपुर

संपर्क: 9452454037

भाग्य का खेल



गोविन्द प्रसाद कुशवाहा

मनुष्य का भाग्य कोई भी नहीं जानता, कब भाग्य मनुष्य के सामने प्रगट हो जाये और उसको रंक से राजा बना दे और कब उसके सामने दुर्भाग्य प्रगट हो जाये और उसको राजा से रंक बना दे इसको शायद ईश्वर ही जानता होगा, लेकिन कुछ वैज्ञानिक सोच वाले व्यक्ति कहते हैं कि कर्म से भाग्य बनता है यह बहुत हद तक सही भी है यदि यह दोनों ही बातें सही हैं तो दोनों में कोई न कोई तो श्रेष्ठ होगा ही। यह कहानी इसी बात पर अपना विचार प्रकट कराती है और विश्लेषण करना पाठकों पर छोड़ती है। घटना एक ऐसे आदमी से संबंधित है जो की बेहद ईमानदार और मेहनती थे और सरकारी विभाग में सुपरवाइजरी की नौकरी करते थे। वे अपना कार्य बड़ी ही तन्यमयता और परिश्रम से करते थे। इनका नाम रमेश था। इसके साथ ही वो अपने प्रमोशन को ध्यान में रख कर संबंधित किताबों की पढ़ाई भी किया करते थे। लेकिन भाग्य कहिये या फिर उनकी पढ़ाई में खोट कहिये वो जब भी परीक्षा में बैठते थे तो लिखित परीक्षा को पास कर लेने के बावजूद भी आज तक कोई साक्षात्कार पास नहीं कर पाए थे। उनकी भर्ती जिस पद पर हुई थी उसी पद पर आज भी थे। आखिरकार हारकर उन्होंने पढ़ाई-लिखाई छोड़कर जिंदगी का आनंद लेते हुए परीक्षा देने का फैसला लिया और इसके लिए वो अपनी पोस्टिंग स्थान और कार्य की प्रकृति को नजरअंदाज करते हुए एक बार सिनेमा देखने अपना मुख्यालय छोड़कर जिला मुख्यालय चले गए। सिनेमा देखने के पश्चात् वो जल्दी से स्टेशन पहुँच कर ट्रेन पकड़ कर अपने मुख्यालय पहुँचना चाहते थे। लेकिन स्टेशन पर पहुँचने पर पता चला की अभी डिप्टी साहब आएंगे तभी ट्रेन चलेगी। उधर जनता ट्रेन चलने का इंतजार करते-करते ऊबने लगी तो जाकर स्टेशन मास्टर से पूछने लगी कि साहब ट्रेन क्यों नहीं चला रहे हैं। इसी दौरान कुछ लोग स्टेशन मास्टर साहब से विवाद करने लगे कि आप ट्रेन क्यों नहीं चला रहे पहले तो स्टेशन मास्टर साहब ने इधर-उधर की बात बनाने का प्रयास किया लेकिन जब वह जनता के तर्कों का कोई उत्तर न दे सके तो उन्होंने झल्ला कर सही बात बता दिया जो अभी तक वो छिपा रहे थे कि डिप्टी साहब अभी आयेंगे तो यह ट्रेन चलेगी। अब सिनेमा समाप्त हो

होने वाला होगा या सिनेमा समाप्त हो गया होगा। इतना सुनना था कि जनता भड़क गई और ऊलूल-जुलूल बात बोलने लगी। कुछ ने तो स्टेशन मास्टर पर अपशब्दों की बौछार शुरू कर दी। इतने में डिप्टी साहब शायद सिनेमा समाप्त हो जाने के कारण स्टेशन पर आ गए और स्टेशन से लाउड स्पीकर पर यह बोला जाने लगा की सभी यात्रियों से अनुरोध है कि सभी लोग ट्रेन में अपने-अपने स्थान पर बैठें, ट्रेन चलने वाली है। इतना सुनना था कि यात्री ट्रेन की तरफ बढ़े और मामले से बेखबर डिप्टी साहब भी ट्रेन की तरफ अपने खैरख्वाह मातहतों से पुरसाहाली करवाते हुए अपने कोच की तरफ बढ़ ही रहे थे कि किसी यात्री की निगाह उनके ऊपर पड़ी और वो चिल्ला पड़ा देखो, यही डिप्टी है जिसके कारण ट्रेन इतनी देर से रुकी है, इतना सुनना था कि भीड़ में से किसी ने बोला कि मारो, इसी के कारण हम लोग यहाँ अनायास लगभग एक घंटे से माखी मार रहे हैं। इतना सुनना था कि पता नहीं किसने पहला हाथ उठा कर डिप्टी साहब के ऊपर पहला प्रहार किया इसका तो पता न चल सका लेकिन उसके बाद सैकड़ों हाथ उठने लगे और डिप्टी साहब के ऊपर गिरने लगे। इतने में घटना देख रहे रमेश बाबू अपनी वफादारी का परिचय तुरंत डिप्टी साहब के ऊपर लेट कर दिखा दिया। आखिरकार रमेश बाबू ऐसा क्यों नहीं करते वो उनके डिप्टी थे। अब जो भी हाथ ऊपर उठे एक आध हाथ रमेश बाबू को पड़े लेकिन जनता उनको ऊपर से हटा कर अपने बर्बाद हुए समय का हिसाब, लगता है डिप्टी साहब को मार कर निकाल लेना चाहती थी, लेकिन रमेश बाबू डिप्टी साहब के ऊपर से हटने को तैयार न थे। इस धक्का-मुक्की में एक आध हाथ रमेश बाबू को भी पड़े लेकिन उन्होंने अपने वफादारी का परिचय देते हुए इस चोट को बर्दाश्त किया। इतने में दो चार पुलिस के लोग आ गये। इस कारण से यात्रियों ने सोचा कि बात का बतंगड़ न हो जाये, सारे यात्री अपने-अपने कोच में दौड़ कर चले गए। इसके पश्चात् रमेश बाबू तुरंत अपने डिप्टी साहब के ऊपर से उठे और डिप्टी साहब को उठने का मौका देकर उनके भी कपड़ों के धूल-धक्कड़ को झाड़ना शुरू कर दिया। इसके पश्चात् डिप्टी साहब से पूछने लगे कि कोई खास चोट तो नहीं लगी। डिप्टी

साहब ने इस बात का उत्तर न देकर बोला की जनता भी कितनी उदंड होती है, इसका आज तक मुझे पता नहीं था, आज तक मैंने अपने कर्मचारियों पर ही शासन किया था उनको जैसे चाहा वैसे बोला, उनकी ऐसी की तैसी किया लेकिन किसी की बोलने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। इसी बात ने हमें बददिमाग बना दिया था और इसका फल हमें ईश्वर ने दे दिया। अब मैं पूरी जिंदगी भर इस बात को गांठ बांध कर रखूंगा कि जनता से जुड़े मामलों में फैसला बड़ी सावधानी से लेनी है। बात को पलटते हुए डिप्टी साहब ने रमेश बाबू से बोला, और बोलो रमेश तुम यहाँ कैसे आये थे। साहब इलाके के दौरे पर आया था तो पता चला की डिप्टी साहब यहाँ आये हैं तो सोचा चलो, आप से मिलता चलूँ तब तक यह घटना हो गई। अच्छा रमेश इस घटना का जिक्र किसी से भी न करना। साहब आप भी क्या कह रहे हैं, यह भी कोई जिक्र करने वाली बात है। इसके पश्चात् दोनों लोग अपने-अपने रास्ते चले गए। दूसरे दिन डिप्टी साहब ऑफिस अपने को सहज रखते हुए पहुँचे किन्तु ऑफिस के स्टाफ कौतुहलता से दबी नजरों से उनको देखना चाह रहे थे। पता नहीं, यह बात ऑफिस के स्टाफ को पता चल गया था क्या?

इस घटना बीते कई वर्ष हो गए और शायद सारे लोग इसे भूल भी गए थे। सब कुछ सामान्य चल रहा था, इसी दौरान प्रोन्नति के लिये एक विभागीय परीक्षा की वेकेंसी निकली जिसके लिए सारे योग्य उम्मीदवार परीक्षा में बैठने के लिए फार्म भरने लगे। फार्म भरने वालों में रमेश बाबू भी थे। उन्होंने बड़े अनमने मन से फार्म भरा क्योंकि वो कई बार इसके लिए फार्म भर चुके थे और किन्तु पिछले कई बार से लिखित परीक्षा में पास होने के बावजूद फाइनल सलेक्शन न होने के कारण उनका मन अनमना से परीक्षा में बैठने के लिये बना रहता था। लेकिन उन्होंने सोचा कि चलो सब फार्म भर रहे हैं, तो मैं भी फार्म भर देता हूँ। कौन सा पैसा लग रहा है। यह सोच-विचार कर उन्होंने फार्म भर दिया और सोचा कि चलो बहती गंगा में हाथ धो लिया जाये। आदमी का भाग्य कौन जानता है? कब भाग्य रंक से राजा बना दे और कब दुर्भाग्य राजा से रंक बना दे और उन्होंने सामान्य पढ़ाई शुरू कर दिया। इस परीक्षा की कमेटी में वही डिप्टी साहब थे जिनका बचाव रमेश बाबू ने अपनी जान पर खेल किया था। सोचा चलो एक दिन डिप्टी साहब से मिल लेता हूँ और एक बार उनको नमस्ते कर लेता हूँ, ये सोच कर रमेश

बाबू एक दिन डिप्टी साहब के सामने हाथ जोड़ कर खड़े हो गए और बोले साहब मैंने भी प्रोन्नति परीक्षा का फार्म भरा है। मैं आपकी दया दृष्टि अपने ऊपर चाहता हूँ। डिप्टी साहब ने भी उनकी बात को सुना और बोले, अच्छी तरह तैयारी कर परीक्षा में बैठिए, भगवान चाहेगा तो आपका सलेक्शन होकर रहेगा।

रमेश बाबू को डिप्टी साहब की तरफ से कोई स्पष्ट आश्वासन न मिलने पर वह अपने मन-ही-मन में भुनभुनाने लगे। ये अधिकारी ऐसे ही होते हैं, इनके साथ किसी भी स्तर का उपकार कर दो किन्तु ये उसी तरह बात भूलते हैं जैसे देश के नेता अपने चुनावी वादे को भूलते हैं। खैर, समय बीता, बात बीती, परीक्षा का समय आया। परीक्षा हुआ, रमेश बाबू भी परीक्षा दिए। किन्तु रमेश बाबू ने महसूस किया कि इस बार परीक्षा पहले दिये गये परीक्षा से कुछ खराब ही हुआ है।

समय आने पर परीक्षा का परिणाम आया, उसमे रमेश बाबू का नाम सफल प्रत्याशियों में सबसे ऊपर था। रमेश बाबू डिप्टी साहब के चैम्बर में गये। उनके सामने कुछ बोल नहीं पाये। उनकी आँखों में कृतज्ञता के आँसू थे। वो केवल उनके सामने हाथ जोड़ कर खड़े रहे, डिप्टी साहब रमेश बाबू के मनोभावों को समझते हुए बोले ये आपके परिश्रम का परिणाम है, नहीं साहब, आपकी बहुत बड़ी कृपा है। रमेश बाबू मन ही मन सोच रहे थे। बड़े आदमी बड़े ही होते हैं। साक्षात्कार का दिन आया। सारे सफल अभ्यर्थियों का साक्षात्कार हुआ, परिणाम निकला उसमें भी रमेश बाबू का नाम प्रथम स्थान पर था।

रमेश बाबू को ऑफिस में बधाईयों का तांता लग गया। आखिरकार लोग बधाई क्यों न देते, रमेश बाबू अब अधिकारी हो गये थे। किन्तु ऑफिस स्टाफ के मन में कहीं न कहीं यह बात बैठी थी कि रमेश बाबू का यह प्रोन्नति डिप्टी साहब की अनुकम्पा का ही कहीं न कहीं परिणाम है। जो कुछ भी हो आज के दिन से रमेश बाबू अधिकारी थे। आखिरकार परिणाम तो परिणाम होता है और अंततोगत्वा वही मायने रखता है। कुछ लोग इसे रमेश बाबू के भाग्य का खेल मानते थे तो कुछ लोग उनके द्वारा किये गये कर्म और सही समय पर लिए गए उचित निर्णय का परिणाम मानते थे।

सी.से.ई./पी.वे./सेफ्टी/लखनऊ

संपर्क: 9794842920

धर्म पुत्र



सुरभि श्रीवास्तव

आज राखी का पावन पर्व था, सुधा एकदम उदास बैठी हुई अपने भाई की याद में अविरल आँसू बहा रही थी, क्योंकि कुछ दिनों पूर्व उसके एकमात्र भाई रमेश की एक बस दुर्घटना में मृत्यु हो गयी थी। अब उसके परिवार में एकमात्र पिता ही उसके जीवन का सहारा बचे थे।

बेचारी सुधा जब पाँच वर्ष की ही थी, उसकी माँ का स्वर्गवास हो गया। उसके भाई की उम्र उस समय लगभग आठ वर्ष थी। माता के नहीं रहने से इस परिवार पर मुसीबतों का जैसे पहाड़ ही टूट पड़ा था। सुधा का पिता एक गरीब किसान था, जिसके पास खेती के नाम पर केवल डेढ़ बीघा जमीन थी जिससे परिवार की जीविका चलाने के लिए उसे अलग से मजदूरी भी करनी पड़ती थी। माँ के नहीं रहने के बाद तीनों मिल-जुलकर किसी प्रकार भोजन का प्रबंध करते थे।

पिता रामदयाल जब मजदूरी करने चला जाता था, तब उसके कुछ देर बाद सुधा और रमेश स्कूल चले जाते थे। शाम को तीनों के वापस आने के बाद फिर तीनों मिलकर सुबह की भाँति भोजन की व्यवस्था करते। समय इसी प्रकार बीतता रहा और सुधा पंद्रह वर्ष की हो गयी रमेश अठारह वर्ष का। सुधा ने गाँव के समीप स्थित जूनियर हाई स्कूलों में मिडिल तक पढ़कर पढ़ाई छोड़ दी थी, क्योंकि आगे पढ़ने के लिए उसे नाव से लगभग पाँच-छह किलोमीटर तक जाना पड़ता इसीलिए उसकी पढ़ाई मिडिल स्कूल से आगे न हो सकी।

रमेश ने मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण करने बाद हाई स्कूल में प्रवेश ले लिया था, हाई स्कूल कर लेने के बाद उसे भी पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी क्योंकि आगे पढ़ने के लिए उसे शहर जाना पड़ता था, एक प्रकार से गरीबी ही शिक्षा प्राप्त करने में उसकी मुख्य बाधा थी। अब पढ़ाई छोड़ने के बाद वह भी अपने पिता के साथ मजदूरी करने के लिए जाने लगा था तब सुधा अपने पिता और भाई की अनुपस्थिति में घर पर अकेली रह जाती थी।

एकाकीपन में सुधा को अपनी माँ की याद विशेष रूप से आ ही जाती थी। रमेश भी अपनी बहन सुधा से बहुत स्नेह करता था। रक्षा बंधन के पर्व पर जब सुधा रमेश को रक्षा-सूत्र बांधती थी, तब वह अपनी बहन को मात्र पचीस-पचास रुपये ही दे पाता था भरे मन से वह कह उठता-‘बहन, मैं तुम्हें इस पावन पर्व पर कुछ दे नहीं पा रहा हूँ, किंतु इसके बदले ऐसा दूल्हा लाऊंगा कि तू ससुराल में राज करेगी।

जवाब में सुधा रमेश से कहती-‘नहीं भईया, मुझे अपने और बाबूजी से कभी भी अलग मत करना मैं तुम दोनों को छोड़कर कहीं भी नहीं जाऊंगी, क्या अब मैं तुम दोनों को बोझ लगने लगी हूँ जो मेरी शादी करके मुझे अपने से अलग कर देना चाहते हो? वैसे भईया, यदि तुम सचमुच इस पावन रक्षा बंधन के बदले में मुझे कुछ देना ही चाहते हो तो तुम मेरे लिए एक प्यारी-सी भाभी ला दो’। यह सुनकर तीनों ही बरबस हँस पड़े थे रामदयाल खुशी के अतिरेक से रो पड़ा था। उसकी आँखों से अश्रुकण बह निकले थे।

रामदयाल, रमेश और सुधा के घर के समीप ही एक अन्य किसान का भी घर था। वह गाँव का मुखिया था और उसके एक पुत्र भी था जिसकी उम्र रमेश की उम्र के समान थी उसका नाम नीरज था। नीरज ने भी रमेश के साथ ही हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। वह सुधा और रमेश के यहाँ यदा-कदा आता रहता था मौका पड़ने पर वह भी रमेश की भाँति सुधा और उसके पिता रामदयाल की मदद किया करता था। वे लोग भी उससे स्नेह रखते और परिवार का एक अंग समझते थे।

रमेश ने एक नौकरी के लिए आवेदन किया था। दो माह पूर्व वहाँ से बुलावा आने पर वह साक्षात्कार देने गया था। लौटते समय अचानक बस दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से उसकी आकस्मिक मृत्यु हो गयी। सुधा अभी माँ की मृत्यु के सदमे से पूरी तरह उबर भी नहीं पायी थी कि यह हादसा हो गया। रामदयाल के परिवार पर यह दूसरा प्रकोप टूट पड़ा था।

सुधा अपने भाई रमेश की याद में दिन-रात आँसू बहाया करती। आज राखी के पर्व पर उसका भाई रमेश उसके पास नहीं था। सुधा अपने हाथों में रक्षा-सूत्र लिये फूट-फूटकर रो रही थी। उसका पिता रामदयाल पत्नी और पुत्र के वियोग से दुःखी था और सुधा का बिलख-बिलखकर रोना देखकर स्वयं भी रो पड़ा। फिर भी अपने आँसुओं को मन ही मन पीकर उसने सुधा को समझा-बुझाकर ढाढ़स बंधाने का प्रयत्न किया।

उधर, नीरज भी कम उदास नहीं था क्योंकि उसका भाई जैसा मित्र रमेश अब उसके साथ नहीं था। राखी के दिन सुधा उसको और रमेश को स्नेहपूर्वक राखी बांधती थी। उसने सोचा कि आज रमेश के अभाव में सुधा बेहद उदास और चिंतित होगी यह सोचकर नीरज उठकर रामदयाल के घर की ओर चल पड़ा, द्वार पर आकर उसने सुधा को आवाज दी उस समय रामदयाल सुधा को सांत्वना देने का प्रयास कर रहा था।

नीरज की आवाज सुनकर सुधा और भी फूट-फूटकर रोने लगी। रामदयाल ने उठकर दरवाजा खोला। उसको प्रणाम करने के बाद नीरज सीधा सुधा के पास पहुँच गया। सुधा को रोता देखकर उसकी भी आँखों से आँसू बह निकले। सुधा के समीप बैठते हुए नीरज ने कहा-‘मत रो बहना! रमेश भाई नहीं रहे तो क्या, तेरा यह धर्म-भाई तो है! सदा की भाँति रक्षा बंधन बांध दे मेरी कलाई पर।’ उसने अपना दाहिना हाथ सुधा के आगे बढ़ा दिया। राखी बांधते समय नीरज ने कहा-‘बहन, मैं वचन देता हूँ कि तुम्हारा यह धर्म-भाई अपनी अंतिम सांस तक तुम्हें एक भाई का स्नेह देता रहेगा और सदैव तुम्हारी रक्षा करता रहेगा।’

इसके बाद सुधा ने नीरज और रामदयाल के लिए भोजन बनाया, हमेशा की तरह खीर भी बनायी। खीर खा लेने के बाद नीरज यह कर चला गया कि अच्छा बहन, फिर आऊँगा।

विडंबना ही थी कि गाँव के कुछ मनचले युवक सुधा पर कुदृष्टि रखते थे। नीरज का नाम लेकर वे उस पर छींटाकाशी भी करने से बाज नहीं आते थे, ऐसे में एक दिन अपने घर नीरज के आने पर सुधा ने उससे कह दिया-‘भईया, अब तुम यहाँ पर मत आया करो, गाँव के लोग हमारे संबंधों को गलत समझ कर ऊलूल-जलूल छींटाकशी करते हैं।’

यह सुनकर आवेश से नीरज का खून ही खौल उठा उसने कहा-‘बहन सुधा, उन नीच लोगों के जरा नाम तो बताओ, जो हमारे बारे में उल्टा-सीधा कहते हैं। मैं उन्हें जान से मार डालूँगा।’ इस पर सुधा बोली ‘नहीं भईया, ऐसा मत करना नहीं तो अनर्थ हो जायेगा हमें और भी बदनामी झेलनी पड़ेगी,’ सुनकर नीरज खामोशी से लौट गया।

एक दिन जब नीरज सुधा के घर उनका हालचाल लेने के इरादे से कुछ फल और सब्जियाँ लेकर जा रहा था, रतन नामक एक दुष्ट और उच्छृंखल युवक ने नीरज को टोक ही तो दिया-‘वाह दोस्त, सुधा के साथ भाई-बहन का नाटक रचाकर खूब अच्छा दांव मारा है हमें तो साली घास भी नहीं डालती।’

इसका इतना कहना था कि नीरज ने भूखे शेर की तरह रतन पर हमला कर दिया। रतन की उसने इतनी पिटाई-टुकाई की कि यदि गाँव वाले आकर उसे रोक न लेते तो वह उसके शायद प्राण ही ले लेता! मुखिया का बेटा होने कारण ही लोगों ने नीरज को कुछ नहीं कहा बस, बीच-बचाव करके दोनों को छोड़ दिया।

सुधा को जब इस बात की जानकारी अपने पिता से हुई, तब वह मन ही मन कांप उठी उसने सोचा कि यदि नीरज के हाथों उस दुष्ट युवक रतन की हत्या हो जाती तो नीरज को भी देर-सवेर फांसी की सजा मिलती तब उसके पिता का धर्म-पुत्र भी छिन जाता फिर किसे वह ‘भईया’ कहती। किसे राखी बांधती...

रामदयाल को भी नीरज और रतन के बीच हुए झगड़े से बेहद चिन्ता हो रही थी। धर्म पुत्र नीरज की बदनामी के साथ ही मामला उसकी बेटि सुधा से भी तो जुड़ा हुआ था उधर, रतन ने भी नीरज को धमकी दे दी थी-‘अच्छा बच्चू, अभी बचा लो जान। बाद में तुम्हें जल्दी ही देख लूँगा...खत्म कर दूँगा, चाहे जैसे भी बन पड़े...’

रतन की धमकी की नीरज ने कोई परवाह नहीं कि किंतु सुधा और उसके पिता रामदयाल की चिन्ता बढ़ गयी थी। रामदयाल सोच रहा था कि यदि नीरज को कुछ ऊँचा-नीचा हो गया तो लोग उन दोनों को ही दोषी ठहरायेंगे,

उस घटना के चार-पाँच दिन बाद जब नीरज एक दिन सुधा के घर पर पहुँचा, तब सुधा उससे रोते हुए कहने लगी-‘तुमने अकारण ही रतन से झगड़ा मोल ले लिया...वह दुष्ट है और वह किसी भी समय कुछ भी कर सकता है...तब ऐसी दशा में गाँव वालों के द्वारा लगाये गये दोषारोपण से क्या मैं बच सकूँगी? तब तो आत्महत्या के सिवा मेरे पास कोई चारा ही नहीं रहेगा...’

सुनकर नीरज ने हँसते हुए कहा-‘पगली, तू नीरज की बहन होकर भी इतना डरती है! एक रतन तो क्या, उसके जैसे सौ रतन भी आकर यदि मेरी बहन पर फब्तियाँ कसेंगे तो मैं अपनी बहन के लिए उन सबसे लड़ जाऊँगा...डरते तो कायर हैं और वे जिनके भीतर चोर अथवा छल-कपट होता है! तुम लोग चिन्ता मत करो, मुझे कुछ भी नहीं होगा रतन मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।’

इतने में सुधा का पिता रामदयाल भी काम पर से वापस आ गया। वह अब एक दुकान पर मुनीमगीरी करने लगा था उसने नीरज से कहा-‘बेटे, तुम हमारे धर्म-पुत्र हो, किंतु हम दुखियारों के लिए किसी से भी झगड़ा मत मोल लिया करो। मैं तुम्हें रमेश की तरह अपना बेटा ही समझता हूँ। ईश्वर ने रमेश को मुझसे छीन लिया है, मैं नहीं चाहता कि हमारे कारण तुम पर कोई आंच आये। दुनिया तो अंधी है बेटे, एक पराये लड़के को किसी परायी लड़की के घर में आते-जाते देख कर लोग गलत सोचने लगते हैं। यही बात गाँव वालों के मन में भी है।’

नीरज का एक मित्र था अजय जो समीपवर्ती शहर गोरखपुर में रहता था। वह अपेक्षाकृत संपन्न परिवार से था और रामदयाल व सुधा का सजातीय। वह इन दिनों बी.ए. फाइनल की परीक्षा देने वाला था। नीरज ने सोचा कि क्यों न अजय से सुधा के रिश्ते की बात चलायी जाये, किंतु रामदयाल की विपन्नता को देखकर उसे संकोच हो आया फिर उसने सोचा कि बात करने में भला क्या हानि है। उसने अगले ही दिन अजय से मिलने का कार्यक्रम बना डाला और रामदयाल एवं सुधा से अपना ध्यान रखने को कहते हुए बोला कि वह बेहद जरूरी काम से शहर जा रहा है। काम पूरा होते ही वह लौट आयेगा तब तक दोनों अपना ध्यान रखें।

अगले दिन नीरज शहर चला गया। मित्र के घर

अचानक पहुँचने से अजय को भी बेहद खुशी हुई थी, क्योंकि दोनों बहुत दिनों के बाद मिले थे कुछ देर की बातचीत के बाद जलपान करके दोनों बाहर घूमने निकल पड़े। रास्ते में बातों के दौरान नीरज ने अजय से सुधा की शादी की बात चला दी। यह प्रस्ताव सुनकर अजय असमंजस में पड़ गया-‘मित्र, मैं तुम्हारा आग्रह टाल तो नहीं सकता, किंतु इस संबंध में माता-पिता से परामर्श लेना आवश्यक है। घर चलकर तुम उनसे बात करके देखो कि वे क्या कहते हैं?’

घूम-फिरकर लौटने के बाद रात को जब सभी लोग खाना खाने के लिए एक साथ बैठे, तब नीरज ने अजय के पिता से कहा-‘बाबूजी, मैं आप लोगों के पास एक निवेदन लेकर आया था आशा है, मेरा आग्रह आप लोग ठुकरायेंगे नहीं।’ सुनकर अजय के पिता ने कहा-‘बेहिचक कहो बेटे, मेरे लिए तुम और अजय में कोई अंतर नहीं है जब तुम मेरे बेटे के समान हो तो तुम्हारा आग्रह मैं भला कैसे ठुकरा सकता हूँ?’

नीरज ने कुछ सकुचाते हुए कहा-‘बाबूजी, मेरे गाँव में एक गरीब ब्राह्मण परिवार रहता है। कभी वे लोग चार सदस्य थे। स्वयं रामदयाल उनकी पत्नी, बेटा और बेटी। लड़की का नाम सुधा और बेटा था रमेश। जब सुधा पाँच वर्ष की थी, तब उसकी माँ चल बसी। आठवीं करने के बाद वह आगे नहीं पढ़ सकी क्योंकि जूनियर हाईस्कूल के आगे गाँव में कोई स्कूल न था। भाई रमेश एक नौकरी के सिलसिले में शहर गया था वापसी में अचानक एक बस दुर्घटना में वह चल बसा। ऐसी दशा में उनके परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। चूँकि रमेश मेरा अभिन्न मित्र था, इसलिए मित्रता के नाते हम दोनों एक सगे भाई की तरह रहते थे उसकी बहन अपने भाई के साथ-साथ हमें भी हर राखी के पर्व पर राखी बांधा करती थी। भाई के नहीं रहने पर मैंने रामदयाल के धर्म-पुत्र की तरह कर्तव्य निभाने का संकल्प कर लिया है।

नीरज ने बेबाक शब्दों में आगे की बात कह डाली-‘हमारे गाँव के कुछ मनचले हमारे संबंध को लेकर ऊलूल-जलूल अफवाहें उड़ाने लगे हैं। निर्धनता के कारण उसका पिता अपनी बेटी की शादी करने में अपने को असमर्थ पा रहा है। एक धर्म-पुत्र होने के नाते मुझसे उन दोनों का दुःख देखा नहीं जा रहा है। गाँव के मनचलों की हरकतें देख,

मैंने सोचा कि यदि सुधा बहन की शादी कहीं हो जाये, तो सारी परेशानी दूर हो जाये इसीलिए मैं आप लोगों के पास आया हूँ कि यदि आप लोग सुधा को अपने घर की बहू बनाना स्वीकार कर लें तो मैं आप लोगों का आजीवन आभारी रहूँगा।

अजय के पिता तो नीरज का प्रस्ताव सुनकर हतप्रभ ही रह गये। उन्हें तत्काल कोई उत्तर नहीं सूझ रहा था उन्हें चिंतित देखकर उनकी पत्नी बोल पड़ी-‘नीरज बेटे, अभी तो अजय को बी.ए. के फाइनल की परीक्षा देनी है। परिणाम आने में भी पाँच-छह महीने तो अबसे लग ही जायेंगे। वैसे तुम बताओ कि लड़की कैसी है?’

नीरज ने कहा ‘सुंदरता में तो सुधा हजारों में एक है। स्वभाव की भी सुशील, सहज, गंभीर और सरल। कमी बस इतनी है कि पिता अत्यंत संपन्न नहीं हैं। परिवार में भी बस वही दो सदस्य हैं। आप लोग चाहें तो दशहरे के बाद भरत मिलाप के मेले में उसे देख लें, मैं लेता जाऊँगा...रमेश के निधन के बाद रामदयाल जी ने मुझे धर्म-पुत्र माना है। इसी से एक भाई के रूप में मैंने सुधा का विवाह कराने का दायित्व ले लिया है। आप लोगों से मेरा विनम्र अनुरोध है कि आप लोग उसे बहू के रूप में स्वीकार कर लें। हम आजीवन आपके कृतज्ञ रहेंगे।

अजय के पिता ने पत्नी के विचारों को भांपते हुए कहा-‘अच्छा बेटे नीरज, जब तुम्हीं लड़की के भाई के रूप में हमारे पास आये तो हमें कोई एतराज नहीं है, किंतु क्या तुमने इस बारे में अजय से भी बात कर ली है?’ अजय की माँ ने कहा कि वे लोग दशहरे के मेले में गाँव पहुँचेंगे, वहीं मेले में देखेंगे सुधा को।

इसके बाद सब लोग खाना खाकर सोने चले गये। सुबह नाश्ता पानी करने के बाद जब नीरज चलने लगा, तब अजय उसे छोड़ने के लिए रोडवेज तक गया। राह में नीरज ने जब उसका मन टटोला, तब उसने कहा-‘सुधा को मैंने तुम लोगों के साथ देखा था एक-दो बार गाँव तुम्हारे गया, तब सुधा को पसंद किया था किंतु डरता था कि उनकी निर्धनता के कारण मेरे माँ-बाप, मना न कर दें अब तुम्हारी वजह से बात बनती लग रही है...

नीरज को विदा करके अजय अपने घर चला गया।

जबकि सुधा के यहाँ पहुँचकर नीरज ने रामदयाल को सूचित किया कि वह एक हद तक सुधा की शादी की बात एक अच्छे घर में पक्की कर आया है...तब उन्हें मालूम हो सका कि नीरज के शहर जाने की वजह क्या थी...कुछ ही दिनों के बाद विजयादशमी भी आ गयी नवरात्र में सुधा ने व्रत रखा था।

विजयदशमी के दिन सुधा भाई और माँ को याद करके भाव-विह्वल हो-होकर रोने लगती। उसे शोक में देखकर नीरज कहा-‘बहन, दुःखी मत हो। आज हम तुम्हारे और बापू के साथ मेला देखने चलेंगे’ सुनकर सुधा ने कहा-‘नहीं भईया, आप और बापू जाइये मुझे घर के कई काम करने हैं खाना भी बनाना है! जवाब में नीरज ने कहा -‘खाना आज हम लोग बाहर ही खायेंगे।’

इच्छा नहीं होते हुए भी सुधा नीरज का मन रखने के लिए तैयार होने चली गयी। कुछ देर के बाद तीनों मेला देखने जा पहुँचे। वहाँ पर नीरज, अजय के परिवारजनों को ढूँढ़ने लगा जो कुछ देर के बाद से मिल गये। नीरज ने सुधा के पिता रामदयाल से अजय का परिचय कराते हुए कहा-‘बापू, यह हमारे एक खास परिचित हैं जो शहर में रहते हैं और अपने माता-पिता के साथ यहाँ का मेला देखने आये हैं।’

बातचीत के दौरान नीरज ने सुधा को यह अनुभूति नहीं होने दी कि इसी अजय के साथ उसने विवाह की बात करने वह शहर गया था और उसे दिखाने का कार्यक्रम तय कर आया था। सुधा ने अजय के माता-पिता को सादर प्रणाम किया। अजय की माँ तो सुधा को देखकर उसके प्रति मोहित-सी हो गयी और सुधा को बहू बनाने का निश्चय कर लिया। इसके बाद वहीं एक रेस्तरां पर दोनों परिवारों के लोग भोजन करके अपने-अपने घर लौट गये।

कुछ दिनों के बाद नीरज रामदयाल को अपने साथ शहर ले गया और अजय के माता-पिता से सुधा की शादी की तिथि बिना किसी लेन-देन के तय करा दिया। घर आकर रामदयाल ने सुधा से बताया-‘बेटी, तेरी शादी उसी लड़के के साथ तय हो गयी है जो उस दिन मेले में मिला था,’ पिता के मुख से अपनी शादी तय होने की बात को सुनकर सुधा लज्जा से आरक्त हो उठी और पिता के पास से हटकर चौक में चल गयी।

सुधा का विवाह तय होने की बात का पता रतन को भी

चल गया। नीरज और सुधा को नीचा दिखाने के लिए वह विवाह में बाधा पहुँचाने की योजना बनाने लगा यहाँ तक कि उसने प्रकाश झा की फिल्म 'अपहरण' देखने के बाद सुधा का अपहरण करने की योजना तक बना डाली...

एक दिन नीरज और रामदयाल कुछ सामान लेने शहर गये थे। लौटते समय कोई साधन नहीं मिल पाने के कारण उन्हें देर हो गयी। पिता के लौटने में विलंब से चिंतित सुधा ने खाना बना लेने के ध्येय से अभी चूल्हा जलाया ही था कि दरवाजे पर दस्तक हुई उसे लगा कि शायद बापू अथवा नीरज लौटकर आ गये, लालटेन लेकर वह दरवाजा खोलने जा पहुँची।

सुधा ने जैसे ही दरवाजा खोला, उसका अपहरण करने के इरादे से रतन ने उसका मुँह एक हाथ से दबोच लिया और बोला- 'सुधा रानी, मैं तुम्हें गायब करने आया हूँ। बुला ले अपने भगवान को, तो वह भी तुझे आज मुझसे नहीं बचा पायेगा।' उसके अचानक हमले से घबराकर सुधा स्वयं को छुड़ाने का प्रयास करने लगी। छीना-झपटी में लालटेन का किरासिन तेल रतन के कपड़ों पर गिरकर बिखरने-फैलने लगा। उसके कपड़ों में आग लग गयी उसे उसके हाल पर छोड़कर सुधा झट से बाहर निकल आयी। गाँव के लोग जुटने लगे और रतन अपने कपड़े में लगी आग बुझाने के लिए जमीन पर गिरकर छटपटाने लगा।

सुधा के मुख से सारी घटना को जानकर वहाँ पर जुटे तमाम लोग रतन को बुरा-भला कहने और कोसने लगे। कई ने कहा कि बहुत अच्छा हुआ जो जल गया। रतन के पिता ने उसके कारनामे को सुनकर उसे बहुत जलील किया, फिर भी बाप होने के नाते उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र ले गये जहाँ से उसे चिकित्सालय ले जाया गया। अभी यह सब हो ही रहा

था कि नीरज और रामदयाल शहर से आ गये।

दरवाजे पर लगी भीड़ को देखकर रामदयाल घबरा उठा था नीरज भी चिंतित हो उठा, किंतु जब दोनों को मामले की जानकारी हुई, तब दोनों सुधा को ढूँढ़ने लगे जो औरतों के बीच घिरी रो रही थी पिता को देखकर वह उसके सीने में मुँह छिपाकर रोने लगी रामदयाल ने कहा- 'बेटी, गरीबों की मदद करने वाला ईश्वर होता है। आज उसी ने मेरी लाज बचा ली, अन्यथा मैं कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रह जाता।'

नीरज सारी बातों को जानकर तत्काल संबंधित थाने चला गया और सुधा के साथ हुई वारदात की प्राथमिकी दर्ज कराकर वापस आ गया। अगले दिन पुलिस ने रतन को हिरासत में ले लिया।

इस घटना के एक सप्ताह बाद ही सुधा के घर पर अजय की बारात गोरखपुर से जा पहुँची। नीरज ने एक धर्म-भाई व धर्म-पुत्र के सारे दायित्व भली-भाँति निभाये। गाँव की महिलाओं और लड़कियों ने सुधा के विवाह की सारी रस्मों को विधिपूर्वक पूर्ण कराया। अगले दिन सुधा अपने धर्म-भाई और पिता को रोता-बिलखता छोड़, स्वयं भी आँसू बहाती ससुराल चली गयी।

रतन के ठीक-ठाक होने पर उसके विरुद्ध युवती के अपहरण के प्रयास का मुकदमा चला और इस जुर्म में उसे तीन वर्ष के कठोर कारावास की सजा हो गयी। शरीर पर जलने की निशानियाँ उसकी करतूत पर उसे मुँह चिढ़ाकर शर्मिन्दा करती रहती। यह वाक्या सुनने वाले कह उठते थे- 'अंत भले का भला और बुरे का बुरा।'

रायपुर, देहरादून

संपर्क: 8004306803

ईश्वर हर जगह हैं और कण-कण में हैं,
लेकिन वह इंसान में ही सबसे अधिक प्रकट होते हैं।
इस स्थिति में ईश्वर के रूप में आदमी की सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है।

- स्वामी रामकृष्ण परमहंस

अग्रिम जमानत



एम.ए. रिजवी

दण्ड प्रक्रिया संहिता 1973 की धारा 438 में अग्रिम जमानत के संबंध में उल्लेख किया गया है। अग्रिम जमानत सेशन न्यायालय या उच्च न्यायालय से प्राप्त किया जाता है। सेशन न्यायालय द्वारा अग्रिम जमानत किन्हीं कारणों से देने से इनकार किया जाता है तो ऐसी स्थिति में उच्च न्यायालय का विकल्प अग्रिम जमानत लेने हेतु खुला रहता है। दण्ड प्रक्रिया संहिता एक दूरदर्शी संहिता होने के कारण धारा 438 दण्ड प्रक्रिया संहिता का आने वाले समय में अधिक आवश्यकता पड़ने की संभावना थी, किसी व्यक्ति को दुर्भावना/राजनीतिक द्वेष व जलनवश या उसकी तरक्की एवं सम्मान को देखते हुए यदि किसी व्यक्ति द्वारा झूठे केस में फंसाकर जेल भेजवाना या ऐसा अपराध साबित हो जाने की स्थिति में, जिससे जेल जाने की संभावना है, उस स्थिति में गिरफ्तारी से पहले जेल से बचने हेतु अग्रिम जमानत का प्रावधान दण्ड प्रक्रिया संहिता में किया गया है।

यदि किसी व्यक्ति को यह विश्वास करने का कारण है कि हो सकता है कि उसे किसी गैर-जमानतीय अपराध जिस पर पुलिस थाने का प्रभारी अधिकारी बिना वारन्ट गिरफ्तार या निरूद्ध कर सकता है, ऐसी स्थिति में इस धारा के अधीन निदेश के लिए उच्च न्यायालय या सेशन न्यायालय को आवेदन कर सकता है।

भारत में अपराधिक कानून के अंतर्गत गैर-जमानतीय अपराध के आरोप में गिरफ्तारी होने की आशंका में कोई व्यक्ति अग्रिम जमानत का आवेदन कर सकता है। न्यायालय द्वारा सुनवाई के बाद सशर्त अग्रिम जमानत दी जा सकती है। यह जमानत पुलिस की जाँच होने तक जारी रहती है। ऐसे न्यायालय जो अग्रिम जमानत देने के लिए सशक्त हैं, निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखते हुए अर्थात्

1. अभियोग की प्रकृति एवं गंभीरता।
2. आवेदन पूर्व में जिसमें यह भी तथ्य है कि क्या उसने किसी संज्ञेय अपराध के मामले में किसी न्यायालय द्वारा दोष सिद्धि पर पहले सजा भुगती है।
3. न्यायालय से भागने की आवेदन की संभाव्यता और
4. जहाँ उसे गिरफ्तार कराकर क्षति पहुँचाने या अपमान

करने के उद्देश्य से अभियोग बनाया गया हो।

या तो तत्काल आवेदन अस्वीकार करता है या अग्रिम जमानत मंजूर करने के लिए अंतिम आदेश देगा।

यदि न्यायालय द्वारा अंतरिम आदेश पारित नहीं किया जाता है तो आवेदन को अस्वीकार कर देने पर पुलिस अभियोग के आधार पर बिना वारंट गिरफ्तार कर सकेगी। न्यायालय द्वारा अन्तरिम आदेश मंजूर करना है तो ऐसे आदेश की एक प्रति न्यायालय द्वारा आवेदन की अंतिम रूप सुनवाई के समय लोक अभियोजक को सुनवाई का युक्तियुक्त अवसर देने की दृष्टि से लोक अभियोजक एवं पुलिस अधीक्षक को देगा।

जब उच्च न्यायालय या सेशन न्यायालय जो ठीक समझे, निम्नलिखित शर्तें सम्मिलित कर सकता है,

1. पुलिस अधिकारी द्वारा पूछे जाने वाले परिप्रश्नों का उत्तर देने एवं अपेक्षित हो उपलब्ध रहेगा।
2. उन मामलों से अवगत किसी व्यक्ति को न्यायालय या पुलिस अधिकारी के समक्ष तथ्यों को प्रकाश करने हेतु कोई उत्प्रेरणा धमकी या वचन नहीं देगा।
3. न्यायालय के पूर्व अनुमति के बिना भारत नहीं छोड़ेगा।

परिविन्दर सिंह बनाम स्टेट आफ उत्तर प्रदेश के मामले में अग्रिम जमानत का आदेश कारण सहित होना चाहिये, अकारण नहीं। साथ-साथ यह मर्यादित अवधि का होना अपेक्षित है लंबी अवधि का नहीं।

स्टेट आफ पंजाब बनाम रविन्द्र सिंह के मामले में अग्रिम जमानत का आदेश की शर्त का उल्लंघन किये जाने पर जमानत को निरस्त किया जा सकता है शर्त के अनुसार पूछताछ के लिये अन्वेषण अधिकारी के समक्ष उपस्थित नहीं होना निरस्तीकरण का अच्छा आधार है।

एम.ए., एल.एल.बी.

सउनि./रेसुब/अभियोजन

मुख्यालय/गोरखपुर

संपर्क:7983938797

भारतीय रेल में सिमुलेटर प्रशिक्षण का महत्व



डॉ. महेश कुमार

सिमुलेटर- भारतीय रेल में प्रयुक्त सिमुलेटर एक काल्पनिक रेलगाड़ी है जो लोको पायलट को ओपेन लाइन में गाड़ी चलाने का वास्तविक अनुभव कराती है। सिमुलेटर से ज्ञान प्राप्त करना सरल, सुरक्षित एवं सुविधाजनक है।

सिमुलेटर का अर्थ- किसी वास्तविक चीज, प्रक्रम (प्रॉसेस) या कार्यकलाप का किसी अन्य विधि से अनुकरण करना सिमुलेटर का कार्य है।

सिमुलेटर का महत्व- भारतीय रेल का उद्देश्य एक यातायात संगठन के रूप में यात्रियों एवं माल को गंतव्य तक सुरक्षित समय पर और न्यूनतम खर्च पर पहुँचाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लोको पायलट को सिमुलेटर के द्वारा सर्वोत्तम ड्राइविंग तकनीक अपनाने के लिए सर्वोत्तम गुणों का प्रशिक्षण दिया जाता है अर्थात् सिमुलेटर यह बताता है कि किस स्थिति में क्या होगा पारंपरिक प्रशिक्षण (ट्रेडीशनल ट्रेनिंग) में प्रशिक्षार्थियों में ज्ञान अर्जित करने के लिए रुचि नहीं होती जबकि सिमुलेटर में अनुदेशक एवं प्रशिक्षणार्थियों के बीच गहन संपर्क स्थापित रहता है एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण मिलता है जिससे कम समय में वह लोको पायलट के रूप में कार्य करने में सक्षम हो पाता है क्योंकि परिस्थिति को समझना एवं हल करना इसके द्वारा आसान हो जाता है।

सिमुलेटर का इतिहास- प्रथम बार द्वितीय विश्व युद्ध में प्रयुक्त लकड़ी या यांत्रिक घोड़ा (सिमुलेटर) का प्रयोग किया गया था।

सिमुलेटर प्रशिक्षण की आवश्यकता- ट्रेन संचालन हेतु संबंधित तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ यातायात के नियम की जानकारी की भी आवश्यकता होती है परन्तु लोको पायलट के ड्यूटी (जो सुरक्षा से संबंधित है) को व्यावहारिक रूप से ओपेन लाइन पर इसका प्रशिक्षण देने में कठिनाई आती है सिमुलेटर के द्वारा प्रशिक्षण ले रहे लोको पायलट को व्यावहारिक जैसा ही जानकारी दी जाती है जिससे सिमुलेटर

प्रशिक्षण के अभिन्न अंग बन जाते हैं क्योंकि इसके द्वारा-भौगोलिक स्थिति अर्थात् मार्ग ज्ञान, तकनीकी ज्ञान, संरक्षा, समय का पालन, ब्रेकिंग का तकनीकी ज्ञान, ट्रबल शूटिंग, ईंधन बचत के उपाय इत्यादि जो लोको पायलट से संबंधित है, की जानकारी मिलती है।

सिमुलेटर के उद्देश्य- 1) प्रशिक्षण की गुणवत्ता एवं सुरक्षित आपरेशन हेतु 2) सभी रेल जोनों में व्यावहारिक ज्ञान समानता के साथ देना 3) उपकरण की क्षति को रोकना 4) डिटेक्शन को कम करना एवं क्षमता को बढ़ाना 5) दुर्घटना एवं असामान्य स्थिति में तत्काल कदम क्या उठाते हैं, इसकी जानकारी प्राप्त होना 6) ईंधन की बचत करना 7) कर्व, ढलान इत्यादि में संचालन की विधि को अपनाये जाना 8) सही ड्राइविंग तकनीकी को बताना 9) दोष निवारण का ज्ञान बढ़ाना 10) ऊर्जा संरक्षण को अपनाना 11) मार्ग में कॉशन का पालन करने की विधि बताना 12) ड्राइविंग तकनीकी का सही-सही इस्तेमाल करते हुए लोको के द्वारा लोड खींचने में असमर्थता के मामलों में कमी लाना 13) लोको पायलट में मनोबल व योग्यता को बढ़ाना।

सिमुलेटर द्वारा लोको पायलट का परिचालन विश्लेषण- सिमुलेटर द्वारा लोको पायलट का रिपोर्ट तैयार होता है जिसका विश्लेषण कर लोको पायलट को निर्धारित 100 अंक में से 60 अंक न्यूनतम लाना आवश्यक होता है। इसमें उत्तीर्ण होने के उपरांत ही वह पुनश्चर्या प्रमोशन इत्यादि पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण माने जाते हैं। अनुत्तीर्ण की स्थिति में उन्हें पुनः सिमुलेटर का प्रशिक्षण दिया जाता है किन-किन बिन्दुओं पर उनसे गलतियाँ हुई हैं, उसे सुधारा जाता है।

सिमुलेटर पर लोको पायलट द्वारा ट्रेन संचालन उपरांत रिपोर्ट में निम्न बिन्दुओं पर अंक दिये जाते हैं-ड्राइविंग रूल, ब्रेक मैनेजमेंट, ट्रेन मैनेजमेंट, ब्रेक वियर, कपलर डैमेज, ऊर्जा संरक्षण, यात्रा समय, ब्रेक प्रयोग करने की संख्या इत्यादि।

सिमुलेटर द्वारा ट्रेन संचालन तकनीकी का प्रशिक्षण-

- क) ट्रेन संचालन को प्रभावित करने वाले कारक-ट्रैक्टिव एफर्ट, ट्रैक्टिव एफर्ट के टेन्साइल स्ट्रेन्थ को पार करने के कारण, ड्रा बार पुल, ट्रेन स्लैक
- ख) ब्रेकिंग मैथड (न्यूमैरिक एवं डायनेमिक ब्रेकिंग)
- ग) सिमुलेटर द्वारा निम्न स्थितियों में ट्रेन संचालन की विधि की जानकारी होती है-समतल खण्ड पर ट्रेन संचालन, कर्व पर ट्रेन संचालन, हल्के आरोही खण्ड पर ट्रेन संचालन, हल्के अवरोही खण्ड पर ट्रेन संचालन, खड़ी चढ़ाई पर भारी आरोही खण्ड पर ट्रेन संचालन, भारी अवरोही खण्ड पर ट्रेन संचालन, विशेष ग्रेड वाले खण्डों पर ट्रेन संचालन, हम्प खण्ड पर ट्रेन संचालन, सैग रेल खण्ड पर ट्रेन संचालन इत्यादि।

सिमुलेटर के लाभ- 1) ऊर्जा खपत कम करने के लिए 2) ब्रेक टूट-फूट कम करने के लिए 3) लोको पायलटों के चहुंमुखी निष्पादन एवं विश्वास में सुधार 4) सही चालन तकनीकों को अपनाकर कपलर क्षति कम करना 5) उचित ब्रेक तकनीकी के ज्ञान का उपयोग करके गाड़ी रुकने के मामले (local stalling) कम करना 6) गाड़ी के कपलर पर आने वाली शक्तियां कम करना, जिसमें गाड़ी विभाजन कम हो सके एवं गाड़ी का डिरेलमेंट कम हो सके 7) संरक्षा, समय पालन, यात्रियों को आराम बढ़ाना और गुड्स स्टॉक में क्षति कम करना 8) विश्वसनीयता में सुधार के लिए 9) लोको पायलट में उनकी योग्यता द्वारा विश्वास में वृद्धि करना

10) लाइन पर प्रशिक्षण समय कम करने के लिए

11) प्रशिक्षण में सामंजस्य सुनिश्चित करने हेतु।

विशेषताएं- गाड़ी संचालन सीखने के लिए प्रशिक्षु को बिना किसी नुकसान, उपकरण को होने वाले नुकसान, लाइन क्षमता को इस्तेमाल किए बिना, लोकोमोटिव की उपलब्धता में कमी लाकर गाड़ी परिचालन सिखाया जाता है। लोको पायलट को उनकी आवश्यकतानुसार उनको विशेष क्षेत्र में ट्रेनिंग देकर कार्य कुशलता प्राप्त की जाती है। लोको पायलट द्वारा किया गया प्रदर्शन का नतीजा कंप्यूटर द्वारा बताया जाता है। लोको पायलट बिना किसी नुकसान के डीजल/विद्युत लोको की कार्यप्रणाली पर बार-बार अभ्यास कर सकता है।

सारांश- ट्रेन संचालन में जो पद्धति अपनाते हैं वह कई कारणों पर आधारित होती है जैसे कि ट्रेन आपरेशन में लाया जाने वाला लोको का प्रकार, लोड प्रकार तथा उसकी लंबाई एवं गाड़ी में बनने वाली स्लैक की मात्रा, वातावरण (वेदर), भौगोलिक स्थिति और पटरी (रेल) की स्थिति इत्यादि। यह सभी कारण बदलते रहते हैं, इसलिए लोको पायलटों को एक अच्छी परख तथा अपने कार्य में कुशलता हो ताकि वह दुर्घटना रहित और स्मूथ गाड़ी का संचालन कर सके इसके लिए सिमुलेटर युक्त प्रशिक्षण का होना महत्वपूर्ण हो जाता है।

अनुदेशक (यांत्रिक)

बहुविषयक पद्धति प्रशिक्षण केन्द्र, गोरखपुर

संपर्क: 9771443367

विश्व मनाएगा कल होली!

घूमेगा जग राह-राह में
आलिंगन की मधुर चाह में,
स्नेह सरसता से घट भरकर,
ले अनुराग राग की झोली!
विश्व मनाएगा कल होली!

- हरिवंश राय बच्चन

सरल, सुबोध 'गोरख के गुन गाई'



डॉ. के.के. चन्द्र विश्वप्रेमी

'गोरख के गुन गाई' श्री ओमप्रकाश पाण्डेय 'आचार्य जी' का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। 'हठ योग' एक कठिन योग है और गोरखपुर में इसका केन्द्र होने के बाद भी इस योग के इतिहास के बारे में स्थानीय जनता का ज्ञान अल्प ही है। यद्यपि श्री गोरक्षनाथ मंदिर हमारे नगर का एक अत्यन्त प्रतिष्ठित एवं स्वनाम धन्य पीठ है तथा सभी में पूज्य है फिर भी इस पीठ से जुड़े संत समाज पर सर्व सुलभ पुस्तक की आवश्यकता थी, जिसे 'आचार्य जी' ने पूरा करने का प्रयास किया है। अभी तक का साहित्य 'गोरख वानी' में ही प्राप्त हुआ करता है, परन्तु बहुत आसान एवं लयबद्ध तरीके से इसे पुनः जनता के समक्ष प्रस्तुत करने का यह प्रयास सराहनीय है।

भोजपुरी भाषा में नवनाथ जी की उत्पत्ति, विकास, तिरियाराज का चित्रण जहाँ एकदम स्पष्ट है वहीं उस समय की मानसिकता 'सामाजिक बंधन' लोक-लाज एवं पुत्रहीन स्त्री की मनःस्थिति का बहुत ही सटीक वर्णन किया गया है। बिना बच्चे वाली स्त्री का दुःख-

'आंचर फूल फुलाइल न अंगना दउरल लइका किलकारी
जीवन राहि अथाह लगे इहे देखि दुखी दुषहू परनारी'

एक पुत्र हीन स्त्री की मानसिकता का स्पष्ट दर्शन है। प्रत्येक स्त्री के मन में सदैव यह लालसा रहती है कि कोई उसे माँ कहे। उस स्थिति को प्राप्त करने हेतु वह सभी तरह की पीड़ा हँसते-हँसते सहन कर लेती है और उसकी यही पीड़ा दर्शाती है आचार्य जी द्वारा लिखित यह पंक्ति-

'बस दुःख इहे नाई गोद भरल केहु आज ले नाहीं पुकारल माँई'

इस दुःख से उबरने हेतु वह भाँति-भाँति की पूजा करती है और मंदिर एवं देवता से मिन्नतें करती है ऐसी स्थिति में जब एक योगी उन्हें कुछ प्रसाद प्रदान करता है तो अगले ही पल सामाजिक बंधन, रीति-रिवाज, महिलाओं के सुझाव और ताने उसे कितना संतप्त कर देती है कि वह स्वयं किंकर्तव्यविमूढ़ होकर पुनः निर्णय की स्थिति में आकर खड़ी हो जाती है जिसका चित्रण करते हुए उस समय की सामाजिक स्थिति और सभी महिलाओं के सुझाव इन पंक्तियों में प्रभाव दीखता है-

'जोगी जती अरू साधु मुनी अइले केतना गुल गइले खिलाई
कोमल चित्र अउर लाज के मूरति इनके चरित्र में गइलें समाई'

कोखि तऽ खाली के खाली रहल बखरा पउली-जग कऽ हंसाई।
जानत बाडू कुल्ही बतिया तबहू जोगिया लेहलस भरमाई।'

इन पंक्तियों में स्त्री मन की कोमलता, भय लोक-लाज का सटीक वर्णन किया गया है। स्त्री चाहे किसी भी युग की क्यों न हो स्त्री-चरित्र का भय उसे सदैव व्याप्त रहता है और उसकी रक्षा हेतु वह बड़े से बड़ा त्याग करने को तैयार रहती है और वही वहाँ भी हुआ।

इस पुस्तक में आचार्य जी ने एक ही स्थान पर गुरु गोरखनाथ, मच्छेन्द्र नाथ, गहनी नाथ, कनीफा नाथ, भतुहरि चवरंगी नाथ, अडबंग नाथ, धरम नाथ, दुरंगत नाथ सभी का वर्णन कर पाठक को एक सुविधा प्रदान की है। उक्त काल में गुरु भक्ति कितनी परम शक्तिदायी थी कि शिष्य अपने गुरु को 'बरा' जैसी वस्तु प्रदान करने के लिये उसे बनाने वाली स्त्री को अपने दोनों नेत्र अर्पित कर देता है और प्रसन्न मन से 'बरा' लाकर गुरु जी को समर्पित करता है। यह गुरु कृपा ही थी जिसके कारण उक्त शिष्य के दोनों नेत्र पुनः उसे प्राप्त हो जाते हैं। यह घटना जहाँ शिष्य का गुरु के प्रति समर्पण भाव को प्रदर्शित करती है वहीं गुरु की अनुकंपा को भी दर्शाती है।

गुरु गोरखनाथ एवं कनीफानाथ के बीच का संवाद भी अत्यंत विस्मयकारी ढंग से वर्णित है-

'गोरख बोले कनीफा सुन गुरू विद्या कऽ खेला तुम्हें देखलाई।
मंत्र प्रभाव से डाल से टूटल आम फिरू डरिया सटि जाई'

और कनीफा नाथ आश्चर्यचकित हो गये।

'आज्ञा के विपरित तमासा देखि कनीफा हिया सरमइले,
सोचे लगे मने मन आखिर डारि में आमई कइसे सटइले।।

इस पुस्तक के द्वारा योगी के मुख से जनता को यह संदेश भी प्रदान करने का प्रयास किया गया है कि उसे 'प्रभु' की गोद में शरण लेनी चाहिए।

'जीवन में संनमार्ग चलऽ कल्याण प्रभू करि हैं तोर राजा'

हमें विश्वास है कि यह प्रस्तुति जनता के बीच में नाथ संप्रदाय के संत गण की महिमा बताने में अवश्य सफल होगी।

भूतपूर्व प्राचार्य,

डी.ए.बी. डिग्री कालेज, गोरखपुर

710, गोकुल अपार्टमेंट्स, हुमायूँपुर (उत्तरी) गोरखपुर

प्रतिष्ठापरक खेल प्रतियोगिताओं में भारतीय पहलवान



रामाश्रय यादव

टोक्यो में होने वाले ओलंपिक खेलों में भारत की दावेदारी और भी मजबूत हो गयी है। ज्ञातव्य है कि जापान, ईरान, उत्तरी एवं दक्षिणी कोरिया, चीन, इराक, किर्गिस्तान, तुर्की, उज्बेकिस्तान, मंगोलिया, कजाकिस्तान तो ओलंपिक पद्धति की कुश्ती में ज्यादा से ज्यादा सफलता पाने के लिये अपने पहलवानों के रख-रखाव, खुराक, दमखम, व्यायाम, फुर्तीली कुश्ती के अभ्यास और स्वास्थ्य विषयक गुण-दोष, लाभ हानि के लिए पूर्णरूप से वैज्ञानिक तरीकों का इस्तेमाल करते हैं और इससे उनको बेहतर परिणाम भी मिले हैं। हमारे महाद्वीप के अन्य छोटे-छोटे राष्ट्र जैसे अफगानिस्तान, थाईलैंड, पाकिस्तान, बंगलादेश तक अपने-अपने पहलवानों को अच्छे से अच्छा प्रशिक्षण देने में दिलचस्पी ले रहे हैं।

मालूम हो कि एशियाई खेलों में आयोजित होने वाली कुश्ती ओलंपिक खेलों के अनुरूप कुल आठ भार वर्गों में लड़ी जाती है। सभी छोटे-बड़े भार वर्गों के लिए मात्र पांच मिनट का समय निर्धारित रहता है जिसमें अंकों के आधार पर प्रत्येक पहलवान को 'जीत अथवा हार' का परिणाम मिलना तय होता है। बताया जाता है कि सन् 1948 के 'लंदन ओलंपिक' में कुश्ती के लिए पन्द्रह मिनट का समय दिया गया था, किंतु कुश्ती में और तेजी लाने के लिए समय घटाया जाता रहा जो वर्तमान में छः मिनट हो गया है।

ऊँचे भार वर्ग में ईरान, जापान, मंगोलिया और छोटे वजन के दक्षिणी एवं उत्तर कोरिया के अलावा चीन, जापान और ईरान के पहलवानों का दबदबा नजर आता है। तकनीकी नजरिये से भी इन देशों के अलावा रूस के पहलवान अच्छे ठहरते हैं।

जहाँ तक भारत का संबंध है, वह सन् 1954 के 'मनीला एशियन गेम्स' से ही कुश्ती में भाग लेता आ रहा है। समय-समय पर भारतीय पहलवानों ने सफलता भी प्राप्त की है, किंतु हमारे ज्यादातर पहलवान अखाड़ों पर अभ्यास करने के आदि रहे हैं जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए मात्र एक-दो महीने के लिए गद्दे की ट्रेनिंग दी

जाती है जिससे वे अपने लक्ष्य में अपेक्षाकृत सफल नहीं हो पाते। कई ऐसे भी होते हैं जिन्हें अपने अंकों को गिन पाना नहीं आता, वैसे यह काम मुख्य रूप से उनका नहीं है, फिर भी संघर्ष के लिए हौसला तो देता ही है। भारत ने वर्ष 1900 में पहली बार ओलंपिक खेलों में भाग लिया था।

प्रथम एशियाई खेल जो 1951 में दिल्ली में संपन्न हुए थे, उनमें कुश्ती नहीं शामिल थी, किंतु उसके बाद की तमाम एशियाई खेल प्रतियोगिताओं में कुश्ती को एक मुख्य खेल के रूप में मान्यता मिल जाने के कारण एशियाई महाद्वीप के देशों में कुश्ती के प्रचार-प्रसार में काफी मदद मिली, भारत के पांच युवा पहलवानों ने सर्वप्रथम एशियन गेम्स मनीला के कुश्ती मुकाबले (सन् 1954) में भारत लेकर बहुत ही अच्छा प्रदर्शन किया। उसमें बी.जी. खालिद ने रजत और सोहन सिंह ने कांस्य पदक जीता, किंतु 1958 के 'टोक्यो' एशियन गेम्स में भारतीय पहलवानों को कुछ कारणों से भेजा नहीं गया। इसके बाद 1962 के जकार्ता एशियाई खेलों की कुश्ती में सात चुनिन्दा पहलवान भेजे गये जिसमें टीम में तीन स्वर्ण, छः रजत, तीन कांस्य पदक के साथ पाया। स्वर्ण पदक लाने वालों में मालवा (पंजाब) मारूती माने और गनपत अंडलेकर (महाराष्ट्र) के नाम भी चर्चित हैं।

1966 के बैंकाक एशियन गेम्स में आठ पहलवानों ने भाग लिया था। उसमें एक रजत और पांच कांस्य के साथ टीम के रूप में भारत तीसरे स्थान पर रहा। विश्वनाथ सिंह ने रजत, जीता था। सन् 1970 के 'बैंकाक एशियन गेम्स' में भारत के नौ पहलवानों ने भाग लिया जिसमें भारत की ओर से वीर मास्टर चंदगी राम ने फ्रीस्टाइल के हेवीवेट में स्वर्ण और जीत सिंह ने लाइट हेवीवेट में रजत तथा नेत्रपाल, मुख्तियार सिंह और ओमप्रकाश ने कांस्य पदक उठाया।

'हिरोशिमा एशियन गेम्स' में भारत के छः पहलवानों ने भाग लिया किंतु दुर्भाग्य से किसी को कोई पदक नहीं मिल सका। सन् 1998 में मात्र पांच पहलवान थाईलैंड भेजे गये थे किंतु उपलब्धियों की चर्चा न करना ही उचित होगा। इस तरह

जब एशियाई खेलों में भारतीय पहलवानों की ऐसी दयनीय स्थिति है जब ओलम्पिक खेलों में पहलवानों की उपलब्धि के बारे में सोचकर निराशा होने लगती है। दुर्भाग्य से ओलंपिक संघ, खेल संघ और भारतीय मीडिया भी पहलवानों और मल्ल कला के प्रति उपेक्षा की दृष्टि ही रखते हैं। यह एक सोचनीय स्थिति है।

संयोगवश 1952 के 'हेलिंस्की ओलंपिक' खेलों में भारतीय पहलवान के.डी. जाधव (महाराष्ट्र) के कांस्यपदक को अर्जित करने की समानता हरियाणा के एक ग्रामीण के बेटे सुशील कुमार ने 2008 में कांस्य लाकर लगभग 56 वर्ष बाद कुश्ती को पुनः चर्चा का विषय बना दिया। जाधव को तो 1952 में उनके अध्यापक एवं वहाँ की जनता ने हेलिंस्की भेजवाया था। आज के पहलवानों को जो सुविधाएं मिलती हैं वह तो आज से बीस तीस वर्ष पूर्व तक नहीं मिल पाती थी। कहना न होगा कि यदि हमारे पहलवानों में राष्ट्रीयता की भावना घर कर जाये तो दुनिया का कोई पहलवान उन्हें हरा नहीं सकता। रमेश कुमार का कांस्य भी स्वर्णिम अहमियत रखता है।

अंतरराष्ट्रीय पदक जीतने वाले पहलवान भी ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों के अखाड़े से ही उपजे हैं, वह मारुति माने हों, के.डी. जाधव, गणपत आंदलकर रया चंदगीराम सतपाल, सुभाष वर्मा, करतार सिंह, रामाश्रय यादव, पन्नेलाल (स्व.) तालुकदार, जनार्दन सिंह, चन्द्रविजय सिंह, राजेन्द्र सिंह अथवा 2008 का ओलंपिक कांस्य विजेता सुशील कुमार एवं रमेश कुमार (विश्व कुश्ती में कांस्य)।

एक प्रश्न और विचारणीय है-भारत में कुश्ती के प्रशिक्षकों की एक फौज सी ही तैयार होती जा रही है। कोई इनसे जरा राष्ट्रीय पदक विजेता तक है ही नहीं। ऐसे स्वनामधन्य कोच क्या ओलंपिक पदक दिलायेंगे ज्यादातर तो अपने घरों के पास तबादला कराने की तिकड़म में ही लगे रहते हैं। पिछले दिनों पचास हजार रुपये प्रतिमाह के मानदेय पर रूस से कोच बुलाये गये। इन्हें भी पक्की उम्र के पहलवान सौंप दिये गये। नतीजतन पक्की उम्र के पहलवान ओलंपिक विजेता तो बने नहीं रूसी कोच अलबत्ता नौकरशाहों की बढौलत लाखों रुपये ले गये।

होना तो यह चाहिये था कि रूसी कोच को दस-बारह

साल की उम्र के होनहार बाल पहलवान सौंपे जाते। रूसी कोच ओलंपिक कुश्ती के अच्छे जानकार होते हैं, इसमें दो राय नहीं कि होनकार पहलवानों को वह ओलंपिक खेलों की कुश्ती के लिये तराशने में जरूर सफल होते ओलंपिक खेलों के लिये पहलवानों के जो शिविर लगाये जाते हैं, उसमें ज्यादातर सिखी कुश्ती कला के जानकार होते हैं। ये अखाड़े के पहलवानों को मैट पर सिखाते हैं जिसका नतीजा प्रायः सिफर होता है।

यह भी दुर्भाग्य ही है कि ओलंपिक खेलों में पहलवानों के साथ कोच जाते हैं जबकि भेजना चाहिए अखाड़ों के उस्तादों को जो ओलंपिक कुश्ती की 'सीडी' बनाकर अपने पहलवानों की तरह की कमजोरी को दूर कर सकें।

दंगलों से छनकर निकलने वाले होनहार बालकों को बिना पक्षपात के ओलंपिक के लिए चुनना चाहिए। ओलंपिक के चार वर्ष पहले ही से उन्हें 'मैट' पर प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। कुश्ती के लिए जाड़े के दिन ज्यादा मुफीद होते हैं। उस्तादों को भी कम से कम दस हजार रुपये प्रतिमाह दिया जाना चाहिये। तभी फिर से भारत में गामा, खड़ग सिंह, भवानी सिंह, मन्ना रेहड़ीवाला, पुरन, बूटा, रमजू, गूंगा, गुलाम, अलिया, कीकर सिंह जैसे पहलवान तैयार हो सकेंगे।

इसी बीच, ओलंपिक पदक विजेता पहलवान सुशील कुमार ने 'जर्मन ग्रांप्री फ्रीस्टाइल एवं ग्रीको रोमन' कुश्ती का स्वर्ण 66 कि.ग्रा. में जीतकर देश का नाम रौशन किया है तो दूसरा स्वर्ण वहीं पर राहुल अवारे ने 55 कि.ग्रा. में जीता। दोनों को बधाई है। राजीव तोमर ने 120 कि.ग्रा. में रजत से संतोष किया जबकि रविंदर सिंह और रमेश को कांस्य। हमारी अपेक्षा है कि पहलवानी का स्वर्ण युग पुनः आये तथा भारत के पहलवान ओलंपिक के पदक जीतकर भारत की माटी को गौरवान्वित करें। ज्ञातव्य है कि भारत विगत 120 वर्षों से ओलंपिक खेलों में भाग लेता आ रहा है।

अध्यक्ष, भारतीय कुश्ती महासंघ
55/बी, कौवाबाग रेलवे कालोनी,
गोरखपुर (उ.प्र.)

संपर्क: 9532520569

गोपनीय फाइलों पर लगाइए पासवर्ड का ताला



नागेश्वर नाथ श्रीवास्तव

माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस के सॉफ्टवेयर वर्ड, एक्सेल, पावर प्वाइंट आदि की फाइलों में तमाम तरह की सूचनाएं सहेजते हैं। हो सकता है इनमें से कुछ फाइलों में ऐसी जानकारी मौजूद हो जो गलत व्यक्ति के हाथ लगने पर दुरुपयोग का शिकार हो सकती है। मिसाल के तौर पर बहुत से लोग अपना बैंक खाता विवरण, क्रेडिट कार्ड, वेबसाइट सामग्री, स्मार्टफोन से संबंधित सामग्री, कंप्यूटर आदि से जुड़ी सूचनाएं किसी फाइल में सहेजकर रखते हैं। हालांकि ऐसा करना नहीं चाहिए, लेकिन जिनके पास बीस-बीस पासवर्ड हो गए हैं। उनसे पूछिए कि वे किस-किस पासवर्ड को याद रखें। पासवर्ड मैनेज करने के लिए कुछ सॉफ्टवेयर भी आते हैं लेकिन गोपनीय सूचनाएं सिर्फ पासवर्ड तक तो सीमित नहीं होती। कंपनी की आय का ब्यौरा, इनकम टैक्स का डाटा, कर्ज संबंधी जानकारी, आमदनी के स्रोत, गोपनीय डायरी और न जाने क्या-क्या चीजें ऐसी हैं जिन्हें आप दूसरों की नजरों से छिपाना चाहते हैं। मगर ये किसी न किसी दस्तावेज के रूप में कहीं न कहीं सहेज ली जाती है। ऐसे में अपनी संवेदनशील या गोपनीय फाइलों पर पासवर्ड का ताला लगाने की आदत बनाएं। आपको शायद लगे कि यह बड़ा जटिल काम है, लेकिन हकीकत में इसमें 30 सेकंड भी नहीं लगते और आपकी सामग्री हमेशा के लिए सुरक्षित हो जाती है। लेकिन पासवर्ड को कहीं सुरक्षित नोट भी कर लें ताकि भविष्य में आपके पासवर्ड भूलने की स्थिति में आपके काम आ सके।

1. माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, एक्सेल, पावर प्वाइंट की फाइल को सेव करने के लिए मेन्यू पर क्लिक कीजिए।
2. आप को दांयी तरफ इंफो सेक्शन में तीन विकल्प दिखेंगे जिनमें से पहला विकल्प है प्रोटेक्टिव डाक्यूमेंट्स। इस

पर क्लिक कीजिए एक बॉक्स खुलेगा जिसमें 4 विकल्प दिखेंगे मार्क एज फाइनल एनक्रिप्ट विथ पासवर्ड रीस्ट्रिक्ट एडिटिंग और ऐड ए सिग्नेचर।

3. इनमें से दूसरे विकल्प यानी विथ पासवर्ड पर क्लिक कीजिए। अब एक बॉक्स खुलेगा, जिसमें आपसे पासवर्ड बताने को कहा जाएगा। एक बार पासवर्ड डाल कर ओके करने पर वही पासवर्ड दुबारा डालने को कहा जाएगा।

4. ऐसा ही कीजिए और ओके बटन दबा दीजिए, आपकी फाइल पासवर्ड से सुरक्षित हो चुकी है। यह तरीका ऑफिस के लिए नए संस्करणों के लिए है। अगर आपके पास पुराना ऑफिस संस्करण है तो फाइल को सेव करने के लिए सेव एज पर क्लिक करें।

5. विंडो 7 के लिए कोई भी फाइल में पासवर्ड लगाने के लिए सबसे पहले सेव एज में जाएंगे अब खुलने वाले डायलॉग बाक्स में नीचे टूल्स नामक विकल्प पर क्लिक कीजिए। फिर उसमें जनरल विकल्प पर क्लिक करेंगे, फिर उसमें दो प्रकार के पासवर्ड डाल पाएंगे। 1) जिसमें फाइल ओपेन तो हो जाएंगे लेकिन उसमें संशोधन बिना पासवर्ड डाले नहीं हो जाएगा और 2) जिसमें फाइल ओपेन भी नहीं होगा बिना पासवर्ड डाले। अब जब भी उसे खोला जाएगा पहले पासवर्ड मांगा जाएगा। संबंधित बाक्स में पासवर्ड डालने पर ही फाइल खुलेगी।

कनिष्ठ अनुवादक

राजभाषा विभाग/मुख्यालय

पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

संपर्क: 9936342972

ईमेल: nageshwarsrivastava909@gmail.com

अपने अज्ञान की सीमा जानना ही सच्चा ज्ञान है।

फिशिंग (Fishing) बनाम फिशिंग (Phishing)



श्याम बाबू शर्मा

फि शिंग (Fishing) और फिशिंग (Phishing) दोनों का उच्चारण एकसमान है, तो क्या इसका अर्थ भी एकसमान है? जी हां! दोनों का अर्थ भी एक समान निकलता है, फंसाना। फिशिंग (Fishing) का मतलब है मछलियों को चारा डाल कर फंसाना और दूसरे फिशिंग (Phishing) का मतलब है आज के आधुनिक, हाईटेक लोगों को चारा डालकर फंसाना।

फिशिंग (Fishing) के बारे में तो आप जानते ही होंगे कि कैसे मछली पकड़ने के लिए कांटेबाज (Angler) नदी के किनारे बैठकर घंटों पानी में कांटे में चारा लगाकर इंतजार करता रहता है। कई प्रयास के बाद कोई न कोई मछली फंसती ही है। इसका क्या कारण है कि इतना प्रयास करने के बाद कुछ-एक मछली ही फंसती है, सभी क्यों नहीं। कारण स्पष्ट है कि अधिकांश मछलियां इस चारे रूपी जानलेवा लालच को समझती हैं और शायद इसीलिए इस चारे से दूर ही रहती हैं। परन्तु कोई एक ऐसी मछली भी होती है जो औरों को देखकर भी, जानते-बूझते इस चारे की लालच में आकर कांटे में फंस जाती है और अपनी जान से हाथ धो बैठती है। बिल्कुल इसी तरह ही आदमियों को फंसाने के लिए जालसाजों द्वारा भी फिशिंग (Phishing) की जाती है। इसमें जालसाजों द्वारा फोन कॉल करके या इंटरनेट पर नकली वेबसाइट के माध्यम से या ईमेल अथवा एसएमएस भेजकर लोगों को धोखे से फंसाया जाता है। लोग, लालच में आकर या अज्ञानतावश फंस जाते हैं और अपनी जमापूंजी लुटा बैठते हैं।

आइए! जानते हैं कि ये फिशिंग (Phishing) होती कैसे है और जालसाज हमें फंसाते कैसे हैं?

फोन के जरिए कैसे फ्राड होता है?

जालसाज आपको किसी लड़की या लड़के की आवाज में फोन करते हैं। रेलवे के ही हमारे एक मित्र के साथ एक बार ऐसा ही हुआ। भारतीय स्टेट बैंक में उनका सेलरी अकाउंट था और उनको डेबिट कार्ड भी मिला हुआ था। एक दिन उनके पास एक फोन आता है। उधर से सुमधुर आवाज में

एक महिला बोल रही थी। महिला- मैं भारतीय स्टेट बैंक से फलाना बोल रही हूं। आप वीरेन्द्र जी बोल रहे हैं, मित्र-जी हां।

महिला- सर, आप लकी ग्राहक हैं। इस वित्त वर्ष में हमारी बैंक ने 1200 करोड़ की शुद्ध आय की है। इसलिए हमारी बैंक अपने 20 सम्मानित सेलरी अकाउंट धारकों को उपहारस्वरूप उनके जमा रकम का 10 प्रतिशत बोनस उनके खाते में डाल रही है। इसके लिए आपको अपना नाम अभी रजिस्टर कराना होगा।

मित्र बहुत खुश हुआ, चलो, बैठे-बिठाए कुछ रकम खाते में फ्री में आ रही है।

मित्र- ठीक है, मेरा नाम रजिस्टर कर लीजिए।

महिला- जी सर, इस उपहार को पाने के लिए सिक्यूरिटी कारणों से आपको अपनी कुछ निजी पहचान शेयर करनी होगी। ताकि कोई फ्राड न हो सके।

मित्र पूरी तरह से सम्मोहित हो चुका था। यह उस महिला की आवाज का जादू था या उपहार मिलने की खुशी।

मित्र- पूछिए, जो पूछना है।

महिला- जी, आप अपने घर का पता बताइए।

मित्र ने बता दिया।

महिला- आपको किस प्रकार कार्ड मिला है और उसका अंतिम चार अंक क्या है।

पहले तो मित्र कुछ सकपकाया, पर सोचा अंतिम चार अंक की ही तो बात है। इससे क्या हो जाएगा। बता देते हैं। उसने बता दिया।

इस तरह धीरे-धीरे घुमा-फिराकर उस महिला ने हमारे मित्र महोदय से बड़े प्यार से कार्ड की वैधता तिथि, कार्ड का नंबर, सीवीवी पूछ लिया। मित्र महोदय भी सम्मोहित से सारा विवरण देते रहे। अंत में महिला ने कहा कि सर, आपका उपहारस्वरूप रकम आपके खाते में ट्रांसफर हो रही है। अभी आपके मोबाइल में एक कोड आएगा। बस उसे शेयर कर

दीजिएगा।

मित्र ने कहा- ठीक है।

तभी उनके मोबाइल पर एसएमएस का टोन बजा और एक मैसेज चमका। मित्र महोदय ने बिना पूरा मैसेज पढ़े, उसमें अंकित कोड (OTP) उस महिला को बता दिया।

जैसे ही हमारे मित्र महोदय ने OTP बताया। थोड़ी देर में 25000/- रुपये का मैसेज का टोन बजा। मित्र खुश हुआ बैठे-बिठाए 25000/- रुपये मिल गए। खुश होकर मित्र ने मुझे बताया। जब मैंने मैसेज देखा तो उसे बताया कि तुम्हारे खाते से 25000/- रुपये की खरीददारी की गई है। तुम्हारे साथ फ्राड हुआ है।

मित्र दुःखी। अब पछताए होत का, जब चिड़िया चुग गई खेत...

कई लोगों को भी इसी प्रकार के फोन कॉल, ईमेल या संदेश मिलते होंगे, जो किसी नामी-गिरामी कम्पनी, उनके बैंक, उनके क्रेडिट कार्ड कम्पनी, ऑनलाइन शॉपिंग की तरह मिलते-जुलते होते हैं। अगर आप सतर्क नहीं हैं तो आप इनके झांसे में आ जाते हैं और अपना नाम, ईमेल यूजर आईडी, पासवर्ड, मोबाइल नम्बर, पता, बैंक खाता नम्बर, एटीएम कार्ड, डेबिट कार्ड तथा क्रेडिट कार्ड नम्बर आदि शेयर करके नुकसान उठा सकते हैं। ऐसे साइबर खतरों से निजात पाने के लिए साइबर आयकर विभाग जैसे सरकारी संस्थानों और बैंक, यूजर के वित्तीय विवरणों की सुरक्षा के लिए ईमेल भेजते हैं जिसमें साइबर अटैक से कैसे बचा जाए इसकी जानकारी होती है।

भारत में इंटरनेट की पहुँच आज लगभग हर शहर और गाँव में हो रही है। इसी के चलते ज्यादा से ज्यादा लोग इंटरनेट के साथ जुड़ रहे हैं। स्मार्टफोन की मदद से यूजर्स इंटरनेट का आसानी से इस्तेमाल कर पा रहे हैं। हालांकि, अगर यूजर सतर्क नहीं रहें तो वो फिशिंग, हैकिंग और ऑनलाइन धोखाधड़ी का शिकार हो सकते हैं। इससे कई लोगों को अपने पैसे भी गंवाने पड़ सकते हैं। भारत में जालसाज दो तरीकों से फ्राड करते हैं। पहला- ई-मेल के जरिए और दूसरा- एसएमएस के जरिए।

ई-मेल के जरिए कैसे फ्राड होता है?

इसमें जालसाज सरकारी और बैंक जैसी फेक वेबसाइट

बनाते हैं। इसके बाद यूजर्स को ई-मेल करते हैं जिसमें कहा जाता है कि अगर यूजर ने अपना कार्ड रिन्यू नहीं किया तो उसे बंद कर दिया जाएगा। ऐसे में मेल में एक लिंक दिया गया होता है जिस पर क्लिक करते ही यूजर एक फेक वेबसाइट पर पहुँच जाता है। इसके बाद यूजर को वॉर्निंग पॉप-अप मैसेज में दिए गए एंटी-वायरस फर्मवेयर को डाउनलोड करने के लिए कहा जाता है जो कि असल में एक मालवेयर होता है। जैसे ही यूजर उस मालवेयर को डाउनलोड करता है वैसे ही उसके कंप्यूटर का एक्सेस हैकर को मिल जाता है और वो आपके कंप्यूटर को रिमोटली स्कैन करने लगते हैं। इससे हैकर्स यूजर का फाइनेंशियल डाटा जैसे बैंक अकाउंट, डेबिट/क्रेडिट कार्ड और निजी फोटोज को हैक कर लेते हैं। इन्हें ऑनलाइन बेचा जाता है। इस तरह की किसी भी मेल के लिंक पर न जाएं, वरना आप मुसीबत में पड़ सकते हैं।

एसएमएस के जरिए कैसे फ्राड होता है?

इसमें यूजर के फोन पर एसएमएस भेजा जाता है जिसमें डेबिट कार्ड ब्लॉक किए जाने के बारे में जानकारी दी जाती है। ये संदेश अंग्रेजी में भेजा जाता है जिससे वो बिल्कुल बैंक के मैसेज की तरह ही लगे। कुछ लोग आयकर अधिकारी के तौर पर भी यूजर से बैंक अकाउंट की जानकारी देने के लिए कहते हैं जिससे वो आईटी रिटर्न को वापस कर सकें। इन दोनों में ही यूजर को OTP देने के लिए कहा जाता है। जैसे ही यूजर को OTP रिसीव होता है तो जालसाज उन्हें फोन कर OTP ले लेता है। इससे पहले यूजर को कुछ पता चले OTP के जरिए उनके बैंक अकाउंट से पैसे कट जाते हैं।

इन फ्राडों से बचने का एकमात्र उपाय है कि आप सतर्क रहें, किसी भी तरह की लालच में आकर न फंसे। शिकारी जाल बिछाए बैठे हैं। एक बार आप जाल में फंसे तो जिस तरह मछली फड़फड़ा कर रह जाती है पर जाल से निकल नहीं पाती, उसी तरह आप भी फड़फड़ा कर रह जाएंगे और अपनी मेहनत से अर्जित कमाई को गवां बैठेंगे।

वरिष्ठ अनुवादक

राजभाषा विभाग/मुख्यालय

पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

संपर्क: 9794840674

<https://taknikisamadhan.blogspot-com>

आलोक नहीं मरने वाला



भूषण त्यागी

मैं जन जन में मैं घर घर में।
मैं धरती पर मैं अंबर में।
मैं माता की हर सांस में हूँ।
मैं पिता के हर उच्छ्वास में हूँ।
मैं बहनों की हर आस में हूँ।
मैं भाई के विश्वास में हूँ।
मैं प्रेम जड़ित परिभाषा हूँ।
मैं दुनिया की अभिलाषा हूँ।
मैं भ्रमरों में मैं फूलों में।
मैं काँटों में मैं शूलों में।
मैं बच्चों की किलकारी में।
मैं फूलों की फुलवारी में।
मैं सागर की हलचल में हूँ।
मैं नदियों के कल कल में हूँ।
मैं कलियों के हर रूप में हूँ।
मैं सुबह सुबह की धूप में हूँ।
तुम अधियारों के सौदागर
मैं जग ज्योतित करने वाला।
आलोक नहीं मरने वाला॥

मैं प्रेयसी के अनुराग में हूँ।
मैं ऋषियों के तप त्याग में हूँ।
मैं अवधपुरी में राम राम।
मैं वृन्दावन में श्याम श्याम।
मैं महामुनी उपकारी हूँ।

मैं चक्र सुदर्शन धारी हूँ।
मैं अंशुमान के साथ रहा।
मैं हनुमान के साथ रहा।
मैं तरु में हूँ मैं पल्लव में।
मैं पशु पक्षी के कलरव में।
मैं सत्यनिष्ठ सन्यासी हूँ।
मैं वृन्दावन हूँ काशी हूँ।
तुम रावण की प्रिय लंका हो-
मैं उसे दहन करने वाला॥
आलोक नहीं मरने वाला॥

मैं कण कण का अनुरागी हूँ।
मैं स्वप्न बहुत बड़भागी हूँ।
मैं धर्म अर्थ मैं मोक्ष काम।
मैं स्वर्ग और वैकुण्ठ धाम।
मैं सामवेद के गान में हूँ।
मैं राधा के मुस्कान में हूँ।
मैं ही उत्तर मैं ही सवाल।
मैं ही कालों का महाकाल।
मैं व्यक्त नहीं अव्यक्त नहीं।
मैं पीड़ा से संतप्त नहीं।
मुझमें लय हो जाता जहाँ।
मुझसे फिर होता नव विहान।
तुम पीड़ा के संवाहक हो-
मैं उसे शमन करने वाला॥
आलोक नहीं मरने वाला॥

हँसकर टूट गये

युग बदला, परिभाषा बदली,
मौसम रूठ गये।
बड़े बड़े आइने क्षण में,
हँसकर टूट गये॥
बस आँखों में एक चमक,
सिंहासन पाने की।
हो लगाम हाथों में, इस,
बिगड़ैल जमाने की।
यही देखकर सच वाले,
सब साथी छूट गये।
बड़े-बड़े आइने क्षण में
हँसकर टूट गये॥

किस पर हो विश्वास,
कसम सब झूठी खाते हैं।
जादूगर की तरह,
हवाई महल बनाते हैं।
अपना कह-कह करके सारे,
अपने लूट गये।
बड़े बड़े आइने क्षण में
हँसकर टूट गये॥

भूतपूर्व तकनीशियन,
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी
संपर्क: 8840667780

हमारा भारत देश

 अनामिका सिंह

सुख, शांति, समृद्धि का जो
वसुधरा नित देती संदेश
पुरातन सनातन विशेष चिरेण
वह है हमारा भारत देश।

वैभव अनंत संस्कार समवेश
बल, विद्या औ' बुद्धि निवेश
हरियाली चहुँ ओर निःशेष
वह है हमारा भारत देश।

ऋषियों की ऋचाएं अशेष
गुंजायमान अखंड अनंत उपदेश
विश्व का जो गुरु महेश
वह है हमारा भारत देश।

उत्तर भाल शोभता हिमेश
चरण पखारती सिंधु नीलेश
पश्चिम द्वारिका पूर्व रत्नेश
वह है हमारा भारत देश।

महाराणा, शिवाजी, कुंवर नरेश
आदर्श अगणित गरिमा आवेश
यहीं वीरेश धीरेश यहीं देवेश
वह है हमारा भारत देश।

गोरख नानक तुलसी लोकेश
त्यागी जन पुण्य कर्म कृतेश
गुण-गरिमा शालीनता शोभेश
वह है हमारा भारत देश।

2020 का यह दौड़ विशेष
चहुँ ओर कोरोना का क्लेश
सामना करते डटकर वीरेश
वह है हमारा भारत देश।

हम मनु के संतान सुवेश
सत्य धर्म का नित निवेश
मानवता का देते संदेश
वह है हमारा भारत देश।

दूर हो जाए सभी क्लेश
चलो करें अभी से श्रीगणेश
अहं न कोई रह जाए शेष
वह है हमारा भारत देश।

सुख शांति गरिमा अखिलेश
वंदन करता नित अरूणेश
धरा पुनः बन जाए रूपेश
वह है हमारा भारत देश।

वरिष्ठ अनुवादक
राजभाषा विभाग/मुख्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

विचारों के परिवर्तन से ही
क्रांति का शुभारंभ होता है।



कोई ऊँचा 'फकीर' होता है

गम के हाथों का तीर होता है,
 वो जो नयनों में नीर होता है।
 धन की चिंता वो बस नहीं करता,
 हाँ जो दिल का अमीर होता है।
 उनका प्रत्येक शब्द भी भाषण का,
 पत्थरों की लकीर होता है।
 उनके आने में देर है लेकिन,
 दिल अभी से अधीर होता है।
 वो जो 'असलम' समझ में न आए,
 कोई ऊँचा फकीर होता है।

रहता है अपनी खोल में

वो जो फिल्मी गीत के था बोल में,
 सुन के बच्चा आ गया था रोल में
 कहने को सस्ती थी राशन की दुकान,
 दाल-आटा कम मिला पर तोल में।
 आजकल बाजार में हर चीज है,
 आदमी भी मिल रहा है मोल में।
 बैठ कर गाते रहो अब गीत राग के,
 एक भी बत्ती नहीं है पोल में।
 अब किसी से मिलने की फुर्सत नहीं,
 हर कोई रहता है अपनी खोल में।

142, अंधियारी बाग,
 अपोजिट स्टेट बैंक कालोनी, गोरखपुर
 संपर्क: 9794178833

चाहत



टूट के चाहूँ तुम्हें, ये मेरे धड़कनों की फितरत है।
 तुम भी मुझे चाहती हो, ये मेरी किस्मत है॥
 रहो तुम सदा साथ मेरे, बस इतनी सी चाहत है।
 जो रूठ जाओ तो मना लूँ, बस इतनी सी ख्वाहिश है॥
 कभी आने मत देना, मेरी यादों के ऊपर धूल की सिलवटें।
 अकेले जीने से डरता हूँ, दूर नहीं जाना कभी भी हमसे॥
 तुम्हारी मुस्कराहटों से ही, सुबह और इन्हीं से मेरी शाम है।
 तुम सदा ही खुश रहो, बस इतना सा दिल के अरमाँ है॥
 तुम्हारी रूह की खुशबू, हमेशा मेरे जिस्म पर लिपटी हुई है।
 दूर कितने भी हो तुम, लेकिन फासले मिट से गये हैं॥
 तुम्हे यूँ ही प्यार करता रहूँ, बस यही मेरी जुस्तजू है।
 तुम भी मुझे चाहती हो, ये मेरी किस्मत है॥
 टूट के चाहूँ तुम्हें, ये मेरे धड़कनों की फितरत है।
 तुम भी मुझे चाहती हो, ये मेरी किस्मत है॥

सहायक मंडल चिकित्साधिकारी
 ल.ना.मिश्र रेलवे चिकित्सालय,
 पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
 संपर्क: 9794840527



एक

सभी गुनाह एक दिन बेनकाब होंगे
कुसूर जानने को खुद ही बेताब होंगे
चढ़ेगा इंसान खुद अपनी सूली पर
तार-तार उसके हसरत, ख्वाब होंगे
सभी बंद दिल इस फरेबी जमाने के
दुनिया के वास्ते खुली किताब होंगे
कभी जले नजर आयेंगे खार चुभते
इस उजड़े चमन में खिलते गुलाब होंगे
नये दिन का कभी नया सवेरा होगा
इस उजड़े चमन में खिलते गुलाब होंगे
खुशी के चार पल कहीं से आने दो-
इसी से इस तरफ रूआब, रोब-दाब होंगे।

मुक्तक

बेरूखी में खुशनुमा लम्हें न जाया कीजिए
भूलकर नफरत की बातें दिल मिलाया कीजिए।
रह सके ताउम्र यूँ रंगीन तेरी जिन्दगी
इस तरह एक दूसरे को रंग लगाया कीजिए।
जब चढ़ा मधुमास मन कविरा की बानी हो गई
रंग सारे ओढ़कर धरती भी धानी हो गई।
राधिका में श्याम है तो श्याम में है राधिका
गीत गाकर प्रेम के वंशी सुहानी हो गई।

दो

यादें रातभर करवट बदलती हैं
अंगुलियां आने के दिन गिनती हैं
साँस की इन आहटों से चौंककर
सांकलें धड़कन की बज उठती हैं
जहाँ कहीं रहो सलामत रहो तुम-
ये दुआ आहें हर पल करती हैं
मन के रूठने की नासमझी पर
ये हसरतें अपना सिर धुनती हैं
तेरी इन छवियों की धरोहर को-
दुखी आँखें हर पल सहेजती हैं
कहीं रूठ न जाये मुझसे मुकद्दर मेरा
इस वास्ते जिंदगी अच्छे करम करती है।
फोरमैन, 'आज' दैनिक
बैंक रोड, गोरखपुर
संपर्क: 7007376565

गजल



सत्यम्बदा शर्मा 'सत्यम्'

मन बासन्ती रूप सवारे
घर मेरे ऋतुराज पधारे
ओढ़ के धरती धानी चुनर
अपना यौवन रूप निखारे
बीत न जाये उम्मीदों में
होली का यह मौसम प्यारे
महकी धरती चहका अम्बर
चमका चन्दा चमके तारे
ऐसे में घर कब आओगे
बिरहीन प्रिय के नाम उच्चारें।

शाहपुर, गोरखपुर
संपर्क: 9451812500

एक

सजनिया आया प्यारा फागुन का त्यौहार
कहो उपहार चाहिए?
चलो दिला दूँ लाल चुनरिया या सोने की बाली
ब्रांडेड कोई पर्स दिला दूँ या बिंदी या लाली
या दिलवा दूँ चूड़ी कंगना या दिलवा दूँ हार
कि बस मेरा प्यार चाहिए?

पिया जी आया है प्यारा फागुन का त्यौहार
मुझे उपहार चाहिए।

गेहूँ की बाली से अबके इक झुमका बनवा दो
खेतों की हरियाली के जैसी चूनर दिलवा दो
मंजरियों की माला में हो गुंथा तुम्हारा प्यार
वही इस बार चाहिए।

पिया जी आया है प्यारा फागुन का त्यौहार
मुझे उपहार चाहिए।

मटर बेल की करधनिया हो औ 'सरसों का गजरा
काली कोयलिया के पंखों से दिलवा दो कजरा
पपिहे की पीहू से गूँजे अंगना और दुआर
वो घर संसार चाहिए।

पिया जी आया है प्यारा फागुन का त्यौहार
मुझे उपहार चाहिए।

दो

मन की अमराई में
मंजरियाँ आई हैं
कौन दे गया इसे बसंत, जियरा पछुआ बन डोले

फागुन सी बौराई।
सावन सी हरियाई
सपनीली अँखियाँ ये
क्यूँ आखिर पगलाई
अभिलाषाएँ हूँ पतंग, जियरा पछुआ बन डोले

गेहूँ सी लहराती
सरसों सी फूली है
अरहर की डाली पर
जुगनूँ सी झूलती है
बस में नहीं मेरे उमंग, जियरा पछुआ बन डोले

नवकी दुल्हनिया के
चूनर सी चमके है
अम्मा के माथे की
बिंदिया सी दमके है
नहीं तितली बनी विहंग, जियरा पछुआ बन डोले

राम अवध नगर

खोराबार, गोरखपुर- 273010

संपर्क: 8542898686



आपको कोई पढ़ा नहीं सकता,
कोई आपको आध्यात्मिक नहीं बना सकता।
आपको सब कुछ अंदर से सीखना है।
आत्मा से अच्छा कोई शिक्षक नहीं है।

- स्वामी विवेकानंद

अभिव्यक्ति

डॉ. चारुशीला सिंह

शब्दकोष में शब्द नहीं है
जिससे तुम्हें व्यक्त कर पाऊं
तुम्ही बताओ अपने मन के
भाव कैसे तुम तक पहुँचाऊं
कहना चाहूँ आज बहुत कुछ
जबकि मेरे पास नहीं कुछ
साधनहीन मैं पाकर खुद को
मन ही मन अकुलाऊं
तुम्ही बताओ अपने मन के
भाव कैसे तुम तक पहुँचाऊं
शब्द शिल्प से दुर्लभ व्यक्तित्व
आज मैं गढ़ ना पाऊं
नयी वर्णमाला पाने को
चहुँओर दृष्टि दौड़ाऊं
तुम्ही बताओ अपने मन के
भाव कैसे तुम तक पहुँचाऊं

कर्म तुम्हारे उर्ध्वमुखी हैं
मेरी समझ अभी बौनी है
फिर से नयी उपमा गढ़ने को
दूजा कालीदास न पाऊं
तुम्ही बताओ अपने मन के
भाव कैसे तुम तक पहुँचाऊं
नियति नटी ने करवट फेरी
कुछ न लिख सकी लघुता मेरी
चाह यही इस दुर्लभ पल में
बीते सारे दशक जी जाऊं
तुम्ही बताओ अपने मन के
भाव कैसे तुम तक पहुँचाऊं॥

अध्यापिका

ए.डी. इंटर कालेज, गोरखपुर
संपर्क: 8005120152

ओ री बया

दीक्षा शर्मा

ओ री बया, तू किधर चली?
इठलाती तू गली-गली।
जरा सोच, पहचान खुद को।
तेरी मंजिल भी है यहीं कहीं।

कभी डगर-डगर, कभी नगर-नगर।
कभी डाल-डाल, कभी झील-ताल।

खोज में उसके, तू किधर चली?
तेरी मंजिल है यहीं कहीं।

कभी टूटे मकान, कभी कूड़ेदान।
पर क्या देखा तूने, वह आसमान?

घरौंदे को बनाने, तू किधर चली?
तेरी मंजिल है यहीं कहीं।

फैला तू छोटे पंखों को।
सजा अपने मन में सपनों को।
और फिर तू देख किधर चली?

तू उड़ चली! तू उड़ चली!
ओ री बया, तू किधर चली?
तू उड़ चली ! तू उड़ चली!

शिक्षिका,
गोरखपुर

गुरु आशीर्वाद



श्री रामराव (रामदास)

जीवन भर जिस दिल को पाला प्रेम-मार्ग यह प्यारा है।
अब तक इसे संवारा हमने, आगे काम तुम्हारा है॥ टेक॥

आओ प्यारे बच्चों आओ, आज शपथ यह ले लें हम।
प्रेम-सत्य, सेवा व्रत ले, सबका उपकार करेंगे हम।

प्रेम भरा जिस दिल में हो, वह दिल ही जग से न्यारा है।
अब तक इसे संवारा हमने, आगे काम तुम्हारा है॥ टेक॥

तेरे सत्कर्मों पर ही यह, प्रेम मार्ग है रुका हुआ॥
तुझसे आस लगाई धरती, आसमान है झुका हुआ॥

दानवता को दूर करो, मानवता ही उजियारा है॥
अब तक इसे संवारा हमने आगे काम तुम्हारा है॥ टेक॥

कहना कम करना ज्यादा, सतपथ पर ही बढ़ते रहना।
बाधाएं आ जाए तो, हिम्मत से ही सहते रहना॥

तुझको मदद करे मालिक, जिसने यह जगत पसारा है।
अब तक इसे संवारा हमने, आगे काम तुम्हारा है॥ टेक॥

तुझको सत-पथ पर देख सदा, यह प्रेम मार्ग लहराएगा।
दुनिया के कोने-कोने में, प्रेम पुष्प बरसाएगा।

एक समान दास को सब, मंदिर, मस्जिद गुरु द्वारा है।
अब तक इसे संवारा हमने आगे काम तुम्हारा है॥ टेक॥

भूतपूर्व कार्यालय अधीक्षक
कार्मिक विभाग, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 9264991550

रोग प्रतिरोधक क्षमता कैसे बढ़ाएं (घरेलू नुस्खे)

रसोई की दराज खोलिए और एक नजर मसालों के डिब्बों पर डालिए। मेथीदाना, सरसों, हींग, राई, पंचफोरन सहित अदरक और लहसुन, आम दिनचर्या में प्रयोग किए जाने वाले मसाले बेहतरीन इम्यून बूस्टर मतलब रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाले होते हैं। इन सभी का प्रयोग रोज के खाने में होता है लेकिन औषधीय रूप से इनका प्रयोग भिन्न-भिन्न तरीके से किया जाए तो ये अधिक कारगर हो सकते हैं। अदरक का सेवन मौसम के साथ होने वाले वायरल संक्रमण से बचाता है, मेथीदाना कैंसर रोधी होता है तो वहीं पंचफोरन का इस्तेमाल भी रोगों से लड़ने के लिए किया जाता है। मसालों के अलावा फल व सब्जियां भी पौष्टिक विकल्प के रूप में प्राकृतिक रूप से रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने में कारगर साबित हुए हैं। नींबू, चुकंदर, संतरा, खीरा, बादाम, अखरोट के अलावा मौसमी फल अमरूद और कीवी का नियमित सेवन भी बीमारियों को नजदीक नहीं आने देता। विशेषज्ञों का एक बड़ा समूह अब इलाज के साथ ही संक्रमण और बीमारियों से बचाव की पैरवी करने लगा है, जो महंगे इलाज से कहीं अधिक बेहतर है।



नई सुबह नई आस

कोहरा अंधकार का हट जायेगा
नई किरण लेकर जब
नया सवेरा आयेगा
नई उमंग और तरंग से
ये जग फिर महक जायेगा
जब उदित होकर सूरज
अपनी किरणें बिखरायेगा।

पक्षियों की गूँज हो
या कलियों का खिलना!
भंवरोँ का गुंजन हो
या फूलों का महकना!
नई तरंग से प्रकृति का
अंग अंग खिल जायेगा
जब उदित होकर सूरज
अपनी किरणें बिखरायेगा।

शिशु के रुदन से
बच्चों के शोर से
बड़ों की डाँट से
सूना आंगन फिर चहक जायेगा
जब उदित होकर सूरज
अपनी किरणें बिखरायेगा।

कल कल करके नदियों का बहना
झर झर करके झरनों का गिरना
ठंडी हवा का झोंका
जब खेत को छू कर जायेगा!
यह हृदय देखकर किसान मुस्करायेगा।
जब उदित होकर सूरज
अपनी किरणें बिखरायेगा।

कण कण प्रकृति का खिल जायेगा
जब उदित होकर सूरज
अपनी किरणें बिखरायेगा।

नारी नारायणी

मुसीबतों के
पहाड़ को,
दुःखों के
सैलाब को,
झाड़ियों से
झंझावात को,
उखाड़ फेंकती हो
नारी तुम नारायणी हो!

ईश्वर की अद्भुत
हो रचना,
शक्ति की
भंडार हो तुम,
जीवन दायिनी
कर्तव्य-परायणी
सहज, निर्मल, कठोर हो,
नारी तुम नारायणी हो!!

टिप्पणी-राह भी बनाती है,
चलना भी सिखाती है,
नारी-नारायणी यूँ ही नहीं
कहलाती है!!!

जी-2/105,

रेल बिहार कालोनी, गोरखपुर

संपर्क: 9532599564

समस्या को समझे बिना
उसका समाधान संभव नहीं।



30.12.2019 को आयोजित क्षेत्रीय रेलवे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक को संबोधित करते तत्कालीन महाप्रबंधक श्री राजीव अग्रवाल साथ में मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री श्रीकान्त सिंह



30.12.2019 को आयोजित क्षेत्रीय रेलवे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में भाग लेते सदस्यगण



30.12.2019 को आयोजित क्षेत्रीय रेलवे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में 'गर्डरों' के क्रमवार विनिर्माण विवरण' पर जानकारी देते हुए सहायक कार्यापालक इंजी./पुल श्री रमेश सिंह



24.12.2019 को आयोजित मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक को संबोधित करते तत्कालीन उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/अराज. श्री सनत जैन



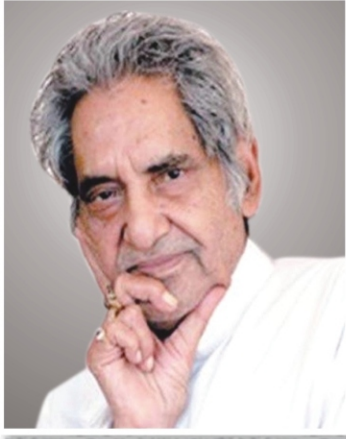
दिनांक 08.01.2020 से 10.01.2020 तक पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर में आयोजित अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव के अवसर पर प्राप्त शील्ड एवं प्रमाण पत्र के साथ तत्कालीन महाप्रबंधक श्री राजीव अग्रवाल, मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री श्रीकान्त सिंह एवं राजभाषा कर्मचारी



18.12.2019 को आयोजित निर्माण संगठन की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक को संबोधित करते मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री सुधांशु शर्मा



23.12.2019 को आयोजित सिगनल कारखाना, गोरखपुर छावनी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक



गोपालदास 'नीरज'

(4 जनवरी 1925 - 19 जुलाई 2018)

स्वप्न झरे फूल से, मीत चुभे शूल से,
लुट गए सिंगार सभी बाग के बबूल से
और हम खड़े-खड़े बहार देखते रहे।
कारवाँ गुज़र गया गुबार देखते रहे।

नींद भी खुली न थी कि हाथ धूप ढल गई
पाँव जब तलक उठे कि ज़िन्दगी फिसल गई
पात-पात झर गए कि शाख-शाख जल गई
चाह तो निकल सकी न पर उमर निकल गई

गीत अशक बन गए छंद हो दफन गए
साथ के सभी दिए धुआँ पहन-पहन गए
और हम झुके-झुके मोड़ पर रुके-रुके
उम्र के चढ़ाव का उतार देखते रहे।
कारवाँ गुज़र गया गुबार देखते रहे।



श्री श्रीकान्त सिंह, मुख्य राजभाषा अधिकारी, पूर्वोत्तर रेलवे द्वारा प्रकाशित